www.deshbandhu.co.in खबरें लगातार ...

पत्र नहीं; मित्र

RNI No. - MPHIN/2018/76121

देशबन्धु

वर्ष – 8 I अंक – 78 I नर्मदापुरम, रविवार 15 जून 2025 I पृष्ठ–8 I मूल्य – 2.00 रुपए

54 लीटर शराब और स्कूटर जब्त, न्यायालय ने आरोपी को भेजा जेल पृष्ठ 2

देशभक्ति का रास्ता पेट से होकर जाता है
इंजेक्शन पृष्ठ 4

हत्या के आरोपी को आजीवन कारावास व अर्थदण्ड से किया दण्डित पृष्ठ 6

राजस्थान के महेश कुमार टॉपर.. लड़कियों में दिल्ली की अविका सबसे आगे पृष्ठ 8

ईरान के 2 और शीर्ष सैन्य जनरल मारे गए

इजराइली हमले में 138 ईरानियों की मौत

ईरान ने भी किया पलटवार

- इजराइल पर हमले में 3 की मौत
- इजराइल पर दागी सैकड़ों बैलेस्टिक मिसाइलें

तेहरान/तेल अवीव, एजेंसी। इजराइल और ईरान के बीच टकराव जारी है। पिछले दो दिनों में ईरान में 138 लोग मारे गए हैं। इजराइल ने शुक्रवार रात 10:30 बजे दूसरी बार ईरान के परमाणु ठिकानों पर फाइटर प्लेन से हमले किए। इस हमले में 60 लोगों की मौत हो गई। जबकि 350 से ज्यादा लोग घायल हुए। इजराइल के हमलों में ईरान के दो और शीर्ष सैन्य जनरल मारे गए हैं। ईरान के सरकारी मीडिया ने शनिवार को इसकी जानकारी दी। रिपोर्ट्स में बताया कि खुफिया विभाग के डिप्टी जनरल गोलामरेजा महरबी और डिप्टी ऑपरेशं मेहदी रब्बानी की मौत हुई है। हालांकि ये नहीं बताया गया कि इन दोनों जनरलों की मौत कहां हुई। इससे पहले ईरान में शुक्रवार सुबह 5:30 बजे हुए हमले में 78 लोग मारे गए थे। इनमें 9 न्यूक्लियर साइंटिस्ट और 20 से ज्यादा ईरानी कमांडर्स शामिल थे। ईरान ने भी शुक्रवार रात इजराइली हमले के तुरंत बाद पलटवार किया और इजराइल पर 150 से ज्यादा मिसाइलें दागीं, जिनमें 6 राजधानी तेल अवीव में गिरीं।

ईरान ने शनिवार की सुबह इजराइल पर मिसाइल हमला किया। इस हमले में कम से कम तीन लोगों की मौत हुई है और दर्जनों घायल हुए हैं। तेल अवीव में एक महिला की मौत हुई है। सेंट्रल इजराइल में हुए मिसाइल हमले में दो लोगों की मौत हुई थी। सेंट्रल इजराइल में हुए हमले में 19 लोग घायल भी हुए हैं। इजराइल का कहना है कि चार मकान बुरी तरह से तबाह हुए हैं। सात जवान सहित 90 से ज्यादा घायल हुए हैं। ईरान ने दावा किया है कि मिसाइल इजराइली रक्षा मंत्रालय पर भी गिरी। हालांकि अभी तक इजराइल ने इसकी पुष्टि नहीं की है। इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू को सुरक्षित ठिकाने पर शिफ्ट कर दिया गया है। इजराइल के रक्षा मंत्री इजराइल काट्ज ने शनिवार को ■ शेष पृष्ठ 8 पर

इजराइल-ईरान की लड़ाई में फंसे जम्मू-कश्मीर के 13 सौ छात्र

जम्मू, एजेंसी। इजराइल-ईरान की लड़ाई में करीब 1300 जम्मू कश्मीर के छात्र भी फंसे हुए हैं। उनकी सलामती को लेकर जम्मू-कश्मीर के कई घरों में चिंता और गम का आलम है। परिजन लगातार केंद्र सरकार से आग्रह कर रहे हैं कि उन्हें वहां से निकाला जाए। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला और पूर्व मुख्यमंत्री डा.फारूक अब्दुल्ला भी इसके प्रति गुहार लगा रहे हैं। ईरान और इजराइल के बीच लगातार बढ़ते युद्ध जैसे हालात के बीच भारत में चिंता की लहर दौड़ गई है। खासतौर पर जम्मू-कश्मीर से ताल्लुक रखने वाले छात्रों के परिवारों में बेचैनी बढ़ गई है, जो फिलहाल इरान में पढ़ाई कर रहे हैं। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने विदेश मंत्रालय से अपील की कि वह ईरान में फंसे कश्मीरी छात्रों की सुरक्षा सुनिश्चित करें।

पचमढ़ी में मंत्रियों, सांसदों, विधायकों की पाठशाला, शाह ने दी नसीहत, बोले-

गलत बयानबाजी से बचें, पुनरावृत्ति न हो

- मंत्रियों से कहा- विधायकों को महत्व दें
- आम जनता से सतत संपर्क रखें

पचमढ़ी/भोपाल, देशबन्धु। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मंत्रियों, जनप्रतिनिधियों और पार्टी नेताओं को अनुशासित रहने और गलत बयानबाजी से बचने की सलाह दी है। उन्होंने आज पचमढ़ी में पार्टी सांसद, विधायकों और मंत्रियों के 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए यह बात कही। श्री शाह ने कहा कि हम सभी पार्टी के कार्यकर्ता हैं और पार्टी ने योग्यता व क्षमता के आधार पर हमें आगे बढ़ाया और सांसद-विधायक बनाया है। उन्होंने हाल ही में कुछ मंत्रियों द्वारा की गई विवादास्पद बयानबाजी का उल्लेख किए बिना कहा कि गलती हो जाती है, लेकिन इसकी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए। उनका कहना था कि गलत बयानबाजी से पार्टी की छबि को नुकसान पहुंचता है। श्री शाह ने मंत्रियों को यह सीख भी दी कि वे विधायकों को महत्व दें, साथ ही जनप्रतिनिधियों से यह भी कहा कि वे जनता से सतत संपर्क रखें।

श्री शाह ने कहा कि देश जब आजाद हुआ, उस समय कांग्रेस का शासन था और कांग्रेस पार्टी पर पूरी तरह पं. नेहरू हावी थे। उस समय नेहरू सरकार ने जो नीतियां बनाईं, उनमें देश की मिट्टी की सुगंध नहीं थी। उस समय कई नेता थे, जो इन नीतियों से सहमत नहीं थे। उन्हीं में से एक थे डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जो नेहरू मंत्रिमंडल में उद्योग मंत्री थे। पं. नेहरू ने जब नेहरू-लियाकत पैक्ट के फलस्वरूप कश्मीर में धारा 370 लगाई, तो डॉ. श्यामप्रसाद मुखर्जी जी ने मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। श्री शाह ने कहा कि उन्हें देश में एक ऐसी राजनीतिक पार्टी की आवश्यकता महसूस हुई, जो देश के इतिहास, धर्म, परंपरा और संस्कृति से जुड़ी हुई हो। इसी विचार से उन्होंने जनसंघ की स्थापना की। पं. दीनदयाल उपाध्याय ने इस दल की विचारधारा के बीज बोए। उन्होंने कहा कि ये पार्टी संगठन के आधार पर चलने वाली पार्टी होगी, जिसकी आत्मा उसके कार्यकर्ता होंगे। सरकार बनाना हमारा लक्ष्य नहीं होगा, बल्कि हम अपने सिद्धांतों के लिए सरकार बनाएंगे। उस समय लोगों ने जनसंघ का खूब मखौल उड़ाया, लेकिन आज जनसंघ से ही बनी भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़ा राजनीतिक दल है। देश के 18 राज्यों में हमारी सरकारें हैं। सबसे ज्यादा सांसद, विधायक, जिला पंचायत, नगर पालिका, जनपद पंचायत और ग्राम पंचायतें हैं। आज पंचायत से लेकर पार्लियामेंट तक भाजपा ही दिखाई देती है।

श्री शाह ने कहा कि पिछले 11 वर्षों में 27 करोड़ लोग गरीबी की रेखा से बाहर आए हैं। प्रधानमंत्री जी ने डायरेक्ट बेनीफिट ट्रांसफर योजना के जरिए 3.9 लाख करोड़ रूपए के लीकेज को रोका। देश नक्सलवाद के खात्मे की ओर तेज़ी से बढ़ रहा है। सरकार ने समाज के हर वर्ग की चिंता की और उनके जीवन स्तर को सुधारने के लिए निरंतर प्रयास किया। पिछले 11 वर्षों में वह विकास हुआ जो किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व ■ शेष पृष्ठ 8 पर

भाजपा में ही वैचारिक प्रशिक्षण की परंपरा : डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रशिक्षण वर्ग को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी में ही वैचारिक प्रशिक्षण की परंपरा है, हम उसको आगे बढ़ाते हुए सुशासन की दिशा में अपनी भूमिका का निर्वहन कैसे करें इसको लेकर प्रशिक्षण वर्ग में सैद्धांतिक, व्यवहारिक एवं अन्य विषयों पर विस्तार से चर्चा होगी। डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पाकिस्तान पर भारतीय सेनाओं ने पाकिस्तान प्रेरित आतंक को समूल नष्ट करने का काम किया है। अलगाववाद, नक्सलवाद और आतंकवाद की गतिविधियां होती रहती थी, लेकिन प्रधानमंत्री के कार्यों और नीतियों से नक्सलवाद और आतंकवाद को लगभग समाप्त कर दिया है। देश के गृह मंत्री अमित शाह ने देश के अंदर नक्सलवाद को पूरी तरह समाप्त करने का प्रण लिया है। उन्होंने कहा कि आज आयोजित सांसद एवं विधायकों का प्रशिक्षण वर्ग हमारी भूमिका को और मजबूत बनाने का कार्य करेगा। हम सभी सिद्धांतों और आदर्शों पर आधारित राजनीतिक दल के कार्यकर्ता हैं।

मध्यप्रदेश ने चुनाव में इतिहास रचा है : शर्मा

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि आज से तीन दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग का शुभारंभ हो रहा है। इस प्रशिक्षण वर्ग में मध्यप्रदेश से पार्टी के सभी सांसद एवं विधायक उपस्थित हैं। मध्यप्रदेश भारतीय जनता पार्टी ने पिछले विधानसभा चुनाव और लोकसभा चुनाव में हो इतिहास रचा है, उसको लेकर कोई शंकोच नहीं है कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश भाजपा ने यह इतिहास रचा है। उन्होंने कहा कि इसके लिए मध्यप्रदेश भाजपा आपका हृदय से आभार व्यक्त करती है। तीन दिवसीय इस प्रशिक्षण वर्ग में उद्घाटन और समापन सत्र मिलाकर कुल 14 अलग-अलग रहेंगे, जिनमें पार्टी के वरिष्ठ नेताओं का मार्गदर्शन मिलेगा।

मृतकों के पार्थिव शरीर ले जाने के लिए कॉफिन बना रहे नेल्विन, बोले -'यह हादसा दुखदायी'

अहमदाबाद, 14 जून (एजेंसियां)। अहमदाबाद में हुए दिल दहलाने वाले विमान हादसे ने पूरे देश को झकझोर दिया है। इस त्रासदी में 200 से अधिक लोगों की जान चली गई और अब मृतकों के पार्थिव शरीर उनके परिवारों तक पहुंचाने की तैयारी चल रही है। इसके लिए एयर इंडिया ने वडोदरा के कॉफिन मेकर को 100 कॉफिन बनाने का ऑर्डर दिया है, जिनमें से 25 शनिवार को अहमदाबाद भेजे जाएंगे।

वडोदरा के कॉफिन मेकर नेल्विन रजवाड़ी ने पत्रकारों से कहा, 'कल (शुक्रवार) रात साढ़े आठ बजे एयर इंडिया के मैनेजर का फोन आया। किसी ने उन्हें मेरा नंबर दिया था। उन्होंने 100 कॉफिन की जरूरत बताई। मैंने कहा कि इतने कॉफिन तुरंत बनाना मुश्किल है, लेकिन हमने काम शुरू कर दिया।' उन्होंने कहा, 'आज (शनिवार) सुबह 11 बजे से हम जुटे हैं, घर भी नहीं गए। मेथोडिस्ट चर्च के फादर ने हमें जगह दी और कॉफिन बनाने का सारा सामान उपलब्ध कराया, जिसमें सफेद कपड़ा भी शामिल है। मैं 30 साल से यह काम कर रहा हूं और ऑल इंडिया एम्बुलेंस सेवा भी चलाता हूं। एक तिल्ली का दर्द भी पांच दिन तक रहता है, तो सोचिए, इस हादसे में परिवारों का क्या हाल हुआ होगा।'

उनके मुताबिक, मृतकों के पार्थिव शरीर परिवारों को सौंपने के लिए एयर इंडिया ने तुरंत कॉफिन की व्यवस्था शुरू की। वडोदरा के नेल्विन रजवाड़ी को 100 कॉफिन बनाने का ऑर्डर मिला। मेथोडिस्ट चर्च के फादर ने इसे देशभक्ति का काम बताते हुए हरसंभव मदद दी। सात से अधिक लोग दिन-रात कॉफिन बनाने में जुटे हैं। अब तक 25 कॉफिन तैयार हो चुके हैं, जो शनिवार को एयर इंडिया की विशेष उड़ान से अहमदाबाद सिविल अस्पताल भेजे जाएंगे। बाकी कॉफिन जल्द तैयार होंगे। उल्लेखनीय है कि गत 12 जून को एयर इंडिया का लंदन जा रहा विमान (एआई-171) अहमदाबाद हवाई अड्डे से उड़ान भरने के तुरंत बाद मेघानीनगर में मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल की इमारत से टकरा गया।

- वडोदरा के नेल्विन रजवाड़ी को 100 कॉफिन बनाने का ऑर्डर मिला
- सात से अधिक लोग दिन-रात कॉफिन बनाने में जुटे
- मेथोडिस्ट चर्च के फादर ने इसे देशभक्ति का काम बताते हुए हरसंभव मदद दी

आईएमए ने टाटा संस से घायल व मृत मेडिकल छात्रों की सहायता करने का किया अनुरोध

इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, गुजरात स्टेट ब्रांच ने शनिवार को टाटा संस से अहमदाबाद हवाई अड्डे के पास एयर इंडिया की फ्लाइट एआई-171 दुर्घटना में घायल और मारे गए बीजे मेडिकल कॉलेज के छात्रों को वित्तीय सहायता देने का अनुरोध किया। इस दुर्घटना में विमान में सवार और जमीन पर मौजूद लगभग 275 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है। एयर इंडिया के स्वामित्व वाले टाटा समूह ने इस दुखद घटना में जान गंवाने वाले प्रत्येक व्यक्ति के परिवारों के लिए 1 करोड़ रुपए के मुआवजे की घोषणा की। टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन को संबोधित एक पत्र में आईएमए ने एयर इंडिया द्वारा मुआवजे की घोषणा की सराहना की और प्रभावित मेडिकल छात्रों और डॉक्टरों के लिए तत्काल सहायता का अनुरोध किया।

पत्र में लिखा गया है, 'हम आपसे विनम्रतापूर्वक अनुरोध करते हैं कि दुर्घटना स्थल पर मौजूद उन मेडिकल छात्रों को वित्तीय और आवश्यक सहायता प्रदान करने पर विचार करें, जो इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना में घायल हुए या अपनी जान गंवा बैठे।' पत्र में आगे कहा गया, 'ये व्यक्ति न केवल पीड़ित थे, बल्कि हमारी स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के भविष्य के स्तंभ भी थे। उनके परिवार समान देखभाल और सहायता के हकदार हैं। तदनुसार, हम आपसे विनम्रतापूर्वक अनुरोध करते हैं कि घायल हुए या अपनी जान गंवाने वाले मेडिकल छात्रों को भी तत्काल समान सहायता प्रदान करने की घोषणा करें।' इससे पहले, दो डॉक्टरों ने सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की थी, जिसमें केंद्र सरकार को प्रभावित मेडिकल छात्रों को पर्याप्त मुआवजा प्रदान करने के निर्देश देने की मांग की गई थी।

डॉ. सौरव कुमार और डॉ. ध्रुव चौहान द्वारा शुक्रवार को दायर याचिका में सुप्रीम कोर्ट से अनुरोध किया गया है कि केंद्र सरकार को सभी मृतक पीड़ितों के परिवारों के लिए 50 लाख रुपए के अंतरिम मुआवजे की तुरंत घोषणा करने का निर्देश दिया जाए, जिसमें बीजे मेडिकल कॉलेज के रेजिडेंट डॉक्टर भी शामिल हैं, जो मारे गए लोगों में शामिल थे।

प्रत्यक्षदर्शी आकाश पटनी ने कहा, 'जो देखा वो खौफनाक था'

गुजरात के अहमदाबाद में हुए एयर इंडिया विमान हादसे को लेकर प्रत्यक्षदर्शी आकाश पटनी ने कहा कि वह मंजर बहुत ही भयावह था, जिसे मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकता। शनिवार को प्रत्यक्षदर्शी आकाश पटनी ने कहा, 'गुजरात हाउसिंग बोर्ड के एक नंबर ब्लॉक में रहता हूं। जो घटना हुई है उसे शब्दों में बयां नहीं कर सकता हूं। वो एक भयानक मंजर था। मैं उस दिन घर पर था। कपड़े उतारने के लिए पत्नी के साथ छत पर गया था। इस दौरान हमने देखा कि एक प्लेन हमारी तरफ आ रहा है। हमारा शरीर कांपने लगा। प्लेन सबसे पहले एक पेड़ से टकराया। इसके बाद हॉस्टल की बिल्डिंग पर गिरा। चारों तरफ फैले धुएं के कारण हमें कुछ देर के लिए दिखना तक बंद हो गया था। जैसे-तैसे हम छत से नीचे की ओर आए। धमाका इतना जोरदार था कि आस-पास की बिल्डिंग में रहने वाले लोग भी घर से बाहर एक सुरक्षित जगह पर जमा हुए।' पटनी ने उस मेस की भी बात की जिस पर विमान गिरा था। बोले, 'रेस्क्यू ऑपरेशन के दौरान हम भी वहां गए थे। खाने की प्लेट में खाना वैसा का वैसा ही था। इसके बाद लोगों ने यह समझा कि छात्र खाना ही खाने वाले थे। लेकिन, खाना खाने से पहले यह भयावह हादसा हो गया।'

महागठबंधन की सरकार बनी तो बिहार में 100 प्रतिशत डोमिसाइल नीति लागू होगी : तेजस्वी यादव

बिहार अब सुरक्षित हाथों में नहीं है। जनता अब 20 साल पुरानी सरकार को नहीं चाहती है : तेजस्वी यादव

पटना, 14 जून (एजेंसियां)। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता और बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने शनिवार को कहा कि राज्य में महागठबंधन की सरकार बनी तो प्रदेश में 100 प्रतिशत डोमिसाइल नीति लागू होगी। उन्होंने भाजपा पर निशाना साधते हुए उसे झूठी पार्टी बताया। तेजस्वी यादव पटना में आयोजित पाल महासम्मेलन में लोगों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आज बच्चों को प्रतियोगिता परीक्षा देने जाने के लिए अभिभावकों से पैसा लेने पड़ते हैं। लेकिन, जब महागठबंधन की सरकार आएगी, तो परीक्षा देने के लिए आने-जाने का खर्च सरकार वहन करेगी। पटना के श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में आयोजित पाल सम्मेलन में पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव को समुदाय की ओर से एक जीवित भेड़ उपहार भेंट की गई। तेजस्वी यादव ने मंच पर उस भेड़ को सहज भाव से स्वीकार किया। इस कार्यक्रम में भेड़ को पाल समाज की पारंपरिक आजीविका और पहचान का प्रतीक माना गया। बताया गया कि तेजस्वी सम्मेलन से जाने के दौरान भेड़ को भी साथ ले गए। राजद नेता तेजस्वी यादव ने कहा कि दुख होता है कि बिहार सबसे गरीब राज्य है और सबसे अधिक पलायन यहां से हो रहा है। 20 साल से नीतीश कुमार मुख्यमंत्री हैं, लेकिन बिहार का क्या विकास हुआ? उन्होंने कहा कि बिहार में आम लोग अफसरशाही से परेशान हैं। भाजपा को बड़ा झूठा पार्टी बताते हुए उन्होंने कहा कि प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति ऐसी है कि बिहार में कब और कहां गोली चल जाए, कोई नहीं जानता। बिहार अब सुरक्षित हाथों में नहीं है। जनता अब 20 साल पुरानी सरकार को नहीं चाहती है।

कोरोना से नौ मरीजों की मौत, कुल सक्रिय मामले 74 सौ

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में पिछले 24 घंटों के दौरान कोरोना संक्रमण से नौ और मरीजों की मौत होने से इस वायरस से मरने वालों की कुल संख्या 87 हो गई और 269 सक्रिय मामले बढ़ने के साथ कुल सक्रिय मामले 7400 हो गए हैं। इससे पहले शुक्रवार को कोरोना सक्रिय मामलों की कुल संख्या 7131 थी।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से शनिवार को जारी आंकड़ों के अनुसार पिछले 24 घंटों में महाराष्ट्र में कोराना संक्रमण से चार, केरल में तीन और राजस्थान और तमिलनाडु में एक-एक मरीज की मौत हो गई है। राष्ट्रीय राजधानी, महाराष्ट्र, गुजरात, केरल और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में सबसे ज़्यादा मामले सामने आ रहे हैं। गत 22 मई को देश में कोराना के मामले सिर्फ 257 सक्रिय थे जो आज बढ़कर 7400 तक पहुंच गए। स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक इस दौरान 11967 मरीज कोरोना के संक्रमण से से ठीक हो गए हैं। पिछले 24 घंटों में कोरोना संक्रमण के सबसे अधिक सक्रिय मामले गुजरात से 79, कर्नाटक से 132, केरल से 54 और मध्य प्रदेश से 20 मामले सामने आए है और दिल्ली में 42, आंध्र प्रदेश में 15 और महाराष्ट्र में 16 मामले कम हुए हैं। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के अनुसार संक्रमण के नये उभरते वेरिएंट, विशेष रूप से एलएफ.7, एक्सएफजी, जेएन.1 और हाल ही में पहचाने गए एनबी.1.8.1 सबवेरिएंट के कारण हो रहा है। इन वेरिएंट्स की जांच चल रही है। मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार देश के 28 राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में कोरोना के सक्रिय मामलों में वृद्धि हुई है, जबकि तीन राज्यों मिजोरम, हिमाचल प्रदेश और अरुणाचल प्रदेश में कोरोना संक्रमण का अभी कोई सक्रिय मामला नहीं है। केरल, दिल्ली, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल में सक्रिय मामलों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। भारत के कई राज्यों में कोविड-19 के मामलों में बढ़ोतरी के बीच देश में चार नए वैरिएंट मिले हैं।

सफलता

दिन में ढोई ईंटें, रात में पढ़ाई

कड़े संघर्ष के साथ नीट में हासिल किए 677 अंक

नई दिल्ली, देशबन्धु। नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट यूजी देश की सबसे कठिन प्रतियोगी परीक्षाओं में से एक है। यह एग्जाम देश के मेडिकल और डेंटल सरकारी और प्राइवेट विश्वविद्यालयों में प्रवेश पाने के लिए दिया जाता है। हर साल आयोजित होने वाली नीट यूजी की परीक्षा लाखों छात्र देते हैं, जिसमें अच्छा स्कोर करना काफी मुश्किल होता है, लेकिन कहते हैं न जब किसी के ऊपर किसी चीज हो हासिल करने का जुनून सवार हो जाए तो मंजिल मिल ही जाती है। कुछ ऐसी ही कहानी है शेख सरफराज की, जो पिछली साल नीट यूटी 2024 की परीक्षा में 720 में से 677 अंक हासिल किए थे।

शेख सरफराज -शेख सरफराज मूल रूप से पश्चिम बंगाल के रहने वाले हैं, जो एक दिहाड़ी मजदूर के बेटे हैं। सरफराज ने नीट यूजी 2024 की परीक्षा में 720 में से 677 अंक हासिल किए थे। उनका सपना डॉक्टर बनना था, इसके लिए वो हर दिन मजदूर के तौर पर काम किया करते थे। परिवार की आर्थिक स्थिति को देखते हुए वो प्रतिदिन 300 से 400 ईंटें ढोते थे, जिसके लिए उन्हें रोजाना 300 रुपये मिलता था। सुबह 6 से दोपहर 2 बजे तक मजदूरी करने के बाद सरफराज घर पर ही ऑनलाइन क्लास की मदद से पढ़ाई करते थे। नीट की तैयारी और अपने सपने को पूरा करने के लिए सरफराज दिन-रात कठिन परिश्रम किया करते थे। वो रात में बिना छत वाले घर में ठंड के मौसम में पढ़ाई करते थे,

मां का रहा सहयोग -सरफराज की सफलता में उनकी मां का बहुत योगदान रहा। वो बेटे के साथ रात-रात भर जगी रहती थी। 10वीं पास कर सरफराज का सपना एनडीए में शामिल होने का था, लेकिन परिवार की स्थिति को देखते हुए उन्होंने यह विचार छोड़ दिया। कोरोना महामारी के दौरान उन्होंने सरकारी सहायता से एक फोन लिया और उसी की मदद से पढ़ाई करने लगे। नीट की तैयारी के लिए सरफराज अलख पांडे के मुफ्त यूट्यूब वीडियो का मदद लेते थे। इसी के साथ उन्होंने फिजिक्स वाला के एक किफायती कोर्स में एडमिशन लिया।

ऑनलाइन क्लास और सेल्फ स्टडी के माध्यम से उन्होंने तैयार किया, लेकिन पहले अटेंप्ट के बाद उन्हें एक डेंटल कॉलेज अलॉट हुआ जिसमें उन्होंने एडमिशन लिया, लेकिन हॉस्टल की सुविधा नहीं होने के कारण उन्हें वो बीच में ही छोड़ना पड़ा। इसके बाद सरफराज ने दूसरी बार नीट यूजी की परीक्षा की तैयारी करने का निर्णय लिया। साल 2024 में उन्होंने दूसरा अटेंप्ट दिया और सफलता हासिल किया। उन्होंने कोलकाता के प्रतिष्ठित नील रतन सरकार मेडिकल कॉलेज में एडमिशन लिया।

अवैध शराब तस्करी का भंडाफोड़

54 लीटर शराब और स्कूटर जब्त, न्यायालय ने आरोपी को भेजा जेल

बनखेड़ी, देशबन्धु। बनखेड़ी में अवैध शराब तस्करी का भंडाफोड़, पेट्रोल पंप कर्मचारी को गिरफ्तार किया गया। क्षेत्र में तेजी से फैल रही अवैध शराब बिक्री के खिलाफ पुलिस की सख्त कार्रवाई जारी है। वहीं सूत्रों की मानें तो पकड़ा गया आरोपी किसी नए शराब ठेकेदार की शराब को बनखेड़ी क्षेत्र में लाकर लंबे समय से बेच रहा था। जिसकी तलाश स्थानीय शराब ठेकेदार के कर्मचारी पकड़ने के लिए लंबे समय से जाल बिछा रहे थे। लेकिन पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर उक्त शख्स को पकड़कर स्थानीय शराब ठेकेदार काम और आसान कर दिया। देर रात को बनखेड़ी पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी, जब मुखबिर की सूचना पर पुलिस की टीम ने बिछुआ रोड स्थित शंकर

मंदिर के पास एक युवक को अवैध शराब की तस्करी करते हुए रंगेहाथों पकड़ लिया। एसआई मनमोहन सिंह ठाकुर ने बताया कि पकड़े गए आरोपी की पहचान सुनील सेनवार पिता नन्हेंलाल सेनवार (उम्र 42 वर्ष), निवासी गुर्जर मोहल्ला, बनखेड़ी पुराना बाजार के रूप में हुई है। आरोपी एक पीले रंग की बोरी में गोवा कंपनी के 100 क्वार्टर अंग्रेजी शराब एवं चार पेटियों में 200 क्वार्टर देसी प्लेन सफेद शराब (कुल 54 लीटर) स्कूटर से परिवहन कर रहा था।

बरामद शराब की कुल कीमत लगभग 30,000 आंकी गई है। इसके अलावा पुलिस ने आरोपी के पास से टीवीएस कंपनी का स्कूटर भी जप्त कर लिया है। प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया है कि आरोपी लंबे समय से शराब तस्करी में लिप्त है और क्षेत्र के एक पेट्रोल पंप पर कर्मचारी के रूप में कार्यरत है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 34(2) बीएनएस के तहत मामला दर्ज कर शनिवार को न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया है। इस कार्रवाई से अवैध शराब कारोबारियों में हड़कंप मचा हुआ है।

सतपुडा टाइगर रिजर्व मे बाघ द्वारा गश्ती दल के स्थाईकर्मी पर हमला

बाघ से लड़कर गंगाराम ने बचाई साथी की जान

सोहागपुर, देशबन्धु। शनिवार दोपहर लगभग 2 बजे जंगल गश्ती कर लौट रहे स्थायीकर्मी सट्टू लाल बल्द गनेशराम धुर्वे पर बाघ ने हमला कर दिया, जिसमें स्थायीकर्मी के दांये पैर, पेट एवं पीठ पर बाघ के नाखून से चोट आई है वहीं जांघ पर दांत से हमला करने पर चोट आई है। सट्टूलाल स्थायीकर्मी अपने साथी सुरक्षा श्रमिक हल्के बल्द गंगाराम के साथ जंगल गश्ती कर केम्प लौट रहे थे, तभी केम्प से लगभग 100 मीटर दूरी पर बाघ ने सट्टूलाल पर अचानक हमला कर नीचे गिरा दिया, ऐंसे में साथी सुरक्षा श्रमिक जो सटूलाल के पीछे चल रहा था ने दौड़कर उसकी जान बचाई,हल्के बल्द गंगाराम ने चिल्लाते हुए बाघ की तरफ दौड़कर सट्टूलाल को बचाया। बाघ तेज आवाज सुनकर और गंगा राम के हाथ में डंडा देखकर पीछे हटा। इस बीच गंगाराम सट्टूलाल को सुरक्षित केम्प के अन्दर लेकर गया एवं वरिष्ठ अधिकारियों को सूचना दी। अपनी जान जोखिम में डालकर दूसरों की जान बचाने वाले उदाहरण केवल जंगल के आदिवासी शेरों में ही दिखाई देती है। 17 दिन में दूसरी बार एक साथ ही ने दूसरे की जान बचाई। यही भरोसा उन्हें सबसे अलग करता है। जब यह चौकीदार बिना किसी हथियार के जंगल की सुरक्षा करते हैं तब उन्हें अपने साथियों पर विश्वास होता है कि जब मुसीबत आएगी तो वह एक दूसरे का साथ देंगे। बहरहाल, सट्टूलाल को उपचार हेतु सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सोहागपुर लाया गया। जहाँ से उसे प्राथमिक उपचार के बाद अपोलो अस्पताल भोपाल रवाना कर दिया गया है।

इनका कहना है

गस्ती के दौरान एक स्थाई कर्मी सट्टूलाल पर बाघ ने हमला कर दिया साथी चौकीदार गंगाराम में उसकी जान बचाई हम सट्टू लाल का इलाज करवा रहे हैं, वह खतरे से बाहर है

राखी नंदा, फील्ड डायरेक्टर सतपुड़ा टाइगर रिजर्व

हनुमान मंदिर से चांदी का मुकुट चोरी, घटना की पुलिस थाना में की शिकायत

बनखेड़ी, देशबन्धु। गुदरई ग्राम में शुक्रवार देर रात को एक अज्ञात चोर ने हनुमान जी के निजी मंदिर में चोरी की वारदात को अंजाम दिया। चोर मंदिर में स्थापित हनुमान जी की प्रतिमा से चांदी का मुकुट चुरा ले गया। शनिवार को इस घटना की शिकायत बनखेड़ी थाने में बनखेड़ी के दीपक कुमार माहेश्वरी द्वारा दर्ज कराई गई है।

दीपक माहेश्वरी ने पुलिस को बताया कि यह मंदिर उनके परिवार द्वारा गांव में बनवाया गया है। शुक्रवार की रात तक मंदिर में सब कुछ सामान्य था, लेकिन शनिवार सुबह जब वे पूजा के लिए मंदिर पहुंचे, तो देखा कि हनुमान जी के सिर पर रखा चांदी का मुकुट गायब है। तत्काल गांव के अन्य लोगों को सूचित किया गया और फिर थाने में मामले की शिकायत की गई है।-

बनखेड़ी में बुजुर्ग से ठगी का मामला: मनु ज्वेल्र्स पर नकली आभूषण बेचने का आरोप, जांच में जुटी पुलिस

बनखेड़ी, देशबन्धु। नगर में सोने-चांदी के आभूषणों की शुद्धता को लेकर एक बार फिर ज्वेलर्स व्यापारियों की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े हो गए हैं। ताज़ा मामला बनखेड़ी के प्रतिष्ठित माने जाने वाले मनु ज्वेल्स से जुड़ा है, जहां एक बुजुर्ग ग्राहक के साथ नकली सोना बेचकर धोखाधड़ी की गई। इस घटना ने स्थानीय व्यापारिक ईमानदारी और उपभोक्ता विश्वास दोनों पर गंभीर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है।

बुजुर्ग ने खरीदे थे नकली आभूषण, दुकानदार ने किया इंकार

प्राप्त जानकारी के अनुसार, गाडरवारा तहसील के ग्राम ढींगसरा निवासी छोटे भैया पिता सुम्मा अहिरवार ने सितंबर 2021 में बनखेड़ी के मनु ज्वेल्स से 9.300 ग्राम वजन के दो सोने के आभूषण 45,340 में खरीदे थे। इस दौरान दुकानदार ने केवल कच्चा बिल दिया और कोई प्रमाणित रसीद नहीं सौंपी। पैसों की आवश्यकता पड़ने पर अगस्त 2024 में बुजुर्ग ने वही आभूषण

20,000 में गिरवी रखे और दिसंबर में उन्हें छुड़ा भी लिया। लेकिन जब 20 मई 2025 को वे दोबारा इन्हें गिरवी रखने पहुंचे, तो ज्वेलर्स संचालक संजय जैन ने आभूषणों को नकली बताते हुए लेने से इनकार कर दिया। दुकान से निकाला, दी गालियां आहत बुजुर्ग ने बताया कि जब उन्होंने विरोध जताया, तो दुकानदार ने उनके साथ जातिसूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए उन्हें दुकान से बाहर निकाल दिया।

सवाल: क्या सुरक्षित हैं उपभोक्ता अधिकार

इस घटना ने न केवल एक बुजुर्ग ग्राहक के आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाई है, बल्कि पूरे क्षेत्र में ज्वेलरी व्यापार की पारदर्शिता और विश्वसनीयता पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। यदि समय रहते ठोस कार्रवाई नहीं की गई, तो ऐसे धोखाधड़ी के मामले उपभोक्ताओं का विश्वास पूरी तरह खत्म कर सकते हैं। अब यह देखना होगा कि प्रशासन इस मामले में कितनी तत्परता और सख्ती से कदम उठाता है, और भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए क्या ठोस व्यवस्था की जाती है।

जनता की प्रतिक्रिया

अब सोना खरीदने में भी डर लगता है, दुकानदार के कहने पर विश्वास करना मुश्किल हो गया है। -**गोलू ठाकुर (ग्राहक)**

हम महिलाओं की सबसे बड़ी पूंजी होती है ज्वेलरी, ऐसे में अगर यही नकली निकले तो हम कहां जाएं। - **मालती बाई (गृहिणी)**

यदि आरोप सिद्ध होते हैं तो संबंधित व्यापारी के खिलाफ कड़ी कार्यवाही होनी चाहिए। ये पूरे व्यापार समुदाय की साख का मामला है। -**सुशील कुमार सोनी (व्यापारी संघ अध्यक्ष)**

हां यह बात सही है कि ग्राहक ने अपनी दुकान से सोने के दो अध्धे खरीदे हैं, जिसका बिल भी दिया है। उसे पहले भी गिरवी रखा था। बाद में पैसा जमाकर ले गए। पुलिस जांच में सही स्थिति पता चलेगी। -**संजय जैन,(संचालक मनु जवेलर्स)**

पुलिस ने गंभीरता से लिया मामला, जांच प्रारंभ

बनखेड़ी पुलिस ने शिकायत को गंभीरता से लेते हुए जांच शुरू कर दी है। एसआई मनमोहन सिंह ठाकुर ने बताया कि शिकायत की पुष्टि की जा रही है और दोषी पाए जाने पर संबंधित व्यापारी पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

विधिक साक्षरता शिविर सम्पन्न

हरदा, देशबन्धु। प्रज्ञा नगर, विकास नगर बस्ती और बडी नहर क्षेत्र में शनिवार को विधिक जागरूकता शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में जिला न्यायाधीश चंद्रशेखर राठौर ने नालसा वरिष्ठ नागरिकों के लिए विधिक सेवा योजना, व मानसिक विकलांगता वाले व्यक्तियों और बौद्धिक विकलांगता वाले व्यक्तियों के लिए कानूनी सेवा योजना, 2024 के उपबंधों के बारे में विस्तृत जानकारी दी शिविर में बताया गया कि 18 वर्ष से कम आयु के झुग्गी झोपडियों या रेलवे स्टेशनों पर रहने वाले बच्चे, बाल देखरेख संस्थानों में रहने वाले अथवा अनाथ, परित्यक्त या तस्करी, भीख मांगने वाले, बाल श्रम से मुक्त कराये गए बच्चे। अपंजीकृत बाल गृहों में रहने वाले सभी बच्चों का आशा कार्यकर्ता, आंगनबाडी कार्यकर्ता, पैरालीगल वॉलेंटियर्स आदि द्वारा सर्वे के माध्यम से पहचान जाकर उनके आधार कार्ड बनाया जाने हेतु साथी अभियान चलाया जा रहा है। गठित टीम द्वारा 26 मई से बच्चों को चिन्हित करने की कार्यवाही की जा रही है।

रेत के अवैध परिवहन में शामिल 2 ट्रैक्टर जप्त

हरदा,देशबन्धु। कलेक्टर सिद्धार्थ जैन के निर्देशन मे जिले में खनिज के अवैध उत्खनन, परिवहन और भंडारण के रोकथाम की कार्यवाही लगातार जारी है। जिला खनिज अधिकारी आर.पी. कमलेश ने बताया कि शनिवार को खनिज विभाग के दल ने सिराली तहसील क्षेत्र अन्तर्गत खनिज के अवैध उत्खनन एवं परिवहन की जांच की। जांच के दौरान ग्राम महेंद्रगांव की काली माचक नदी मे दो ट्रेक्टर मे रेत भरते पाए गए।

पूछताछ करने पर उनके पास उत्खनन की अनुमति नही पाई गई। दल द्वारा पावरटेक बिना नम्बर के ट्रेक्टर एवं दूसरा ट्रेक्टर नम्बर एमपी 47 एएच 3123 को मौके से जप्त कर थाना सिराली में खडा किया गया है। प्रकरण मे गौण खनिज नियमो के तहत कार्यवाही प्रस्तावित की जावेगी। जिले मे खनिज के अवैध उत्खनन,परिवहन और भंडारण के रोकथाम की कार्यवाही सतत जारी रहेगी।

104 लोगों ने स्वास्थ्य लाभ लिया

नि:शुल्क होम्योपैथिक आयुष्मान आरोग्य शिविर का आयोजन

हरदा, देशबन्धु। आयुष्मान आरोग्य मंदिर चारखेड़ा में शनिवार को नि:शुल्क होम्योपैथिक आयुष्मान आरोग्य शिविर का आयोजन किया गया जिसमे थीम सामान्य मुख समस्याओं के लिए देखभाल के अनुसार कुल 104 लोगों ने स्वास्थ्य लाभ लिया। शिविर में डॉ अजय जायसवाल ने परीक्षण कर उचित उपचार प्रदान किया एवं मुख रोगों से बचाव के संबंध में जानकारी दी। शिविर में अनिल पाटिल, कैलाश मांझी, श्रीमती राजकुमारी लौंगरे एवं आकाश ने भी सेवाएं दी। आर. के. तिल्लोरे (ग्राम सचिव) ने लोगो को अधिक से अधिक संख्या में शिविर में लाभ लेने के लिए प्रोत्साहित किया। जिला

आयुष अधिकारी डॉ अनिल वर्मा के मार्गदर्शन में हरदा जिले के समस्त आयुष्मान आरोग्य मंदिर (आयुष) में आयुष्मान आरोग्य शिविर नवंबर 2024 से प्रतिमाह 14 तारीख को अलग- अलग स्वास्थ्य थीम को ध्यान में रखकर लगाया जाता है। शिविर अक्टूबर 2025 तक लगाए जाने है।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र नौसर राष्ट्रीय गुणवत्ता मानक में चयनित हुआ

हरदा,देशबन्धु। कलेक्टर सिद्धार्थ जैन के निर्देशन में जिले के सरकारी अस्पतालों में उपलब्ध सुविधाओं और गुणवत्ता में लगातार सुधार हो रहा है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एच.पी.सिंह ने बताया कि अब तक जिले के कुल 31 अस्पतालों को राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक के तहत चयनित किया जा चुका है। उन्होने बताया कि हाल ही में जिले के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र नौसर राष्ट्रीय गुणवत्ता मानक के तहत चयनित किया।

विधायक डॉ. दोगने ने किसान संगठनों का किया आभार व्यक्त

हरदा,देशबन्धु। हरदा विधायक डॉ रामकिशोर दोगने ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि किसानों की ग्रीष्मकालीन मूंग फसल की खरीदी समर्थन मूल्य पर सरकार द्वारा नहीं की जा रही थी। जिसके चलते हरदा जिले सहित पूरे प्रदेश में किसान संगठनों व समस्त किसानों एवं कांग्रेस पार्टी द्वारा धरना आंदोलन कर सरकार पर मूंग फसल की खरीदी करने का दबाव बनाया गया। जिसके चलते सरकार द्वारा मूंग खरीदी करने की घोषणा की गई है। उन्होंने

समस्त कृषकगणों, किसान संगठनों व कांग्रेस पार्टी के प्रत्येक कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया। जिनके प्रयासों से सरकार को किसानों की बात मानने के लिए झुकना पडा। उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि सब संगठित रहे क्योंकि सरकार किस प्रकार से मूंग खरीदी करेगी यह अभी भी सरकार द्वारा स्पष्ट नही किया गया है। यदि सरकार मूंग खरीदी करने के मापदंड की घोषणा नहीं करती है तो हमें फिर संगठित होकर सरकार पर दबाव बनाना पडेगा। उन्होंने सरकार से मांग की कि किसानों की ग्रीष्मकालीन मूंग फसल खरीदी करने की सरकार की क्या कार्य योजना है। उसे तत्काल घोषित किया जाए।

पाषाण से भगवान बनाने का भव्य आयोजन श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महामहोत्सव का हुआ शुभारंभ

मुनिश्री निर्णयसागर सागर महाराज के सान्निध्य में नगर में निकली भव्य शोभायात्रा

भगवान को चांदी के विमान पर विराजमान कर आयोजन स्थल पर ले जाया गया, महोत्सवस्थल पर पहुंचने पर ध्वजारोहण मंडप उदघाटन के साथ इंद्र प्रतिष्ठा का आयोजन हुआ

हरदा,देशबन्धु। जिले के टिमरनी नगर में पाषाण से भगवान बनाने के भव्य आयोजन श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महामहोत्सव का शुभारंभ हुआ। जैन परम्परा में पाषाण से भगवान बनने की कड़ी पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव होता है। पंचकल्याणक महामहोत्सव में जन्म से मोक्ष तक के संस्कारों की जीवंत झांकी पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में कलशयात्रा में दिखी। शोभा यात्रा में भगवान को चांदी के विमान पर विराजमान कर आयोजन स्थल पर ले जाया गया। शोभायात्रा के महोत्सवस्थल पर पहुंचने पर ध्वजारोहण मंडप उदघाटन के साथ इंद्र प्रतिष्ठा का आयोजन हुआ। इंद्र-इंद्राणी

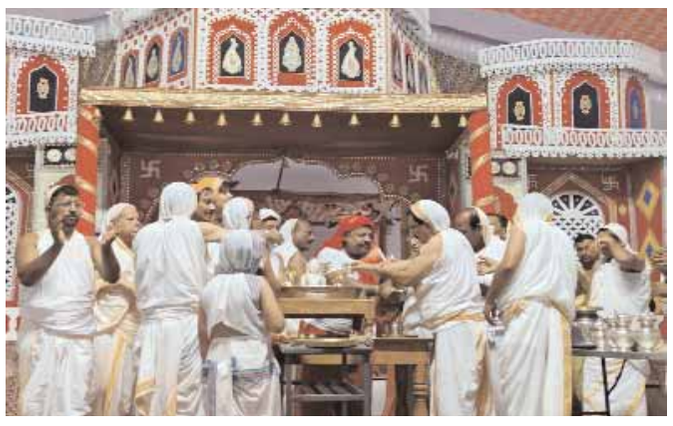

ने यज्ञमंडप विधान की रस्म निभाई। वेदी शुद्धि के बाद माता की सीमांत क्रिया हुई। इससे पहले जैन मंदिर पर देवाज्ञा, गुरु आज्ञा, आचार्य निमंत्रण के बाद शांतिधारा विधान हुआ। जानकरी देते हुए पंचकल्याणक महामहोत्सव के कोषाध्यक्ष राजीव रविंद्र जैन ने बताया कि मुनिश्री निर्णयसागर महाराज के सानिध्य में प्रतिष्ठाचर्या वाणी भूषण बाल ब्रह्मचारी विनय भैय्या बंडा ने अनुष्ठान संपन्न कराए। महोत्सव के पहले दिन गर्भ कल्याणक के दौरान बनारस नगर की रचना के साथ राजा अश्व सेन का दरबार सजा। माता भामादेवी को सोलह स्वप्न का साक्षात्कार करवाया गया। गर्भ में विराजमान होने वाले बालक के संस्कारों की परख की गई। गर्भस्थ शिशु को उत्तम संस्कार की परीक्षा के बाद भगवान माता के गर्भ में विराजमान हुए तो पांडाल भगवान के जयघोष से गूंज उठा। आयोजन का उद्घाघाटन अमृतश्री परिवार के द्वारा किया गया। श्री दिगंबर जैन समाज के नवनिर्मित पाषाण के जिनालय का एवं भगवान पारसनाथ के जिनबिंबो के प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन नगर के अमृतश्री कॉलेज परिसर में किया जा रहा है। आयोजन समिति से जुड़े आलोक जैन एवं मंदिर समिति के अध्यक्ष सुरेंद्र जैन के साथ ही नगर की तारणतरण समाज द्वारा पंचकल्याणक महोत्सव भव्यरूप से संपन्न कराने मेंअपना पूर्ण योगदान दिया जा रहा है।

गर्भ में मिले संस्कार जीवन को बनाते हैं मधुर : मुनिश्री निर्णयसागर महाराज

गर्भ में मिले संस्कार जन्म के बाद मनुष्य के जीवन को मधुर बनाते हैं। साथ ही इन संस्कारों से मनुष्य अच्छे बुरे के ज्ञान के साथ जीवन के परम लक्ष्य भक्ति की ओर उन्मुक्त होता है, जो उसे परम मोक्ष की ओर ले जाती है। मुनिश्री ने प्रवचन देते हुए कहा कि संस्कार ही मनुष्य की पहचान होते हैं। इन संस्कारों की पहचान की शुरूआत गर्भ से हो तो मनुष्य की वास्तविक मन:स्थिति सामने आती है। शिशु को माता के गर्भ में मिले संस्कार चिरकाल तक जीवित रहते हैं।

भोपाल तिराहे से लेकर एसपीएम पुलिस तक चली पोकलेन

स्वच्छता अभियान 2.0

नर्मदापुरम, देशबन्धु। भोपाल तिराहे से लेकर एसपीएम पुलिया के नालों का गहरीकरण किया। बारिश पूर्व नगर के बड़े नाले नालियों सफाई अभियान युद्ध स्तर पर चलाया जा रहा है। शनिवार को पोकलेन मशीन को एसपीएम पुलिया के पास नाले में उतारकर भारी मात्रा में उसमें जमे गाद को निकाला गया। साथ ही आसपास लगी झाडियों को भी साफ किया गया। जहां जेसीबी और पोकलेन नहीं पहुंच पा रही थी वहां पर स्वच्छता दूतों को उतारकर नाले को साफ कराया गया। ध्यान रहे कि इससे स्वच्छता अभियान 1.0 के तहत बाजार क्षेत्र के बड़े नाले नालियों से अतिक्रमण हटाकर सफाई की गई थी। जिसमें सैकड़ों टन कचरा निकाला गया था।

स्वच्छता निरीक्षक कमलेश तिवारी ने बताया कि नगरपालिका अध्यक्ष नीतू महेंद्र यादव एवं मुख्य नगरपालिका अधिकारी हेमेश्वरी पटले के निर्देश पर बारिश पूर्व स्वच्छता अभियान 2.0 को प्रारंभ कर दिया गया। आदमगढ़ नाले से शुरू हुए स्वच्छता अभियान अब भोपाल तिराहे से सीधे एसपीएम पुलिया तक पहुंच गया। यह अभियान लगातार जारी रहेगा। नगरपालिका अध्यक्ष नीतू महेंद्र यादव ने इस संबंध में विस्तार से जानकारी दी है।

भंडारा,शोक सभा और भजनांजलि कर स्वामी ओंकारानंद जी को किया याद

नर्मदापुरम। ब्रह्मलीन तपोमूर्ति पूज्य स्वामी ओंकारानंद जी की पुण्यतिथि के अवसर पर एक श्रद्धांजली सभा एवं भंडारे का आयोजन किया गया कार्यक्रम में सर्वप्रथम भजनांजलि कलाकारों द्वारा भजनों की प्रस्तुति एवं पूज्य स्वामी जी द्वारा लिखित नर्मदा जी के भजनों की प्रस्तुति संस्था के संयोजक राम सेवक शर्मा एवं राम परसाई के नेतृत्व में सम्पन्न हुई कु. दामिनी पठारिया, आदित्य परसाई एवं उदित तिवारी द्वारा गायन किया गया तबले पर संगत आनंद नामदेव ने की, श्रद्धांजलि सभा के उपरांत संत बसंत पंडित जी एवं गिरी मोहन गुरु एवं भागवत आचार्य पंडित सोमनाथ शर्मा द्वारा पूज्य महाराज श्री को श्रद्धांजलि वक्तव्य दिया गया। कार्यक्रम के अगले चरण में पूज्य स्वामी ओंकार आनंद जी द्वारा संकलित एवं संपादित नर्मदा कल्पवल्ली के बारहवें संस्करण का विमोचन किया गया। इस विमोचन के अवसर पर इटारसी नर्मदा पुरम के पूर्व विधायक गिरजा शंकर शर्मा ,पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष भवानी शंकर शर्मा , राकेश फौजदार , जनपद पंचायत अध्यक्ष भूपेंद्र चौकसे एवं नगर पालिका उपाध्यक्ष अभय वर्मा , साहित्यकार अशोक जमनानी ,प्राचीन नर्मदा मंदिर पंडित गोपाल प्रसाद खडुर , महेंद्र चौकसे सहित कार्यक्रम में शहर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

नर्मदा नियरे

सार-समाचार

विहिप का दो दिवसीय अभ्यास वर्ग 21 एवं 22 जून को सिवनी मालवा में

इटारसी, देशबन्धु। विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल जिला नर्मदापुरम का दो दिवसीय जिला अभ्यास वर्ग 21 एवं 22 जून को सिवनीमालवा प्रखंड में श्री राम जानकी मंदिर जयस्तंभ पर आयोजित किया जा रहा है। इसमें संपूर्ण जिला एवं प्रखंड समिति का सम्मिलित होना अनिवार्य किया गया है। वर्ग स्थान पर 21 जून को दोपहर 2 बजे वर्ग प्रारंभ होगा और 22 जून को सायं 4 बजे वर्ग का समापन होगा। जिलाध्यक्ष डॉ सुभाष दुबे ने बताया कि पूरे देश में प्रांतीय स्तर पर विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल, मातृशक्ति, दुर्गावाहिनी के प्रशिक्षण वर्ग लग चुके हैं। जिला मंत्री चेतन सिंह राजपूत ने बताया कि अभ्यास वर्ग में प्रांत संगठन मंत्री सुरेंद्र सिंह एवं प्रांत सह मंत्री जितेंद्र सिंह चौहान के साथ केंद्र तथा प्रांत के पदाधिकारियों का मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

अमित गुप्ता जिलाध्यक्ष, जितेन्द्र सोलंकी बने प्रदेश सचिव, आभार

इटारसी, देशबन्धु। अखिल भारतीय कांग्रेस सेवादल के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालजी देसाई ने नर्मदापुरम जिला सेवादल अध्यक्ष पद पर अमित गुप्ता को नियुक्त किया और जितेंद्र सोलंकी को सेवादल का प्रदेश सचिव बनाया गया है। जिले के समस्त कांग्रेस कार्यकर्ताओ, महिला सेवादल और सेवादल यंग ब्रिगेड ने राष्ट्रीय अध्यक्ष लालजी देसाई एवं सेवादल यंग ब्रिगेड के प्रदेश अध्यक्ष गजानंद तिवारी का आभार व्यक्त किया।

जतिन उदासी को भेंट की भगवान श्री झूलेलाल की अमरकथा

इटारसी, देशबन्धु। सिंधी समाज के गायक जतिन उदासी का इटारसी में झूलणं सेवा समिति के सदस्यों ने स्वागत कर उनको भगवान श्री झूलेलाल की अमरकथा नामक पुस्तक भेंट की। जतिन एक कार्यक्रम में शामिल होने इटारसी आए हुए हैं। उनसे मिलने झूलण सेवा समिति इटारसी के सदस्य पहुंचे और श्री झूलेलाल अमर कथा भेंट की गई। इस अमर कथा में भगवान श्री झूलेलाल जी का पूर्ण वर्णन है।

अयूब खान बने अंजुमन नूरुल इस्लाम कमेटी के अध्यक्ष

इटारसी, देशबन्धु। अंजुमन नूरुल ए इस्लाम कमेटी के अध्यक्ष निसार अहमद सिद्दीकी के निधन के पश्चात कमेटी ने रिक्त पद को भर दिया है। निर्वाचन में उपाध्यक्ष अयूब खान को कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया है। अयूब खान एमए पास हैं एवं एमफिल भी किया है। अयूब खान इसी स्कूल में 3 साल तक प्राचार्य भी रहे। बधाई दी उन्हें।

बाढ़ नियंत्रण कक्ष बना: नर्मदापुरम। अतिवृष्टि की स्थिति में संभावित बाढ़ से प्रभावित होने वाले क्षेत्र में समुचित व्यवस्था के लिए जिला कार्यालय में बाढ़ नियंत्रण कक्ष की स्थापना की गई है, जो की 15 जून 2025 से 15 अक्टूबर 2025 तक निरंतर 24 घंटे कार्यशील रहेगा। कंट्रोल रूम का टेलीफोन नंबर 07574-251292 है।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह का हिल स्टेशन पचमढ़ी आगमन

नर्मदापुरम, देशबन्धु। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह शनिवार को पचमढ़ी आगमन हुआ। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के पचमढ़ी आगमन पर प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने श्री शाह का पचमढी हेलीपैड पर आत्मीय स्वागत किया। इस अवसर पर केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान एवं केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव भी मौजूद थे। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल एवं जगदीश देवड़ा सहित लोक निर्माण मंत्री एवं नर्मदापुरम जिले के प्रभारी मंत्री राकेश सिंह, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एवं नर्मदापुरम विधायक डॉ सीतासरन शर्मा, खजुराहो सांसद वीडी शर्मा, सांसद दर्शन सिंह चौधरी, राज्य सभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया, पिपरिया विधायक ठाकुरदास नागवंशी, सोहागपुर विधायक विजयपाल सिंह, श्रीमती प्रीती पवन शुक्ला सहित अन्य जनप्रतिनिधि गण उपस्थित रहे।

19 से शुरू होंगे मूंग एवं उड़द के पंजीयन

नर्मदापुरम, देशबन्धु। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव द्वारा आज किसानों के हित में मूंग एवं उड़द की खरीदी का निर्णय लिया गया, जिसमें उन्होंने बताया कि 19 जून से मूंग खरीदी की जायेगी। विगत कुछ दिन पहले मूंग खरीदी को लेकर मेरे साथ सिवनी मालवा विधायक प्रेमशंकर वर्मा एवं शाहगंज विधायक रमाकांत भार्गव के साथ मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के कार्यालय पर पहुंच कर ज्ञापन दिया था जिसको मुख्यमंत्री द्वारा सहज स्वीकार करते हुए 19 जून से मूंग खरीदी का आदेश जारी किया है। कांग्रेस पार्टी द्वारा जो किसानों को भ्रमित कर मूंग ना खरीदने के लिए भ्रम फैलाया जा रहा था कांग्रेस हमेशा से ही नौटंकी करती है और किसानों को गुमराह करती है। भाजपा किसानों की संवेदनशील सरकार है और किसान हित में ही कार्य करती है । वर्तमान में किसानो की मूंग फसल कटने के कारण कुछ देरी हो रही थी परंतु अब पूरी फसल कट चुकी हैं तो किसानों की मूंग खरीदने का फैसला भाजपा सरकार के किया है। विजयपाल सिंह विधायक ने किसानो से आग्रह है कि 19जून से अपनी फसल के पंजीयन कराएं।

एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत प्रभारी मंत्री, सांसद एवं विधायकों ने पचमढ़ी में पौधारोपण किया

नर्मदापुरम, देशबन्धु। प्रदेश शासन द्वारा गत दिवस प्रारंभ किये गये एक पेड़ मां के नाम अभियान कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर जोर शोर से पौधरोपण के कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है। इसके अंतर्गत शनिवार को पचमढ़ी प्रवास पर आये मंत्री गणों सांसद गणों एवं विधायक गणों ने पचमढ़ी के छावनी परिषद स्थित अटल वाटिका में पौध रोपण किया। प्रदेश के लोक निर्माण मंत्री एवं नर्मदापुरम जिले के प्रभारी मंत्री राकेश सिंह, स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री राव उदय प्रताप सिंह ने आम, आंवला, जामुन एवं अमरूद के पौधों का रोपण किया एवं सभी व्यक्तियों को अपनी मां के नाम एक पौधा लगाने का संदेश दिया। मंत्री गणों ने कहा कि हर व्यक्ति को अपने जीवन में एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए एवं उसकी पर्याप्त देखभाल भी करनी चाहिए। क्योंकि यही पौधा आगे जाकर हमें शीतल छाया एवं फल देते हैं। मंत्री गणों ने सेल्फी प्वाइंट पर सेल्फी भी ली। एक पेड़ मां के नाम के अभियान के अंतर्गत खजुराहो सांसद वीडी शर्मा, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एवं नर्मदापुरम विधायक डॉ सीतासरन शर्मा, राज्यसभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया, पिपरिया विधायक ठाकुरदास नागवंशी, एवं प्रदेश के अन्य जिलों से आये सांसद एवं विधायक गणों ने अटल पार्क में नीम, आम, अमरूद, बरगद, पीपल एवं जामुन सहित अन्य प्रजातियों के पौधों का रोपण किया और कहा कि एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत लगाये जाने वाले पौधों से प्रकृति एवं पर्यावरण की रक्षा होती है एवं हमें इन पौधों से शुद्ध ऑक्सीजन मिलता है।

एक कदम सुनहरे भविष्य की ओर पालक- शिक्षकों का संयुक्त प्रयास

नर्मदापुरम, देशबन्धु। शांतिनिकेतन मांटेसरी सीनियर सेकेंडरी स्कूल नर्मदापुरम में एक नई पहल एक कदम सुनहरे भविष्य की ओर पालक और शिक्षकों का संयुक्त प्रयास तीन दिवसीय कार्यक्रम 12 ,13 ,एवं 14 जून को आयोजित किया गया ।जिसका प्रमुख उद्देश्य पालक और शिक्षक मिलकर विद्यार्थियों को सही दिशा प्रदान करना है। कार्यक्रम की शुरुआत शाला प्राचार्य डॉ के एम जॉर्ज एवं पालकों ने शाला की चेयरपर्सन श्रीमती ग्रेस जॉर्ज एवं शाला की उप प्रधानाचार्या डॉ हेमलता पुरोहित की उपस्थिति में दीप प्रज्वलित कर किया। इसके पश्चात संगीत शिक्षक अशोक सोनी तथा शाला के शिक्षक शिक्षिकाओं द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया ऋषभ सोनी ने कैसियो पर संगत दी ।इस कार्यक्रम में शाला प्राचार्य डॉ के एम जॉर्ज ने विद्यार्थियों एवं पालकों को संबोधित करते हुए विद्यार्थी जीवन में अनुशासन एवं समय की कीमत तथा कठिन परिश्रम के महत्व पर प्रकाश डाला। शाला की उप प्रधानाचार्य डॉ हेमलता पुरोहित ने विद्यार्थियों के माता-पिता से अनुरोध किया कि व समय-समय पर स्कूल में आकर अपने बच्चों की शिक्षा से संबंधित समस्याओं पर सतत रूप से शिक्षक शिक्षिकाओं से विचार विमर्श करें। माता-पिता को छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखना चाहिए बच्चों को प्लास्टिक के टिफिन बॉक्स में खाना नहीं देना चाहिए, प्रतिदिन प्रतिदिन टाइम टेबल के हिसाब से बच्चों के बैग में कॉपियां एवं पुस्तक रखनी चाहिए ताकि बैग का वजन कम से कम रह सके। बच्चों की टिफिन बॉक्स में प्रतिदिन पौष्टिक भोजन देना चाहिए । शाला की चेयरपर्सन श्रीमती ग्रेस जॉर्ज ने कहा कि हाथ की पांचो उंगलियां एक समान नहीं होती उसी प्रकार सारे विद्यार्थियों की क्षमता एक समान नहीं होती अत: पालकों को अपने बच्चों की तुलना कभी दूसरे बच्चों से नहीं करनी चाहिए। हमेशा अपने बच्चों से प्यार करें और अपने बच्चों को समय दें ताकि आपका बच्चा अपने भविष्य के बारे में खुलकर अपने विचार आपके सामने रख सके। इस कार्यक्रम में एंकरिंग शिक्षिका अर्पिता लक्ष्मण सिल्विया पीटर, अर्पिता लक्ष्मण तथा स्कूल रिपोर्ट सिल्विया पीटर तथा रंजना लक्ष्मण ने प्रस्तुत की। शाला प्राचार्य डॉ के एम जॉर्ज ने आशा जताई कि इस अनोखी पहल के माध्यम से पालक एवं शिक्षक बच्चों के भविष्य को सही दिशा प्रदान कर सकेंगे। विद्यार्थियों के माता-पिता ने इस अनोखी पहल में सकारात्मक भूमिका निभाई और आश्वासन दिया कि शाला प्रशासन द्वारा दिए गए दिशा निर्देशों पालन करेंगे

मानसून में जबलपुर-कोयंबटूर-जबलपुर विशेष ट्रेन का समय बदला, अब नए समय पर आएगी

इटारसी, देशबन्धु। रेल प्रशासन द्वारा यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए पश्चिम मध्य रेल से प्रारंभ/टर्मिनेट होने वाली गाड़ी संख्या 02198/02197 जबलपुर-कोयंबटूर-जबलपुर साप्ताहिक सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन का 19-19 ट्रिप के लिए मानसून के दौरान कोंकण रेलवे के क्षेत्राधिकार में आने वाले स्टेशनों के समय सारिणी में आंशिक परिवर्तन किया है। इस परिवर्तित मानसून समय सारिणी का संचालन दिनांक 13 जून 2025 से प्रत्येक शुक्रवार को जबलपुर से तथा दिनांक 16 जून 2025 से प्रत्येक सोमवार को कोयंबटूर से किया जायेगा।

मानसून के दौरान यह स्पेशल ट्रेन दोनों दिशाओं में जबलपुर, नरसिंहपुर, गाडरवाड़ा, पिपरिया, इटारसी, हरदा, खंडवा, भुसावल, नासिक रोड, पनवेल एवं रोहा स्टेशनों की समय सारिणी यथावत रहेगी यानि कोई बदलाव नहीं रहेगा। लेकिन कोंकण रेलवे के क्षेत्राधिकार में आने वाले दोनों दिशाओं के खेड़, चिपलुन, रत्नागिरी, कणकवली, कुडाल, थीवम, मडगाव, कारवार, कुमटा, मूकाम्बिका रोड, कुन्दापुरा, उडुपी, मुल्की, मंगलुरु, कासरगोड, कन्नूर, वडकरा, कोजीकोड, तिरूर, शोरनूर जंक्शन, पालक्काड जंक्शन एवं कोयंबटूर रेलवे स्टेशनों के समय सारिणी में आंशिक परिवर्तन किया गया है।

उल्लेखनीय है की गाड़ी संख्या 02198 जबलपुर-कोयंबटूर साप्ताहिक सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन 13 जून 2025 से 17 अक्टूबर 2025 तक प्रत्येक शुक्रवार को जबलपुर से रात्रि 23:50 बजे प्रस्थान करेगी। मार्ग के अन्य स्टेशनों से होते हुए तीसरे दिन रविवार को शाम 17:10 बजे कोयंबटूर स्टेशन पहुंचेगी। इसी प्रकार गाड़ी संख्या 02197 कोयंबटूर-जबलपुर साप्ताहिक सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन 16 जून 2025 से 20 अक्टूबर 2025 तक प्रत्येक सोमवार को कोयंबटूर से दोपहर 15:10 बजे प्रस्थान करेगी। मार्ग के अन्य स्टेशनों से होते हुए तीसरे दिन बुधवार को सुबह 08:45 बजे जबलपुर स्टेशन पहुंचेगी।

ओवरब्रिज पर लगा लाइट का खंभा टूटा, युवाओं ने किया रास्ते से अलग

इटारसी, देशबन्धु। बीती रात ओवरब्रिज पर लगाई नयी लाइट का एक खंभा टूटकर रोड पर गिर गया। काफी देर तक यह रोड पर पड़ा रहा और इसकी लाइट जलती रही। यहां से गुजर रहे युवाओं ने पहले तो इसकी सूचना प्रशासन को दी, ओवरब्रिज पर लगे इस खंभे को किसी हार्वेस्टर वाले ने टक्कर मारकर गिराया है।

बता दें कि नगर पालिका ने हाल ही में खेड़ा से ओवरब्रिज तक मध्य मार्ग में लाइट लगाकर रोड को सुंदर बनाने के साथ ही यहां प्रकाश की व्यवस्था की है। अज्ञात ने इस खंभे को टक्कर मारकर तोड़ा है। इस मामले में नगर पालिका अध्यक्ष पंकज चौरे ने बताया कि उन्होंने संबंधित विभाग को कार्रवाई के निर्देश दिये हैं।

बैडमिंटन प्रतियोगिता प्रारंभ

नर्मदापुरम, देशबन्धु। ग्यारहवीं स्कूल स्टेट एजुकेशन डिपार्टमेंटल चैंपियनशिप शुभारंभ र डॉल्फिन स्पोर्ट एकेडमी बुधवाडा में किया गया। इसमें मध्य प्रदेश के 10 संभागों के महिला एवं पुरुष वर्ग की टीम में हिस्सा ले रही हैं ।इस प्रतियोगिता 50 प्लस महिला पुरुष और अंडर 50 महिला पुरुष की टीम सम्मिलित हो रहे हैं । कार्यक्रम का शुभारंभ पंडित अरुण शर्मा, ज्वाइन डायरेक्टर भावना दुबे,आलोक राजपूत, संदीपन निखर,सिद्धार्थ चौहान , चेतन आकरे यशवंत आकरे अभिषेक, संदीप शुक्ला , डीपी आई से नलनी सिंह, गजेंद्र सुराजिया, संदीप सिंह, आशीष पटेल,आरके सैनी, राजेंद्र नामदेव,अरविंद शर्मा, अर्पण दुबे राकेश सराठे और जिला शिक्षा विभाग की संपूर्ण टीम ने किया। प्रतियोगिता में जबलपुर शहडोल, उज्जैन, भोपाल सागर, नर्मदापुरम, इंदौर, रीवा , ग्वालियर संभाग की टीम आई।

कार की टक्कर से स्कूटी सवार की हुई मौत

इटारसी, देशबन्धु। आज सुबह करीब साढ़े 11 बजे एक बेकाबू कार सवार ने स्कूटी सवार को टक्कर मारकर भाग गया। घटना में स्कूटी सवार गंभीर रूप से घायल हो गया। उसके सिर में गंभीर चोट आने से ज्यादा खून बह गया। कुछ लोगों की मदद से घायल को सिविल अस्पताल भेजा गया, जहां उसकी मौत हो गयी।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार कार वलेनो एमपी 04, जेडटी 1478 नंबर की सफेद कलर की है। मिली जानकारी के अनुसार मृतक का नाम सुरेन्द्र मालवीय, उम्र 55 वर्ष, निवासी मालवीयगंज है, जो कारपेंटर का काम करता था। घटना के वक्त वह अपनी स्कूटी से दशमेश कालोनी में काम पर ही जा रहा था। मृतक के परिजन पुलिस में कार चालक के खिलाफ शिकायत करा रहे हैं, इस रोड पर पूर्व में भी ऐसे हादसे हो चुके हैं, लेकिन यहां रोड किनारे पार्क किये वाहनों और बेकाबू वाहन चालकों पर काबू करने में पुलिस और प्रशासन रुचि नहीं ले रहे हैं।

पूर्वी गुप्ता ने नीट में प्राप्त की बड़ी सफलता, मिली 23200 वीं रैंक

इटारसी, देशबन्धु। नगर की छात्रा पूर्वी गुप्ता ने नीट-2025 की राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा में 23,200 वी रैंक हासिल कर एक बड़ी उपलब्धि अपने नाम की है। पूर्वी ने यह सफलता सीधे 12 वीं कक्षा के साथ ही प्राप्त की है। पूर्वी ने हाल ही में 12वीं की परीक्षा में 94 प्रतिशत अंक अर्जित किए, तथा विज्ञान संकाय में विद्यालय में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर अकादमिक क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। पूर्वी गुप्ता, वात्सल्य हॉस्पिटल इटारसी के संचालक एवं वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. रविंद्र गुप्ता और डॉ. पूजा गुप्ता की सुपुत्री हैं। उनकी यह सफलता केवल परिवार ही नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए प्रेरणास्पद है। पूर्वी ने अपनी सफलता का श्रेय ईश्वर की कृपा, माता-पिता के सहयोग, शिक्षकों के मार्गदर्शन और अपनी कड़ी मेहनत को दिया है। उनका सपना एक कुशल और संवेदनशील चिकित्सक बनकर समाज की सेवा करना है। इस उपलब्धि पर वात्सल्य हॉस्पिटल परिवार, शिक्षकों, मित्रों एवं नगरवासियों ने पूर्वी के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभेच्छाएं दी हैं।

दि इटारसी ग्रेन मर्चेन्ट एसोसिएशन ने मंडी सचिव के संभागीय अध्यक्ष का किया स्वागत, दी बधाई

इटारसी, देशबन्धु। संयुक्त संघर्ष मोर्चा मध्यप्रदेश मंडी बोर्ड भोपाल के संभागीय अध्यक्ष पद पर अरविन्द कुमार परिहार सचिव मंडी इटारसी को नियुक्त किया है। इस अवसर पर मंडी कर्मचारी संघ इटारसी एवं व्यापारी संघ के पदाधिकारी एवं व्यापारियों ने आज कृषि उपज मंडी इटारसी कार्यालय में दि इटारसी ग्रेन एण्ड सीड्स मर्चेन्ट एसोसियेशन के पदाधिकारियों ने भव्य स्वागत किया। कर्मचारी एवं व्यापारियों ने दुपट्टा, गुलदस्ता एवं पुष्पहार से स्वागत किया एवं मिठाई खिलाई।

श्री परिहार ने सभी व्यापारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त करते हुये भरोसा दिलाया कि नियम अंतर्गत सभी कठिनाईयों के संबंध में हमेशा उनके साथ खड़े रहकर समस्याओं का निराकरण कराया जायेगा।

श्री परिहार एवं मंडी कर्मचारी संघ इटारसी द्वारा संयुक्त संघर्ष मोर्चा मध्यप्रदेश मंडी बोर्ड भोपाल के प्रातीय संयोजक बीबी फोजदार एवं मोर्चा में शामिल प्रांताध्यक्ष अंगिरा पाण्डे, रामवीर किरार, नैनसिंह सोलंकी, वीरेन्द्र कुमार नरवरिया, संतोष सिंह दीक्षित सहित का मंडी और खलिहान के संपादक बीएस खान का आभार व्यक्त किया।

स्वागत कार्यक्रम के दौरान विधायक प्रतिनिधि देवेन्द्र पटेल, नगर के एसोशियेसन अध्यक्ष राजेन्द्र अग्रवाल, प्रतिष्ठित व्यापारी रमेश चाण्डक, अनिल राठी, प्रदीप मालपानी, संतोष अक्कू ओसवाल, प्रदीप तोतला, महेन्द्र शर्मा, प्रदीप गुड्डू अग्रवाल, एवं कर्मचारी रामनाथ इवने, मुकेश पाराशर, प्रेमनारायण उज्जैनिया, राजेश इंगले, राजेन्द्र बर्डे, कैलाश चावरे, तरूण चौरे आदि उपस्थित रहे।

In The Court Of II Civil Judge Class-II, District Court, Betul
Presiding Officer: श्रीमती शिखा पिसल नीमा
(आदेश 5 नियम 20 व्यवहार प्रक्रिया संहिता 1908 के अन्तर्गत प्रकाशन हेतु)
(RCSA/0000106/2024)

जतिन चिल्हाटे..... ..वादी
Vs
गुलाबराव चिल्हाटे..... प्रतिवादी
Process Id/4202/2025
पेशी दिनांक:- 20/06/2025

प्रेषिती-

(1) दीपिका पिता शेषराव पता- निवासी मकान नं. 08 रातीबड रोड कलखेडा नीलबड भोपाल तहसील व जिला भोपाल मध्यप्रदेश (2) प्रवीण पिता शेषराव उम्र 30 वर्ष पता- निवासी मकान नं. 08 रातीबड रोड कलखेडा नीलबड भोपाल तहसील व जिला भोपाल मध्यप्रदेश (3) योगिता पिता शेषराव पता- निवासी मकान नं. 08 रातीबड रोड कलखेडा नीलबड भोपाल तहसील व जिला भोपाल मध्यप्रदेश (4) शेषराव पिता बाजीराव पता- निवासी मकान नं. 08 रातीबड रोड कलखेडा नीलबड भोपाल तहसील व जिला भोपाल मध्यप्रदेश (5) संदीप पिता शेषराव उम्र 34 वर्ष पता- निवासी मकान नं. 08 रातीबड रोड कलखेडा नीलबड भोपाल तहसील व जिला भोपाल मध्यप्रदेश

यह कि प्रार्थी जतिन चिल्हाटे ने आपके विरूद्ध सिविल सूट क्लास ए के लिए वाद संस्थित किया है, आपको इस न्यायालय में सूचना के प्रकाशन के 30 दिवस के भीतर वाद का उत्तर देने के लिये उपसंजात / हाजिर होने के लिये सम्मन किया जाता है, आप न्यायालय में स्वयं या किसी ऐसे प्लीडर (अधिवक्ता) द्वारा उपसंजात हो सकते है, जिसे सम्यक अनुदेश दिये गये हो और जो इस वाद में संबंधित सभी सारवान कथनों का उत्तर दे सके। आपको यह निर्देश भी दिया जाता है कि उस दिन अपनी प्रतिरक्षा का लिखित कथन प्रस्तुत करें और उस दिन ऐसे सब दस्तावेज जो आपके कब्जे या शक्ति में है पेश करें जिन पर आपका प्रतिरक्षा या मूजराई का दावा या प्रतिदावा आधारित हो, और यदि आप अन्य किसी दस्तावेज पर चाहे वह आपके कब्जे या शक्ति में हो अपनी प्रतिरक्षा या मुजरा के दावे या प्रतिदावे के समर्थन में साक्ष्य के रूप में निर्भर करते है तो ऐसी सभी दस्तावेज की लिखित कथन के साथ उपलब्ध की जाने वाली सूची में प्रविष्टि करें।

आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप उपर बताई गई अवधि में इस न्यायालय में उपस्थित नहीं होंगे तो वाद की एक पक्षीय सुनवाई कर उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जायेगा। साथ ही यह भी सूचित किया जाता है कि यदि आप निराकरण मध्यस्थ के माध्यम से करने के इच्छुक हैं तो पीठासीन अधिकारी को अवगत करावें। यह आज तारीख 27 May 2025 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगा कर दिया गया है।

श्रीमती शिखा विशाल नीमा
द्वितीय व्यवहार न्यायाधीश कनिष्ठ खण्ड
बैतूल, जिला बैतूल (म.प्र.)

सील

कृपया ध्यान दे:- 1. यदि किसी कारणवश उक्त तिथि को न्यायालय अवकाश पर रहेगा तो अगामी कार्य दिवस पर यह प्रकरण सुनवाई में लिया जायेगा।

साहित्य

कहानी

अज़ीमुश्शान

सैलाब

■ उपेन्द्रनाथ अश्क

सर ग़रूर बुलंद कर के साहिल ने समुंदर से कहा, मेरी शान ही से तेरी शान है।

समुंदर ने पुर-शोर क़हक़हा लगाया और किनारे को बहा दिया।

पण्डित राधे शाम एक रुजअत-पसंद अख़बार के एडिटर और मालिक थे। उनका ज़मीर इस पज़मुर्दा चिंगारी की तरह था, जो ख़ुशामद और चापलूसी की मनों राख के नीचे दब गई हो। क़ौमी तहारीक से वो दूर भागते थे। तरक़्क़ी-पसंद अंजुमनों की कमज़ोरियों को बे-नक़ाब कर के उन्हें कोसना, उनका रोज़ का मामूल था और उनकी इस ख़िदमत के इवज़ उन्हें सरकारी इश्तिहारात मिलते थे। अगरचे उनके अख़बार की इशाअत चंदाँ हौसला अफ़्ज़ा न थी।

उस वक़्त जब सूबा भर के अख़बारात क़ौमी तहरीक की हिमायत कर रहे थे। नौजवानों की क़ुर्बानियों पर उनकी हौसला अफ़ज़ाई कर रहे थे। नमक के क़ानून को तोड़ने की तलक़ीन करते हुए उसके पर्दे में वो देर से सोई हुई क़ौमी तहरीक की बेदारी के ख़्वाब देख रहे थे। उनके दिन रात तहरीक की मुख़ालिफ़त करने में सर्फ़ हो रहे थे।

वो तहरीक के ख़िलाफ़ लिखते थे। उसके मुहर्रिकों का मज़ाक़ उड़ाते थे और कहते थे, 'क़ौम की ताक़त और वक़्त एक निहायत फ़ुज़ूल और बेमानी तहरीक के लिए सर्फ़ किए जा रहे हैं। मुल्क में बीसियों क़िस्म के टैक्स वसूल किए जाते हैं। नमक का टैक्स कोई बड़ा भारी टैक्स नहीं। अगर उसे मंसूख़ भी कर दिया गया तो इससे कोई ख़ास फ़ायदा नहीं पहुँचेगा। साठ हज़ार! सिर्फ़ साठ हज़ार, हालाँकि लाखों रुपया ऐश-ओ-इशरत में सर्फ़ हो रहा है।'

लेकिन जब उन्हें कोई बताता कि नमक के टैक्स का बार मुफ़लिस लोगों पर ज़्यादा पड़ता है और ग़रीबों के लिए साठ हज़ार रुपया साठ लाख के बराबर है तो वो एक फीकी हंसी हंसकर बे-ज़ारी से सर हिला देते।

वो सिर्फ़ नमक की तहरीक के ख़िलाफ़ हों, ये बात न थी। वो हर तरक़्क़ी पसंद तहरीक के ख़िलाफ़ थे। वो उन क़दामत पसंद लोगों में से थे जो ब्रिटिश राज को हिन्दोस्तान के लिए रहमत तसव्वुर करते हैं और सोचा करते हैं कि अगर ये राज न रहा तो हिन्दोस्तान में फिर अबतरी का दौर दौरा हो जाएगा।

सूबा भर के अख़बार और रिसाले उनका मज़ाक़ उड़ाया करते। अपने ग़पशप के कालमों में उस पर फब्तियां कसा करते। अंग्रेज़ी दानों में वो यस मैन और उर्दू वालों में 'जी हुज़ूरिये' के नाम से मशहूर थे। लेकिन उन्हें इस बात की शर्म न थी। बल्कि सरकार की ख़ुशनुदी हासिल करने में, इश्तिहारात लेने में, उनके हमअसरों के दिए हुए यही ख़ताबात उनके काम आते थे और सितम ज़रीफ़ी ये कि उनके अख़बार का नाम 'रहबर' था।

कांग्रेस की तरफ़ से शहर में नमक के क़ानून को तोड़ने का ऐलान कर दिया गया था। एक

जलूस की तैयारियां हो रही थीं। प्रोग्राम मुरत्तिब हो चुका था। इतवार का दिन था और अख़बारों में चूँकि छुट्टी थी। इस लिए हर अख़बार ने अपने ज़मीमे निकालने का इंतिज़ाम कर रखा था और लोग बड़ी बेताबी से उनका इंतिज़ार कर रहे थे। ताकि सही प्रोग्राम से रुशनास हो सकें। कमला भी घर के काम काज से फ़ारिग़ हो कर अख़बार की मुंतज़िर थी।

वो पण्डित राधे शाम की आज़ाद ख़याल बीवी थी। वो उसे हमेशा 'रहबर' ही पढ़ने के लिए देते थे। वो दफ़्तर में चाहे कितने अख़बार मँगाएं। लेकिन घर उनमें से एक को भी न जाने देते थे और कमला हमेशा चाहा करती थी कि वो तस्वीर का दूसरा रुख भी देखे, अपनी सहेलियों से जो वो सुनती थी, अगरचे उसका एक लफ़्ज़ भी अपने ख़ावंद के सामने ज़बान से न निकलने देती थी। लेकिन वो चाहती थी कि उसके ख़ावंद ये सब चापलूसी छोड़ दें। ख़ुशामद की सारी से ख़ुद्दारी की आधी भली, लेकिन अपने ख़ावंद के मुँह पर उसने कभी कुछ भी न कहा था।

चपरासी आकर 'रहबर' का ज़मीमा फेंक गया। इस दो वर्क़ के अख़बार में भी उन्होंने इस तहरीक के ख़िलाफ़ एक छोटा सा लीड लिख रखा था। रंज और ग़ुस्सा के मारे कमला ने अख़बार के पुर्ज़े पुर्ज़े कर दिए और उन्हें कोने में फेंक कर कोच में धँस गई। तभी उसके ख़ावंद, 'रहबर' के क़दामत पसंद एडिटर श्री राधे शाम कमरे में दाख़िल हुए। फटे हुए अख़बार के पुर्ज़ों को देखकर उन्होंने ज़रा तीखे लहजे में कहा, 'ये क्या बेहूदगी है?'

कमला चप कोच पर बैठी थी।

उन्होंने फिर गरज कर कहा, 'ये क्या बेहूदगी है।'

कमला अब के भी चुप रही, उसने सिर्फ़ एक-बार अपने ख़ावंद की तरफ़ आँख उठा कर देखा।

बरस ही पड़ने को तैयार बादल की तरह उसकी आँखें भरी हुई थीं।

राधे शाम आहिस्ता से उसके पास कोच पर बैठ गए। उन्होंने कहा, 'देख कमला, मैं ये सब बर्दाश्त नहीं कर सकता। मुझे ये सब झगड़ा बिल्कुल नापसंद है, बाहर ही मेरी कम मुख़ालिफ़त नहीं होती जो घर में इस की ज़रूरत बाक़ी रह जाये।'

'आप मुख़ालिफ़त की वजह क्यों पैदा करते हैं।'

पण्डित राधे शाम ने फिर जोश से कहा, 'मैं हर फ़ुज़ूल तहरीक की तक़लीद नहीं कर सकता। मैं न आम लोगों की तरह दिमाग़ से आरी हूँ कि जो कोई कहे उसे मान कर अंधा धुंद उसकी तक़लीद करूँ, न में बेकार हूँ कि कुछ करते रहने के लिए हर तहरीक का फ़ायदा उठाने की कोशिश करूँ। और न मुझे शोहरत की तमन्ना है कि अवाम को ग़लत रास्ते पर लगा कर अपनी लीडरी क़ायम रखूं।'

कमला ने चीख़ कर कहा, 'आप देश का कुछ फ़ायदा नहीं कर सकते तो देश भगतों को गालियां तो न दें। अपनी ख़ुदग़रज़ी को छुपाने के लिए कोई दूसरा बहाना आपके पास नहीं क्या?'

और दामन में मुँह छुपा कर वो रोने लगी।

राधे शाम हँसे, 'ख़ुदग़रज़ी!' ज़ेर-ए-लब उन्होंने कहा और फिर बोले, 'सादा-लौह अवाम को छोड़कर कौन ग़रज़मंद नहीं। सब अपनी अपनी ग़रज़ के लिए तहरीकों का फ़ायदा उठाते हैं। किसी को इज़्ज़त की तमन्ना है, किसी को शोहरत की। किसी को काम की ख़्वाहिश है किसी को नाम की, मुझे उनमें से किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं, फिर मैं क्यों मुफ़्त में अवाम को धोका दूं, जो मुनासिब समझता हूँ लिखता हूँ।'

कमला अब कुछ भी न कहना चाहती थी लेकिन रुक न सकी। उसने कहा, 'यूं क्यों नहीं कहते कि ऐश-ओ-आराम आपको इतना प्यारा है। ये बड़े बड़े कमरे, ये कुर्सियाँ-मेज़, ये काउच, ये क़ीमती कपड़े और ये सब ऐश-ओ-आराम के सामान आपको इतने अज़ीज़ हैं कि इसकी ख़ातिर आप अपने ज़मीर को फ़रोख़्त कर सकते हैं।'

'तो क्या मैं अकेला ही इन सबको इस्तिमाल करता हूँ, क्या तुम्हारे आराम के लिए मैं ये सब नहीं करता।' उन्होंने गरज कर कहा।

'मुझे इन सबकी कोई ज़रूरत नहीं।' और वो उठकर अंदर कमरे में चली गई। कुछ लम्हा तक मब्हूत से राधे शाम वहीं बैठे रहे। फिर वो हँसे और ज़ेर-ए-लब उन्होंने कहा, 'बेवक़ूफ़! और फिर...औरत!' और बेज़ारी से सर हिला कर वो उठे और बाहर चले गए।

'क़ानून नमक को...तोड़ दो!'

'क़ानून नमक को...तोड़ दो!'

'क़ानून नमक को...तोड़दो!'

और फिर, 'लंगोटी वाले की जय और बंदे मातरम।'

पण्डित राधे शाम बाज़ार के एक कोने में खड़े जलूस देख रहे थे। जैसे-जैसे जलूस गुज़रता जाता लोग दूकानों से उठकर, काम छोड़कर उसके साथ शामिल होते जाते। मर्दों-औरतों का एक बेपनाह हुजूम था। एक समुंदर था कि बहता बहाता चला जा रहा था।

सबसे आगे 'बाल भारत सभा' के लड़के थे। मासूमियत के नन्हे अवतार, छोटे छोटे झंडे लिये। 'क़ानून नमक...तोड़ दो।' के नारे लगाते जा रहे थे। उनके चेहरे जोश की वजह से सुर्ख़ हो रहे थे और उन पर एक जलाल बरस रहा था। थकावट की उन्हें परवा न थी। धूल की या धूप की उन्हें फ़िक्र न थी। बस एक ही धुन थी कि जब उनका 'नायक' ऊंची आवाज़ में कहे, 'क़ानून नमक' तो वो उछल कर झंडियां हिला कर उस से भी ऊंची आवाज़ में नारा लगाऐं, 'तोड़ दो।'

वहीं खड़े खड़े राधे शाम ने महसूस किया। जैसे उनका भी दिल एक मासूम बच्चे के क़ालिब में चला गया है और वो उन बच्चों के साथ इस अफ़्सानी समुंदर में लहरों सा बहा जा रहा है, तभी वो चौंक पड़े।

एक टोली के आगे आगे एक शख़्स बेतरह उछल रहा था। चेहरा जोश से सुर्ख़ था। सर के बालों की, क़मीज़ के गिरेबान या आस्तीनों की, उसे कुछ भी चिंता न थी। जुनूनियों की तरह वो उछल कर और बार-बार वो सामने ख़ला में इशारा कर के कहता था, 'ओह की आया?' और सारी की सारी टोली चिल्ला उठती। 'इन्क़िलाब' और ये शख़्स शहर का मशहूर वकील था। एम.ए, एल.एलबी.।

पंडित जी के सारे जिस्म में सनसनी दौड़ गई और उनके रौंगटे खड़े हो गए और वो दूर तक उसे देखते रहे। उछल उछल कर यही नारा लगाते देखते रहे।

जब वो चौंके तो फ़िज़ा में लेडी वालंटियरों का गीत गूंज रहा था और बाज़ारों की छतों पर बैठी हुई औरतें उनकी आवाज़ के साथ आवाज़ मिला कर गाने लगी थीं:

'असीं चीन लवांगे
क़ानून नमक नूं तोड़ के। असीं चीन...'

पंडित जी की आँखें खुली की खुली रह गईं। सबसे आगे आगे, हाथ में क़ौमी झंडा उठाए कमला, उनकी अपनी बीवी गा रही थी। 'असीं चीन लवांगे' और सब उसकी आवाज़ में आवाज़ मिला कर गा रही थीं, 'क़ानून नमक नूं तोड़ के।'

ख़वातीन का जुलूस गुज़र गया। उसके बाद शहर के सरकरदा लीडर नमक बनाने का सामान उठाए चले आ रहे थे। छतों से और दूकानों से उन पर फूलों की बारिश हो रही थी। उनके चेहरे मामूल से दुगुने मालूम होते थे।

और उनके बाद हज़ारों का हुजूम जैसे बहता हुआ चला जा रहा था। पंडित जी अपनी जगह से उतरे और हुजूम में शामिल हो गए।

तभी किसी ने ज़ोर से नारा लगाया,

'क़ानून नमक को'

सब बोले

'तोड़ दो।'

हुजूम की इस आवाज़ में पण्डित राधे शाम की आवाज़ भी शामिल थी लेकिन ये आवाज़ मुख़्तलिफ़ नहीं थी। अपने भाईयों की आवाज़ से हम-आहंग...एक आवाज़।

ग़ज़ल

■ शेख़ इब्राहीम ज़ौक़

लाई हयात आए क़ज़ा ले चली चले
अपनी ख़ुशी न आए न अपनी ख़ुशी चले

हो उम्र-ए-ख़िज़्र भी तो हो मालूम वक़्त-ए-मर्ग
हम क्या रहे यहाँ अभी आए अभी चले

हम से भी इस बिसात पे कम होंगे बद-क़िमार
जो चाल हम चले सो निहायत बुरी चले

बेहतर तो है यही कि न दुनिया से दिल लगे
पर क्या करें जो काम न बे-दिल-लगी चले

लैला का नाक़ा दश्त में तासीर-ए-इश्क़ से
सुन कर फ़ुग़ान-ए-क़ैस बजा-ए-हुदी चले

नाज़ाँ न हो ख़िरद पे जो होना है हो वही
दानिश तिरी न कुछ मिरी दानिश-वरी चले

दुनिया ने किस का राह-ए-फ़ना में दिया है साथ
तुम भी चले चलो यूँही जब तक चली चले

जाते हवा-ए-शौक़ में हैं इस चमन से 'ज़ौक़'
अपनी बला से बाद-ए-सबा अब कभी चले

अब तो घबरा के ये कहते हैं कि मर जाएँगे
मर के भी चैन न पाया तो किधर जाएँगे

तुम ने ठहराई अगर ग़ैर के घर जाने की
तो इरादे यहाँ कुछ और ठहर जाएँगे

ख़ाली ऐ चारागरो होंगे बहुत मरहम-दाँ
पर मिरे ज़ख़्म नहीं ऐसे कि भर जाएँगे

पहुँचेंगे रहगुज़र-ए-यार तलक क्यूँ कर हम
पहले जब तक न दो आलम से गुज़र जाएँगे

शोला-ए-आह को बिजली की तरह चमकाऊँ
पर मुझे डर है कि वो देख के डर जाएँगे

हम नहीं वो जो करें ख़ून का दावा तुझ पर
बल्कि पूछेगा ख़ुदा भी तो मुकर जाएँगे

आग दोज़ख़ की भी हो जाएगी पानी पानी
जब ये आसी अरक़-ए-शर्म से तर जाएँगे

नहीं पाएगा निशाँ कोई हमारा हरगिज़
हम जहाँ से रविश-ए-तीर-ए-नज़र जाएँगे

सामने चश्म-ए-गुहर-बार के कह दो दरिया
चढ़ के गर आए तो नज़रों से उतर जाएँगे

लाए जो मस्त हैं तुर्बत पे गुलाबी आँखें
और अगर कुछ नहीं दो फूल तो धर जाएँगे

रुख़-ए-रौशन से नक़ाब अपने उलट देखो तुम
मेहर-ओ-मह नज़रों से यारों की उतर जाएँगे

हम भी देखेंगे कोई अहल-ए-नज़र है कि नहीं
याँ से जब हम रविश-ए-तीर-ए-नज़र जाएँगे

'ज़ौक़' जो मदरसे के बिगड़े हुए हैं मुल्ला
उन को मय-ख़ाने में ले आओ सँवर जाएँगे

देशभक्ति का रास्ता पेट से होकर जाता है

■ संजय चावला

देशभक्ति के इस नवयुग में सब कुछ बदल रहा है — नारे, नज़ारे, यहाँ तक कि नाश्ते भी। अब केवल दिल से नहीं, देशभक्ति का रास्ता सीधा पेट से होकर जाता है। जयपुर के त्यौहार स्वीट्स के मालिक जैन साहब को ही देख लीजिए। हाल ही में हुए ओपरेशन सिन्दूर के बाद उनमें ऐसी देशभक्त भावना जागी कि उन्होंने अपनी दुकान की प्रसिद्ध मिठाइयों — मोतीपाक और मैसूरपाक — के नामों से 'पाक' शब्द को निकाल फेंका। अब वे गर्व से मोतीश्री और मैसूरश्री नाम से बिक रही हैं। मालिक जैन साहब का मक़सद निस्संदेह देशी घी की तरह शुद्ध है। लेकिन अफ़सोस, देशभक्ति की आँधी में वे भूल गए कि शब्दों के भी अर्थ होते हैं। अब अगर किसी शब्द की ध्वनि किसी दूसरे देश से मिलती-जुलती हो तो क्या हम उसे देशनिकाला दे देंगे? मैसूरपाक का 'पाक' कोई सीमा पार की साज़िश नहीं है। यह एक कन्नड़ शब्द है — जिसका अर्थ होता है 'पकाने की प्रक्रिया'। यह तो उस चाशनी का भी नाम है जो धीरे-धीरे उबलती है और मिठास बिखेरती है — जैसे कभी भारत की संस्कृति बिखरा करती थी। 19वीं सदी में मैसूर की शाही रसोई में काकासुर नामक बावर्ची ने इसका आविष्कार किया था। अब स्वर्ग में बैठा वह बेचारा सोच रहा होगा — 'मैंने मिठाई बनाई थी या राष्ट्रद्रोह?'

बहरहाल, नाम बदलने का यह राष्ट्रव्यापी अभियान नया नहीं है। इतिहास गवाह है कि जब भावनाएँ उबलती हैं, तो सबसे पहले कढ़ाई में पकते हैं व्यंजन। अमेरिका में 9/11 के बाद एक सांसद ने फ्रेंच फ्राईस का नाम बदलकर फ्रीडम फ्राईस रख दिया था। वजह? फ्रांस ने इराक युद्ध का समर्थन नहीं किया था। अब ये कोई नहीं बताता कि फ्रेंच फ्राइज़ दरअसल बेल्जियम की उपज थीं — और उन्हें 'फ्रेंच' तो अमेरिकियों ने ही कहा था। यही हाल कैनाडा में हुआ, जब ट्रम्प ने वहाँ के साथ व्यापार युद्ध छेड़ दिया। कुछ कैफे वालों ने अमेरिकानो कॉफी को कनाड़ानो कर दिया — भले ही वो कॉफी बीन्स न अमेरिका से आई थी, न कैनाडा से। तुर्की और ग्रीस ने भी 1974 के युद्ध में इसी तरह से मोर्चा खोला — टर्किश कॉफ़ी ग्रीस में ग्रीक कॉफ़ी बन गई। यह सब दर्शाता है कि जब तोप न चले, तो चम्मच चला दीजिए।

भारत में तो अब हर चाय, हर चटनी, हर चाशनी पर राष्ट्रध्वज लहराने की होड़ लगी है। हैदराबाद की कराची बेकरी को तो यह सफाई देनी पड़ी कि 'हमारा नाम चाहे जो हो, हमारे बिस्कुट पूरी तरह भारतीय हैं।' ये अलग बात है कि उनके मालिक विभाजन के बाद भारत आए थे। और अब सवाल उठता है — क्या हम पाकशास्त्र को भी श्रीशास्त्र कहेंगे? क्या पाकशाला को श्रीशाला? और पाकस्थली — यानी हमारा पेट — उसका क्या होगा? उसे भी किसी सरकारी योजना का नाम देना पड़ेगा क्या? पेटश्री योजना - 'जहाँ भी भोजन पचे, वहीं तिरंगा लहराए!'

इस देश में भोजन कभी केवल भोजन नहीं रहा। यह एक सामाजिक घोषणा रहा है — कि आप कौन हैं, किस ओर हैं, और किस थाली में खा रहे हैं। खाने पर प्रतिबंध, भोजन के नामों का संकीर्णकरण — यह सब केवल पेट की बात नहीं, पहचान की लड़ाई बन चुकी है।

कितनी विडम्बना है कि हम भूल रहे हैं — भोजन वह कला है जो जोड़ती है, बाँटती नहीं। कोई मिठाई किसी मुल्क की नहीं होती — वो उस स्वाद की होती है जिसे साझा किया जा सके। मैसूरपाक में न पाकिस्तान है, न कोई राजनीतिक षड्यंत्र — उसमें है तो बस बेसन, घी, और वो मीठा भाव जो हर त्योहार में बँटता है। मगर इस देश में आजकल भाव से ज़्यादा ब्रांड चलता है। शायद इसी लिए अब मिठाई भी प्रधानमंत्री श्री मिष्ठान योजना के तहत आएगी। और स्वाद से ज़्यादा मायने रखेगा नाम। इसलिए अगली बार जब आप किसी मिठाई का टुकड़ा मुँह में रखें, तो सोचिए — यह आपके स्वाद का सवाल नहीं, राष्ट्रभक्ति का इम्तिहान है। क्योंकि भाई साहब, इस दौर में 'पेट' नहीं, 'पाक' ज़्यादा संवेदनशील है।

कविता

अंडमान

■ शशांक शेखर

आदमी कितना निरर्थक जीव है
और आदमी के भी तो यहाँ
पितामह पुरुष हैं
इतने पुराने मानव , ये आदिवासी
क्या है इसने पुराना हमारा पास ?
जिसे संजो लिया जाए
कौन सा ग्रंथ कौन से ईश्वर हमारे
इनसे पुराने हैं ?
मिस्र के पिरामिड भी तो धूप सेक रहे
क्या इन आदिवासियों के
धूप से सिके हुए बदन से पुराने हैं ?

हम चले समुद्र के किनारे रोज़
और चल चलकर थके भी
फिर यहीं लेटकर आराम फ़रमा भी हुए
सच समुद्र के पास दवा है थकाने
और राहत देने की भी
मैं जब अपने समुद्री जहाज़ से
झाँककर बाहर देखता
उस वक्त जब हम टापुओं की सैर पर थे
मुझे लगता आख़िर हम कौनसे
कर्तव्य-पथ पर हैं
हम किस राह के पथिक हैं और क्या ही
योगदान है हमारा
लेश मात्र भी इनके जीवन में
मसलन हम ना रहें तो
इन टापुओं के जीवन पर क्या असर होगा

एक हरी चादर ओढ़े ये टापू
बड़ी गंभीर मुद्रा में बैठे रहते हैं
इंतज़ार में कि पानी पर सरकता
कोई जहाज़
उनसे आलिंगन करे ,
पर हम हर जगह रुकते नहीं
हम इनके बगल से
आहिस्ता से निकल जाते हैं
ना हम उनके ना वो हमारे नाम जानते हैं
मुझे याद है
जब मैंने देखा समुद्र की विराटता
और जिसका ना ओर नज़र आया
था ना छोर
कुछ था मेरे भीतर
जो पिघलना शुरू हुआ था
मैं
बहुत छोटा दुनियावी आदमी ही तो हूँ

और ये समुद्र देवता है पुराणों का
और पुराणों से भी पुरानी
सभ्यता रच बस रही है यहाँ
कौन किससे पुराना है?
क्या पुरातन होना ही
सार्थकता का पैमाना है?
मैंने देखा जहाज़ में बैठे हुए समुद्र में
कहानियाँ, सभ्यता ,पुराण वेद,
देवता, मानव , जीव जंतु
सब विलीन हो रहे थे
दूर साहिल पर नज़र पड़ी अचानक
तो सूरज शाम के आगोश में
डूबने की तैयारी कर रहा था ।

■ (पेशे से सुप्रीम कोर्ट में एडवोकेट ऑन रिकॉर्ड।)

लघुकथा

इंजेक्शन

■ अरुण अर्णव खरे

रघु फिर साप्ताहिक हाट से निराश लौटा था। उसे जितनी उम्मीद थी, उससे बहुत कम दाम में सब्जियां बिकी थीं। हाट से लौटकर चुपचाप चारपाई पर लेट गया। फिर पत्नी से बोला- 'बड़ी मुश्किल से लागत निकल रही है। मेहनत का कोई मोल ही नहीं जैसे। 'ननकू को तो बहुत फायदा हो रहा है, कल ही उसने शरबती को पायलें लाकर दी हैं', परबतिया ने उत्सुकता से रघु की ओर देखा।

'ननकू शहर से कोई इंजेक्शन लाया है जिसे लगाने से सब्जियों का वजन ढाई-तीन गुना बढ़ जाता है, इसलिए उसे मुनाफा हो रहा है।'

'आप भी ननकू से पूछकर दवा ले आओ बाजार सेज नहीं तो शहर जाके ठोकरें खानी पड़ेंगी', चिंतातुर परबतिया बोली।

पास बैठा पांच साल का बच्चा पंचम अचानक बोल पड़ा- 'बापू, माई सही बोल रही है, शहर से दो इंजेक्शन ले आना। एक

सब्जी को लगाना और दूसरा मुझे, ताकि मैं जल्दी से बड़ा होकर आपका काम कर सकूं।'

खेल जगत

यह सबसे खास दिनों में से एक हैः एडेन मार्करम

लंदन। दक्षिण अफ्रीका ने लॉर्ड्स में ऑस्ट्रेलिया पर पांच विकेट से जीत दर्ज करके 2025 आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप जीतने के साथ सीनियर टूर्नामेंटों में 27 साल से चले आ रहे नाकआउट जीत के इन्तजार को समाप्त किया, सलामी बल्लेबाज एडेन मार्करम ने कहा कि मैच जीतने वाली पारी के जरिए गदा जीतना उनके लिए सबसे खास दिनों में से एक बन गया है। पहली पारी में शून्य पर आउट होने के बाद दूसरी पारी में मार्करम की शानदार 136 रनों की पारी की बदौलत दक्षिण अफ्रीका ने चौथे दिन 282 रनों का लक्ष्य हासिल किया और पहली बार आईसीसी डब्ल्यूटीसी गदा उठाकर 1998 चैंपियंस ट्रॉफी से चले आ रहे ट्रॉफी के सूखे को खत्म किया।

दक्षिण अफ्रीका पहली बार वर्ल्ड चैम्पियन

विश्व टेस्ट चैंपियनशिप

लंदन, 14 जून (एजेंसियां)। एडन मारक्रम की 136 रन की पराक्रमी पारी के दम पर दक्षिण अफ्रीका ने गत चैंपियन ऑस्ट्रेलिया को शनिवार को चौथे दिन पांच विकेट से हराकर विश्व टेस्ट चैंपियनशिप का खिताब जीत लिया जो उसका पहला आईसीसी विश्व खिताब है। दक्षिण अफ्रीका ने 282 रन के लक्ष्य को पांच विकेट खोकर हासिल कर लिया। मारक्रम ने 207 गेंदों पर 14 चौकों की मदद से 136 रन की मैच विजयी पारी खेली। प्रमुख टूर्नामेंटों के नॉकआउट मैचों में वर्षों तक दुख और दिल टूटने के बाद, दक्षिण अफ्रीका ने ऐतिहासिक लॉर्ड्स मैदान में चौथे दिन ऑस्ट्रेलिया को पांच विकेट से हराकर 2025 आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल जीतकर चैंपियनशिप का गौरव हासिल करने के लिए 27 साल का नॉकआउट का दंश तोड़ दिया। मारक्रम को प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार मिला। 282 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए तीसरे दिन का खेल 213/2 पर समाप्त करने के बाद, दक्षिण अफ्रीका आखिरकार गौरव हासिल करने के करीब पहुंच गया। लेकिन हार के इतिहास के साथ, वह भी तब जब वह लगातार चैंपियनशिप विजेता और डब्ल्यूटीसी खिताब धारक ऑस्ट्रेलिया का सामना कर रहा था, कई लोग सही मायने में सतर्क थे, हालांकि अंदर से आशावादी थे। तीसरे दिन नाबाद 102 रन बनाने वाले मार्करम ने अपनी आक्रामक प्रवृत्ति पर भरोसा करते हुए दक्षिण अफ्रीका को शानदार 136 रन बनाकर चैंपियनशिप की ओर अग्रसर किया, जिससे प्रोटियाज ने 83.4 ओवर में लक्ष्य का पीछा करते हुए यह टेस्ट जीत लिया, जो इस प्रारूप में उनकी लगातार आठवीं जीत भी थी।

■ चैम्पियनशिप का गौरव हासिल करने के लिए 27 साल का नॉकआउट का दंश तोड़ दिया

जीत की हकदार थी दक्षिण अफ्रीका: कमिंस

लंदन। ऑस्ट्रेलिया की विश्व टेस्ट चैंपियनशिप का खिताब बचाने की उम्मीदें शनिवार को लॉर्ड्स में दिल टूटने के साथ खत्म हो गईं। कप्तान पैट कमिंस ने हार को स्वीकार करते हुये कहा कि दक्षिण अफ्रीका सही मायनो में जीत की हकदार थी। अंतिम क्षणों में धैर्य बनाए रखने वाली दक्षिण अफ्रीकी टीम से कमिंस की टीम पांच विकेट से हार गई। शुरुआती नियंत्रण के बावजूद यह मुकाबला निर्णायक रूप से आस्ट्रेलिया के पक्ष में नहीं गया। इस परिणाम ने दक्षिण अफ्रीका को उसका पहला डब्ल्यूटीसी खिताब और 27 वर्षों में उसकी पहली आईसीसी पुरुष ट्रॉफी दिलायी। मैच के बाद के कमिंस ने कहा कि चीजें बहुत जल्दी बदल सकती हैं। हमेशा कुछ चीजें होती हैं। हमारे पास पहली पारी में अच्छी बढ़त थी और हमने उन्हें आउट करने की कोशिश की, लेकिन ऐसा नहीं हो सका। ऑस्ट्रेलिया ने मैच की शुरुआत मज़बूती से की, पहली पारी में 67 रन की अहम बढ़त हासिल की। लेकिन दूसरी पारी में उनके पतन ने दरवाज़ा खोल दिया, और प्रोटियाज़ ने एडेन मार्करम की शानदार बल्लेबाजी की बदौलत चौथे दिन शानदार तरीके से जीत दर्ज की। कमिंस ने कहा कि ऐसा लग रहा था कि विकेट सपाट हो गया है, लेकिन उम्मीद थी कि यह बदल सकता है और दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हुआ।

मार्करम 2014 अंडर-19 पुरुष क्रिकेट विश्व कप जीतने वाले दक्षिण अफ्रीका में सबसे आगे थे, और इस बार भी, वे 1998 के आईसीसी नॉकआउट के बाद एक प्रमुख सीनियर चैंपियनशिप जीत के लिए टीम का नेतृत्व करके सबसे आगे और केंद्र में रहे हैं, जिसे लोकप्रिय रूप से चैंपियंस ट्रॉफी के रूप में जाना जाता है। 213/2 से आगे खेलते हुए, दक्षिण अफ्रीका को शुरुआती झटका तब लगा जब टेम्बा बावुमा ने कमिंस की गेंद पर बैक-ऑफ-द-लेंथ डिलीवरी को पीछे कीपर के हाथों में दे दिया और 134 गेंदों पर 66 रन बनाकर आउट हो गए। नाथन लियोन को कुछ टर्न मिलने के कारण, इसका मतलब था कि दक्षिण अफ्रीका को चैंपियनशिप जीतने की अपनी खोज में नर्वस पथ से गुजरना पड़ा, ऑस्ट्रेलिया ने दबाव बनाए रखा और खुलकर रन नहीं दिए। हालांकि, मार्करम ने कमिंस को चौका देकर नर्वसनैस को शांत किया, फिर उन्हें मिड-विकेट पर मजबूती से एक और बाउंड्री के लिए पुल किया। लेकिन ऑस्ट्रेलिया ने एक और बड़ा झटका दिया जब मिशेल स्टार्क ने घबराए हुए ट्रिस्टन स्टब्स को बोल्ड कर दिया। जब ऑस्ट्रेलिया ने पारी का अपना तीसरा रिव्यू गंवा दिया, तो हताशा का स्पष्ट संकेत, दीवार पर लिखा था। मार्करम और डेविड बेडिंघम ने आसानी से स्ट्राइक रोटेट करते हुए शांति की तस्वीर पेश की, जिससे दक्षिण अफ्रीका लक्ष्य के करीब पहुंच गया। जब कमिंस की गेंद पर बेडिंघम ने शानदार ऑन-ड्राइव खेला, तो अंतर 20 से कम हो गया, जिससे प्रोटियाज समर्थकों की भीड़ में जान आ गई।

ऐडन मारक्रम

रन	गेंद	स्ट्रा. रेट	4/6
136	207	65.70	65.70

शुकरी कॉनराड ने की बावुमा के धैर्य की सराहना

लंदन। दक्षिण अफ्रीका ने शनिवार को लॉर्ड्स में विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में ऑस्ट्रेलिया पर पांच विकेट से जीत के साथ आईसीसी पुरुष खिताब के लिए अपने 27 साल के इंतजार को खत्म कर दिया, यह जीत सामरिक प्रतिभा के साथ-साथ विशुद्ध धैर्य से भी परिभाषित की गई। इस जीत के केंद्र में चोटिल लेकिन अडिग टेम्बा बावुमा थे, जिन्होंने हैमस्ट्रिंग की चोट को दरकिनार करते हुए चौथी पारी में 282 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए एडेन मार्करम के साथ मैच का रुख बदलने वाली साझेदारी की। दक्षिण अफ्रीका के मुख्य कोच शुकरी कॉनराड ने कहा कि मैंने ही कहा था कि टेम्बा को खेलना जारी नहीं रखना चाहिए लेकिन साझेदारी महत्वपूर्ण थी। वे वैसे भी कोचों से बेहतर जानते हैं। लॉर्ड्स में दक्षिण अफ्रीका की जीत की आत्मा इन्हीं शब्दों में छिपी थी, जब कप्तान बावुमा ने हैमस्ट्रिंग की चोट से जूझते हुए शानदार पारी खेली और अपनी टीम को ऑस्ट्रेलिया को पांच विकेट से हराकर अपना पहला आईसीसी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप खिताब जीतने में मदद की।

हॉकी के यूरोपीय चरण में ऑस्ट्रेलिया से हारा भारत

■ सत्येन्द्र पाल सिंह

नई दिल्ली, 14 जून (देशबन्धु)। नौजवान स्ट्राइकर अभिषेक के दो बेहतरीन गोल से तीसरे क्वॉर्टर के शुरू में 2-0 की बढ़त लेने के बावजूद मात्र 30 सेकंड पहले अपने खिलाफ दिए एक विवादास्पद पेनल्टी कॉर्नर के चलते भारत शनिवार को एंटवर्प में एफआईएच पुरुष प्रो लीग हॉकी 2024-25 के यूरोपीय चरण में ऑस्ट्रेलिया से 2-3 से हार गया। भारत के लिए अभिषेक ने आक्रामक सेंटर हाफ मनप्रीत और सुखजीत के साथ अच्छे तालमेल से खेले लेकिन आखिरी क्षणों की हड़बड़ी उसे एक बार फिर ले डूबी। भारत के लिए अपना लगातार पांचवां मैच मात्र एक गोल से हारना उसके लिए बड़ी टीस साबित हुआ। नाथन एफ्रामस ने तीसरे क्वॉर्टर खत्म होने तीन मिनट पहले मैदानी तथा चौथे व आखिरी क्वॉर्टर के छठे मिनट में छठे पेनल्टी कॉर्नर पर जोएल रेंटला ने और सातवें व आखिरी व 'विवादास्पद पेनल्टी कॉर्नर' पर आखिरी मिनट टॉम क्रेग ने गोल कर ऑस्ट्रेलिया को 3-2 से जीत दिला दी। भारत की टीम अपने नियमित कप्तान ड्रैग फ्लिकर फुलबैक हरमनप्रीत सिंह और जर्मनप्रीत के बिना खेलने उतरी और टीम की कप्तानी आक्रामक हार्दिक सिंह ने संभाली लेकिन वह शनिवार को जैसे मैदान पर ही दिखे नहीं। हार्दिक दरअसल भारत के खासतौर पर आक्रमण वह रक्षण की अहम कड़ी हैं लेकिन वह असमञ्जस में दिखे। ऑस्ट्रेलिया के लिए नाथन एफ्रामस, टिम ब्रैड , टॉम क्रेग और जोएल रेंटला ने अपनी टीम के दो गोल से पिछड़ने के बाद मौके मिलते ही हमले बोले। ऑस्ट्रेलिया ने कुल मिले सात में से आखिरी दो को गोल में बदला जबकि भारत कुल मिले तीन में से एक भी पेनल्टी कॉर्नर को गोल में नहीं बदल पाया। भारत के चीफ कोच मैच के दौरान अचानक अपने खिलाड़ियों को गेंद पर कब्जा गंवाते झुंझलाते भी जरूरतों के अनुसार खेलना सीख लिया है। अब इंग्लैंड के खिलाफ लीड्स में शुरू होने वाली पांच मैचों की टेस्ट श्रृंखला को लेकर उत्साहित हूं। उन्होने कहा कि आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि जब आपका मौका आए तो आप उसके लिए तैयार रहें लेकिन आप वास्तव में लंबे समय तक ध्यान केंद्रित नहीं रख सकते हैं, खासकर जब आप बाहर बैठे हों, इसलिए आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि आप थोड़ा मौज-मस्ती भी करें।

■ ऑस्ट्रेलिया आखिरी क्षण में मिले विवादास्पद पेनल्टी कॉर्नर से 3-2 से जीता

एफआईएच प्रो लीग: ऑस्ट्रेलिया ने भारतीय महिला टीम को हराया

लंदन। भारतीय महिला हॉकी टीम ने 0-3 से पिछड़ने के बाद वापसी की, लेकिन शनिवार को यहां ली वैली हॉकी एंड टेनिस सेंटर में एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2024/25 के मैच में ऑस्ट्रेलिया से 2-3 से हार का सामना करना पड़ा। मैच शुरू होने से पहले, दोनों टीमों ने अहमदाबाद में हाल ही में हुए विमान हादसे में जान गंवाने वालों की याद में एक मिनट का मौन रखा। तीन गोल से पिछड़ने के बाद, भारत ने दीपिका (44%) और नेहा (52%) के गोलों के जरिए वापसी की, लेकिन ऑस्ट्रेलियाई टीम ने जीत हासिल करने के लिए अंतिम क्वार्टर में अपना धैर्य बनाए रखा। कोर्टनी शोनेल (16%), लेक्सी पिकरिंग (27%) और टैटम स्टीवर्ट (35%) ने ऑस्ट्रेलिया के लिए गोल किए। इस मैच में मिडफील्डर वैष्णवी विट्ठल फाल्के ने भी व्यक्तिगत उपलब्धि हासिल की, जिन्होंने भारत के लिए अपना 50वां मैच खेला। शुरुआती क्वार्टर में दोनों टीमों के बीच बहुत कम अंतर था, दोनों टीमों ने इरादे दिखाए और कब्जे को महत्व दिया।

सुरुचि इंदर सिंह ने आईएसएसएफ विश्व कप में फिर से जीता सोना

म्यूनिख, 14 जून (एजेंसियां)। भारत की किशोर निशानेबाज सुरुचि इंदर सिंह ने आईएसएसएफ विश्व कप में महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में लगातार तीसरा स्वर्ण पदक जीतकर अपना स्वर्णिम अभियान जारी रखा। इस सत्र में उन्होंने अपना चौथा स्वर्ण पदक जीता और इस वर्ष इस स्पर्धा में अजेय रहीं। इससे पहले ब्यूनस आयर्स और लीमा में जीत दर्ज करने वाली सुरुचि ने फ्रांस की ओलंपिक रजत पदक विजेता कैमिली जेड्रेजेवस्की और चीन की याओ कियानक्सुन पर जीत दर्ज करके एक और उपलब्धि अपने नाम की। याओ ने इससे पहले 589 अंकों के साथ जूनियर क्वालीफिकेशन विश्व रिकॉर्ड तोड़ा था। म्यूनिख में 17 वर्षीय भारतीय निशानेबाज के उल्लेखनीय प्रदर्शन ने उन्हें कई स्पर्धाओं में पांचवां विश्व कप पदक दिलाया, जिसमें पेरू में 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम स्पर्धा में स्वर्ण और अर्जेंटीना में कांस्य पदक शामिल है। इसके साथ ही सुरुचि अब हर उस विश्व कप इवेंट में पोडियम पर पहुंच गई हैं, जिसमें उन्होंने हिस्सा लिया है और खुद को वैश्विक शूटिंग में उभरते सितारों में से एक के रूप में स्थापित किया है। फाइनल में कांटे की टक्कर देखने को मिली। सुरुचि जेड्रेजेव्स्की से 1.5 अंक पीछे थीं, लेकिन अंतिम दो शॉट में उन्होंने शानदार 10.5 अंक बनाए और अंततः फ्रांसीसी शूटर को पछाड़कर 241.7 के मुकाबले 241.9 अंक हासिल किए। इससे पहले एलिमिनेशन में, तुर्की की सेवल इलायडा तारहान ने बढ़त बनाई थी, लेकिन कम स्कोर वाली सीरीज ने उनकी चुनौती को पटरी से उतार दिया। चीन की याओ ने मजबूत शुरुआत के बावजूद पेनल्टीमेट राउंड में मामूली अंतर से चूकने के बाद कांस्य पदक जीता।

■ इस सत्र में उन्होंने अपना चौथा स्वर्ण पदक जीता और इस वर्ष इस स्पर्धा में अजेय रहीं

सार संक्षेप

अवनि प्रशांत हुलेनकोर्ट महिला ओपन में दूसरे स्थान पर

हुलेनकोर्ट। भारत की अवनि प्रशांत ने यूरोपीय टूर के हुलेनकोर्ट महिला ओपन गोल्फ टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन की बदौलत तीन अंडर 69 का कार्ड खेल कर दूसरे स्थान पर कब्जा बनाये रखा है। दूसरे दौर में अवनि का कुल स्कोर अब सात अंडर पर है और वह जर्मनी की हेलेन ब्रीम (68-68) से सिर्फ एक स्ट्रोक पीछे है। अवनि के अलावा कट में जगह बनाने वाली अन्य भारतीय खिलाड़ियों में दीक्षा डागर (72-73) संयुक्त 38वें स्थान पर और त्वेसा मलिक (76-70) संयुक्त 50वें स्थान पर हैं। प्रतियोगिता में भाग लेने वाली अन्य भारतीय खिलाड़ी वाणी कपूर (76-73), स्नेहा सिंह (74-75), अमनदीप द्राल (74-76) और हिताशी बक्शी (79-74) कट में जगह बनाने से चूक गयी हैं।

जीएमआर रग्बी प्रीमियर लीग 15 जून से शुरू

मुंबई। दुनिया की पहली फ्रेंचाइज़-आधारित रग्बी लीग जीएमआर रग्बी प्रीमियर लीग (आरपीएल) का पहला संस्करण 15 जून से शुरु होगा जिसमें छह टीमें हिस्सा लेंगी। लीग में कुल 34 मैच खेले जायेंगे, जिसमें चार दिन तीन गेम खेले जाएंगे, जबकि प्रत्येक दिन दो गेम होंगे। प्रतियोगिता का फिनाले 29 जून को निर्धारित है। सभी मैच मुंबई के शाहजी राजे भोसले स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स (अंधेरी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स) में होंगे। लीग में बेंगलुरु ब्रेवहार्ट्स, चेन्नई बुल्स, दिल्ली रेड्ज़, हैदराबाद हीरोज, कलिंगा ब्लैक टाइगर्स और मुंबई ड्रीमर्स फ्रेंचाइजी की टीमे हिस्सा लेंगी। लीग में न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, फिजी, अर्जेंटीना, ग्रेट ब्रिटेन, आयरलैंड, यूएसए और स्पेन के 30 मार्की अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी भाग लेंगे इसके अलावा, कनाडा, हांगकांग और जर्मनी के 18 अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी भी इसमें शामिल होंगे।

मध्य प्रदेश लीगः रीवा जैगुआर्स को आखिरी गेंद पर मिली जीत

ग्वालियर। सरांश सुराना के शानदार ऑलराउंड प्रदर्शन की बदौलत रीवा जैगुआर्स ने मध्य प्रदेश लीग के चौथे मुकाबले में शनिवार को ग्वालियर चीता को छह रन से हराकर लगातार दूसरी जीत दर्ज की। रीवा ने पहले बल्लेबाज़ी करते हुए सात विकेट के नुकसान पर 188 रन बनाए। कप्तान हिमांशु मंत्री 53 रन बनाए, हालांकि चोट के चलते उन्हें बीच में ही मैदान छोड़ कर जाना पड़ा। पृथ्वीराज सिंह तोमर ने भी 42 रनों की अहम पारी खेली। सरांश सुराना ने मात्र 25 गेंदों में 5 चौकों और 5 छक्कों की मदद से ताबड़तोड़ 64 रन बनाए, जिसने रीवा को एक चुनौतीपूर्ण स्कोर तक पहुंचने में मदद की। जवाब में ग्वालियर चीता ने सलामी बल्लेबाज पार्थ चौधरी के 25 गेंदों में 41 रनों की बदौलत तेज शुरुआत की, लेकिन उसके बाद लगातार विकेट गिरने के चलते टीम 16वें ओवर तक 7 विकेट के नुकसान पर महज 116 रनों तक ही पहुंच पाई।

भारत को मिलेगा अभ्यास मैच खेलने का फायदा : कृष्णा

बेकेनहैम, 14 जून (एजेंसियां) इंग्लैंड दौरे पर गयी भारतीय टीम के तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा का मानना है कि इंग्लैंड के खिलाफ 20 जून से शुरु हो रही टेस्ट श्रृंखला से पहले उनकी टीम को अभ्यास मैचों में खेलने का फायदा मिलेगा। बीसीसीआई टीवी से बातचीत में कृष्णा ने कहा कि इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला से पहले कुछ अभ्यास मैच खेलने का फायदा निसंदेह टीम को मिलेगा। हम सभी के लिए मैदान पर कुछ समय बिताना बेहद महत्वपूर्ण है। यह एक बढ़िया और सख्त पिच लग रही है। गेंदबाजों ने यहां अच्छी गेंदबाजी की है जबकि बल्लेबाजों ने भी जज्बा दिखाया है। जब आप अपने आपस में ही मैच खेलते हैं तो बहुत अच्छा लगता है।'' आईपीएल में अपनी शानदार गेंदबाजी के कारण सर्वाधिक विकेट लेकर पर्पल कैप हासिल करने वाले तेज गेंदबाज ने उम्मीद जाहिर की कि इंग्लैंड में मौका मिलने पर वह अपनी फार्म को बरकरार रखना चाहेंगे। उन्होंने कहा कि मैने टीम की जरूरतों के अनुसार खेलना सीख लिया है। अब इंग्लैंड के खिलाफ लीड्स में शुरू होने वाली पांच मैचों की टेस्ट श्रृंखला को लेकर उत्साहित हूं। उन्होने कहा कि आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि जब आपका मौका आए तो आप उसके लिए तैयार रहें लेकिन आप वास्तव में लंबे समय तक ध्यान केंद्रित नहीं रख सकते हैं, खासकर जब आप बाहर बैठे हों, इसलिए आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि आप थोड़ा मौज-मस्ती भी करें।

हम सभी के लिए इस गेम में समय बिताना बहुत जरूरी है, क्योंकि उनमें से कुछ 'ए' गेम से आ रहे हैं : प्रसिद्ध कृष्णा

अभिजीत गुप्ता ने चौथा खिताब जीतकर रचा इतिहास

नई दिल्ली, 14 जून (एजेंसियां)। भारतीय ग्रैंडमास्टर अभिजीत गुप्ता 21वें दिल्ली इंटरनेशनल ओपन ग्रैंडमास्टर्स शतरंज टूर्नामेंट (दिल्ली जीएम ओपन) 2025 के निर्विवाद चैंपियन बनकर उभरे। उन्होंने 10 में से 8.5 अंक हासिल कर एशिया के सबसे प्रतिष्ठित ओपन शतरंज इवेंट में रिकॉर्ड चौथा खिताब जीता। 36 वर्षीय गुप्ता ने 10 राउंड में अजेय रहते हुए शानदार प्रदर्शन किया। बेलारूसी जीएम मिहेल निकितेंको पर राउंड 9 में उनकी निर्णायक जीत ने उन्हें बढ़त दिलाई और आईएम अरोण्यक घोष के खिलाफ अंतिम राउंड में ड्रॉ ने उन्हें सीधे खिताब पर पहुंचा दिया। निकितेंको (2520, बेलारूस) 8 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर रहे, उन्होंने भारतीय जीएम दिव्यान घोष (2573) को टाईब्रेक में पछाड़ दिया। घोष ने तीसरे स्थान पर कब्जा किया, उन्होंने अपने शानदार खेल और जीएम कार्तिक वेंकटरमन पर अंतिम राउंड में महत्वपूर्ण जीत से प्रभावित किया। 8 अंक पर समाप्त होने के बावजूद, आईएम अरोण्यक घोष और जीएम आदित्य एस सामंत टाईब्रेक पर क्रमशः चौथे और पांचवें स्थान पर रहे। शीर्ष 10 में अनुभवी पेशेवरों और उभरते सितारों का सम्मोहक मिश्रण था। वियतनाम के जीएम गुयेन डुक होआ ने 7.5 अंकों के साथ छठा स्थान हासिल किया, उसके बाद भारत के शीर्ष वरीयता प्राप्त जीएम एसएल नारायणन 7वें स्थान पर रहे। अर्मेनियाई जीएम मैमिकोन घारिब्यान और मैनुअल पेट्रोसियन क्रमशः 8वें और 9वें स्थान पर रहे, दोनों ने 7.5 अंक हासिल किए। शीर्ष 10 में किर्गिस्तान के आईएम टोलोगोन टेगिन सेमेटेई भी शामिल रहे, जिन्होंने भी 7.5 अंक हासिल किए - जो टूर्नामेंट के विविधतापूर्ण और प्रतिस्पर्धी क्षेत्र को दर्शाता है।

दिल्ली शतरंज संघ द्वारा आयोजित, इस वर्ष के संस्करण में 20 से अधिक देशों के 2,500 से अधिक खिलाड़ियों ने भाग लिया, जिसमें 24 ग्रैंडमास्टर शामिल थे, और इसमें 1.21 करोड़ रुपये का रिकॉर्ड पुरस्कार पूल था। नई दिल्ली में आयोजित इस टूर्नामेंट ने एक बार फिर शीर्ष और उभरते शतरंज खिलाड़ियों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में अपनी प्रतिष्ठा को मजबूत किया। इस बीच, छतरपुर के टिवोली गार्डन में आयोजित श्रेणी सी में 1,250 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया और कुल पुरस्कार राशि 35 लाख रुपये थी। इस खंड के विजेता तमिलनाडु के दिनेश कुमार एच थे, जिन्होंने 4,00,000 रुपये का शीर्ष पुरस्कार जीता। उनके बाद नैतिक सेठी (3,00,000 रुपये) और सिबी एम (2,00,000 रुपये) क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। अन्य उल्लेखनीय पुरस्कार विजेताओं में गीतेश फोगट, साई कृष्णा एस. और एजीएम योगेश कुमार गुप्ता शामिल थे, जो भारतीय शतरंज सर्किट की उल्लेखनीय जमीनी ताकत को दर्शाते हैं।

दिल्ली जीएम ओपन

■ 36 वर्षीय गुप्ता ने 10 राउंड में अजेय रहते हुए शानदार प्रदर्शन किया

इंग्लैंड दौरे पर एक दिन में 12 ओवर ही गेंदबाजी करें बुमराह : रमन

नई दिल्ली, 14 जून (एजेंसियां)। भारत के पूर्व बल्लेबाज डब्ल्यूवी रमन का मानना है कि इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज के दौरान जसप्रीत बुमराह को दिन में अधिकतम 12 ओवर गेंदबाजी का टारगेट रखना चाहिए। इस तेज गेंदबाज पर ज्यादा वर्कलोड नहीं बढ़ाना चाहिए। बोर्ड यह पहले ही स्पष्ट कर चुका है कि बुमराह इंग्लैंड में पांच में से सिर्फ तीन टेस्ट खेलेंगे। सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क ने खास बातचीत का आयोजन किया था, जिसमें रमन ने कहा कि अभी तक भारत ने बुमराह के इंग्लैंड में खेलने वाले टेस्ट मैचों पर फैसला नहीं किया है। बेकेनहैम में इंट्रा-स्क्वॉड मैच खत्म होने के बाद चीजें ज्यादा स्पष्ट होंगी। हां, बुमराह की उपलब्धता भारत के लिए की-फैक्टर है। यह काफी हद तक तय है कि वह तीन टेस्ट मैचों से ज्यादा नहीं खेलेंगे, तो यह अपेक्षाकृत आसान हो जाता है। आपको पता है कि आप उन्हें दो टेस्ट मैचों में खेलता नहीं देख पाएंगे। रमन ने आगे कहा कि अगर टीम मैनेजमेंट को यह विकल्प मिलता है, तो उन्हें निश्चित रूप से सीरीज शुरू होने से पहले इसका पता लगाना होगा। जहां तक मैदान पर बुमराह के इस्तेमाल की बात है, मुझे लगता है कि वह उनसे ज्यादा गेंदबाजी नहीं करवा सकते। शायद बुमराह से 15 ओवर से अधिक गेंदबाजी न करवाई जाए।

अभी तक भारत ने बुमराह के इंग्लैंड में खेलने वाले टेस्ट मैचों पर फैसला नहीं किया है : डब्ल्यूवी रमन

■ बुमराह इंग्लैंड में पांच में से सिर्फ तीन टेस्ट खेलेंगेः बोर्ड

स्मिथ ने नहीं करायी सर्जरी, वेस्टइंडीज के खिलाफ सीरीज तक फिट होने में संशय

लंदन, 14 जून (एजेंसियां)। लॉर्ड्स में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीसरे दिन शुक्रवार को कैच लेने के दौरान अंगुली में चोट खाने वाले आस्ट्रेलिया के स्टीव स्मिथ ने कम्पाउंड डिस्लोकेशन की सर्जरी से बचने में सफलता प्राप्त की है, लेकिन वेस्टइंडीज में ऑस्ट्रेलिया की आगामी टेस्ट सीरीज के लिए फिट होने के लिए उन्हें अभी भी समय की कमी का सामना करना पड़ सकता है। टेम्बा बावुना का तेज कैच लपकने के प्रयास मे स्मिथ चोट खा बैठे थे। मैदान से बाहर निकलते ही वह सीधे अस्पताल गए जहां घाव को साफ किया गया, टांके लगाए गए और उंगली को स्प्लिंट में रखा गया और यह समझा जाता है कि अगर वह स्प्लिंट के साथ ऐसा करने में सक्षम हैं तो वह बल्लेबाजी करने में सक्षम होंगे, जिसे उन्हें आठ सप्ताह तक पहनने की आवश्यकता होगी, हालांकि घाव के लगभग एक पखवाड़े में ठीक होने की उम्मीद है।

■ टेम्बा बावुना का तेज कैच लपकने के प्रयास मे स्मिथ चोट खा बैठे थे।

सार समाचार

मसूदपुर में लगा शिविर में 72 मरीजों के हुए स्वास्थ्य परीक्षण

गंजबासौदा, देशबन्धु। ग्राम मसूदपुर में आयुष्मान आरोग्य मंदिर (आयुष) शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 72 मरीजों के स्वास्थ्य का परीक्षण किया गया। इस शिविर में डॉ. दर्शना रघुवंशी शासकीय आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी द्वारा मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण किया। जिसमें ब्लड प्रेशर शुगर एवं हीमोग्लोबिन की जांच की गई जांच उपरांत आवश्यकता अनुसार निःशुल्क औषधीयों का वितरण किया गया। साथ ही मरीजों को आहार संबंधित जानकारी भी दी गई। किशोर बालक बालिकाओं को पौष्टिक आहार का महत्व समझाया गया एवं उसे अपने दैनिक जीवन में अपनाने की सलाह दी गई जिससे उनका समग्र विकास हो सके। आगामी 21 जून को होने वाले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस शिविर के बारे में जानकारी देते हुए उसमें सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया गया। इस शिविर को सफल बनाने में रमेश कुमार गुजराती कंपाउंडर एवं श्रीमती सुषमा चौहान, महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता, श्रवण कुमार अहिरवार पीटीएस का विशेष योगदान रहा।

हत्या के आरोपी को आजीवन कारावास व अर्थदण्ड से किया दण्डित

आष्टा, देशबन्धु। प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश महेश कुमार चौहान के न्यायालय द्वारा निर्णय पारित करते हुए अभियुक्त विजय श्रीवास्तलव को धारा 302 भादवि में आजीवन कारावास एवं एक हजार रुपए अर्थदण्ड एवं धारा 324 भादवि में एक वर्ष का कारावास एवं पांच सौ रुपए अर्थदण्ड से दण्डित किया।

अतिरिक्त जिला अभियोजन अधिकारी, देवेन्द्र सिंह ठाकुर द्वारा बताया गया कि घटना का विवरण अभियोजन इस प्रकार है कि 31 दिसम्बर 2023 को फरियादी अजय श्रीवास्तव अपने खेत पर अपनी पत्नी रेखा श्रीवास्तव के साथ प्याज लगा रहा था तभी वहा फरियादी का भाई आरोपी विजय पिता भगवती प्रसाद श्रीवास्तव उम 35 साल नि. अरनिया दाऊद आया और कहने लगा कि तुम दुसरी जगह प्याज लगाओ यह मेरी जमीन है, फरियादी ने कहा कि तुम अपने हिस्से में अपनी प्याज लगाओ हम उधर प्याज नही लगाएंगे इसी बात को लेकर फरियादी का भाई विजय गालीगलौच करते हुए कुल्हाड़ी लेकर आया, और फरियादी की पत्नी को जान से मारने की नियत से उसके सिर में पीछे, आगे एवं नाक में कुल्हाड़ी मारी जिसे महिला को खून निलकने लगा और वह नीचे गिर गई।

फरियादी ने चिल्ला चोट मचाई तो गांव के लोग ने विजय को पकड़ा । फरियादी अपनी पत्नी को आष्टा अस्पताल लेकर आए जहां से प्राथमिक उपचार के बाद सीहोर रैफर किया गया। जहां डाक्टरों ने महिला को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने फरियादी की रिपोर्ट पर विभिन्न धाराओं के तहत प्रकरण प्रंजीकृत कर आरोपी को न्यायालय में पेश किया गया था, जहां से उसे जेल भेज दिया गया था। आज न्यायालय द्वारा अभियोजन साक्ष्य एवं अंतिम बहस के दौरान अभियोजन के तर्को से सहमत होते हुए अभियुक्त को दोष सिद्ध पाते हुए आरोपी को आजीवन कारावास एवं जुर्माने से दण्डित किया। शासन की ओर से पैरवी देवेन्द्रं सिंह ठाकुर, अतिरिक्त जिला अभियोजन अधिकारी द्वारा की गई ।

शंभुखेड़ी के जंगल में बिजली गिरने से 1 की मौत, 2 घायल

आष्टा, देशबन्धु। शनिवार को दोपहर बाद अचानक तेज हवा आंधी के साथ अंधेरा छा गया, पानी गिरने जैसा मौसम हो गया, कुछ जगह हल्की बारिश भी हुई इसी बीच अचानक तेज गड़गड़ाहट के साथ शम्भूखेड़ी के जंगल में बिजली गिरी जिससे पशु चरा रहे कैलाश नारायण पिता फूलसिंह गेहलोत आयू 55 वर्ष की मौत हो गई साथ में साथ में केदार सिंह और ज्ञान सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना को देखते हुए तत्काल ग्रामवासी मौके पर पहूंचे और पुलिस को सूचना दी। तीनों को अस्पताल लाया गया। जहां डाक्टरों ने कैलाशनारायण को मृत घोषित कर दिया, वहीं घायलों को उपचार चल रहा है। पार्वती थाना प्रभारी हरि सिंह परमार ने बताया कि कैलाशनारायण मृत्यू हो चुकि है जिसका पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया। पुलिस ने मग्र कायम कर जांच में लिया।

जिले से आए मलेरिया रथ ने लोगों को किया जागरूक

सिरोंज, देशबन्धु। विदिशा जिले से आए मलेरिया रथ द्वारा लोगों को मलेरिया बीमारी से कैसे बचे ऑडियो सुनाकर जागरूक किया गया और कुछ आसान उपाय भी बताए कि कैसा बचा जा सकता है मलेरिया के मच्छर से। लोगों को बताया गया कि अपने घर के आस-पास पानी जमा न होने दें। पानी से भरे गड्ढों में मिटटी भर दें। हैण्ड पम्प के आस-पास पानी जमा न होने दें। उसके आस-पास पक्का फर्श व नाली बनवाए। टायरों को बिखेर पड़े न रहने दें। बिखरे पड़े टायरों में पानी जमा होने से मच्छर पनपते है। सप्ताह में एक बार पशु व पक्षियों के पानी के बर्तन, हौदी इत्यादी को सुखाकर पानी भरे। पानी के सभी बर्तन, टंकी इत्यादी को पूरी तरह ढक कर रखें। सप्ताह में एक बार कूलर, फलदान आदि को सुखाकर ही उनमें पानी भरें। सभी कीटनाशन से उपचारित मच्छरदानी का प्रयोग करना चाहिए। यह मच्छरदानी साधारण मच्छरदानियों की अपेक्षा कहीं ज्यादा सुरक्षा देती है। ठहरे हुये पानी जैसे तालाबों, कुओं व अन्य जलाशयों में गम्बुजिया मछली डालें। इस दौरान बीएमओ विकास सिंह बघेल डॉ नीरज पंथी मोहसिन खान ष्द्धश आशा सुपरवाइजर आदि लोग मौजूद रहे।

गौ तस्कारों पर हो कठोर कार्रवाई, आमरण अनशन पर बैठे

गंजबासौदा, देशबन्धु। शनिवार को विश्राम गृह के सामने विशाल वैष्णव ने गौ तस्करी के विरोध में आमरण अनशन शुरू किया। उनके साथ कई साधु-संत और गौ भक्त भी मौजूद थे, जिन्होंने गौ तस्करों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की।

विशाल वैष्णव ने आरोप लगाया कि प्रशासन गौ तस्करों पर कोई कार्रवाई नहीं कर रहा है। उन्होंने विशेष रूप से सांची में हुए एक गौ तस्करी मामले का जिक्र किया, जहाँ गौ सेवकों पर ही पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया था। दोपहर 12 बजे शुरू हुए इस अनशन की सूचना मिलने पर नायब तहसीलदार अनुराग रावत और बीएमओ डॉक्टर प्रवीण तिवारी मौके पर पहुंचे।

विशाल वैष्णव की मुख्य मांगें थीं कि गौ तस्करों पर तत्काल कार्रवाई की जाए और गौ सेवकों पर दर्ज किए गए मुकदमे वापस लिए जाएं। शाम करीब 3 बजे, एसडीएम विजय राय ने घटनास्थल पर पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने वरिष्ठ अधिकारियों से चर्चा कर इस मामले में निष्पक्ष जांच का आश्वासन दिया। इस अवसर पर हिंदू जागरण मंच के प्रांत संपर्क प्रमुख श्री कृष्ण तिवारी ने गौ तस्करों पर कड़ी कार्रवाई की मांग दोहराई।

सत्य धारा के संत गंगाधर महाराज ने गायों पर अत्याचार रोकने के लिए सख्त कानून बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। वहीं, बरेठ के बाल ब्रह्मचारी संत हरि ओम महाराज ने भी गौ तस्करों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग की।

जन परिषद द्वारा सम्मान समारोह आयोजित

गंजबासौदा, देशबन्धु। शनिवार को स्थानीय विश्राम गृह में जन परिषद द्वारा एक सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दुबई की इंटरनेशनल मॉडल विद्या जोशी, जन परिषद के राष्ट्रीय संयोजक एवं वरिष्ठ पत्रकार रामजी श्रीवास्तव, प्रांतीय सचिव नितिन श्रीवास्तव रहें। जन परिषद के संयोजक एवं वरिष्ठ पत्रकार रामजी श्रीवास्तव ने जन परिषद के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ग्रामीण इलाकों की सहजता और सहृदयता आज भी प्रणाम करने योग्य है। उन्होंने बताया कि इस समय जन परिषद के पूरे देश में 375 चैप्टर्स हैं।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि बी यूनिक इंटरनेशनल मिसेज दुबई, फेस ऑफ द दुबई, इंटरनेशनल रनवे मॉडल सुश्री विद्या जोशी पटेल ने कहा कि यदि हमें समाज और देश को आगे बढ़ाना डॉट है। तो पहले ग्रामी को रीण इलाकों की सेवा करनी चाहिए। सुश्री जोशी ने कि रचनात्मकता की दृष्टि से जन परिषद एक अनोखी और बिरली संस्था है। उनकी गतिविधियां स्वागत योग्य है। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष शशि यादव एवं जनपद अध्यक्ष नीतू रघुवंशी ने भी अपने विचारों से चर्चा के दौरान अवगत कराया। कार्यक्रम में सभी ने अपना परिचय देते हुए जन परिषद के द्वारा किए कार्य और उनके उद्देश्य को जानकर जैन परिषद की शरण करते हुए शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर लायंस क्लब के अध्यक्ष विजय अरोरा, सुनील पिंगले, पत्रकार यशपाल यादव, प्रदीप श्रीवास्तव, अनुज श्रीवास्तव, अर्पित जैन, योगेश अग्रवाल, समीर किरमानी, नीलेश नामदेव, सौरभ सिंघई, संजय श्रीवास्तव, सौरभ बवेले, अरविंद झा, सरिता जैन, सरिता रघुवंशी, अभिलाषा नरवरिया, शिवानी लोधी, निशा नरवरिया सहित बड़ी संख्या में पत्रकार नगरिक गण, नगर की प्रतिभाए कार्यक्रम में मौजूद रहीं। कार्यक्रम का संचालन ओमप्रकाश चौरसिया और सुनील पिंगले ने किया। जन परिषद के सदस्य ओमप्रकाश चौरसिया ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

राजश्री महाविद्यालय द्वारा अग्निवीर योजना में चयन पर पूर्व छात्र अतुल वर्मा का किया स्वागत

आष्टा, देशबन्धु। राजश्री कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज के लिए आज गर्व का क्षण रहा जब महाविद्यालय के पूर्व छात्र अतुल वर्मा का चयन भारतीय सेना की अग्निवीर योजना के अंतर्गत हुआ। इस उपलब्धि पर महाविद्यालय प्रबंधन द्वारा अतुल वर्मा का भव्य स्वागत व सम्मान किया गया। महाविद्यालय संचालक बीएस परमार ने कहा कि अतुल वर्मा ने न केवल महाविद्यालय का नाम रोशन किया है, बल्कि युवाओं के लिए एक प्रेरणास्त्रोत भी बनें हैं।

उन्होंने कहा, हम सभी को उन पर गर्व है और हम उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं। इस अवसर पर अतुल वर्मा ने भी अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि राजश्री कॉलेज की शिक्षा एवं अनुशासन ने उन्हें इस मुकाम तक पहुंचने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कॉलेज और अपने शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

राजश्री महाविद्यालय द्वारा निरंतर छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों की यह एक और मिसाल है। महाविद्यालय परिवार ने अतुल वर्मा को ढेरों शुभकामनाएं दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर महाविद्यालय संचालक बीएस परमार, प्रभारी प्राचार्य अर्जुन परमार, मीडिया प्रभारी मनोज कमलोदिया, सविता बैरागी, रामवती मेवाड़ा, प्रहलाद मेवाड़ा, पुष्प मेवाड़ा, राहुल सेन, पूजा मेवाड़ा, द्वारका प्रसाद कर्मोदिया, अखिलेश सक्सेना, पूजा परमार, माया मेवाड़ा, रंजना परमार, कविता भूतिया, ममता तिवारी, हिमांशी झवर, मनोहर लाल, विनोद मीणा, दीक्षा सूर्यवंशी, रवि मेवाड़ा, बहादुर सिंह, शिवराम परमार, अरविंद यादव व रीना यादव उपस्थित रहे।

एस.बी.एस. कॉन्वेंट हायर सेकेन्ड्री स्कूल में 'प्रतिभा सम्मान समारोह' सम्पन्न

आष्टा, देशबन्धु। एसबीएस कान्वेट हायर सेकेन्ड्री स्कूल में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि नारायण सिंह ठाकुर कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष डॉक्टर मीना सींगी, एवं विशेष अतिथि बीआरसीसी अजब सिंह राजपूत उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वति के चित्र पर दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना कर किया गया। इसके पश्चात सभी अतिथियों का संचालक भोलू सिंह ठाकुर, सहसंचालक जीवन सिंह ठाकुर, प्राचार्य रीना ठाकुर द्वारा प्रतीक चिन्ह भेंट कर स्वागत किया गया। कक्षा 12वी के 45 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाले मेधावी छात्र छात्राएं एवं कक्षा दसवीं में 55 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाले साथ ही कक्षा नर्सरी से 11वीं तक प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो को तथा पूरे सत्र में होने वाली विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं में प्रथम,द्वितीयं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को शील्ड एवं प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत किया गया। साथ ही संस्था द्वारा कक्षा 12वीं के उदित कासन्या को बेस्ट डिसिप्लिन स्टूडेंट का अवार्ड से सम्मानित किया गया। सभी विद्यार्थीयों के माता-पिता का पुष्पमाला पहनाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर सभी अतिथियों एवं संस्था संचालक एवं शिक्षक/शिक्षिकाओं ने विद्यार्थियों को उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

विमान हादसे में दिवंगत नागरिकों को दी श्रद्धांजलि

गंजबासौदा, देशबन्धु। विगत 12 जून को अहमदाबाद में हुए विमान हादसे में दिवंगत नागरिकों की आत्मा की शांति हेतु शनिवार की शाम 6 बजे स्थानीय जय स्तंभ चौक पर भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं एवं नगर के जागरूक नागरिकों ने दो मिनिट का मौन धारण कर मोमबत्ती जलाकर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। श्रद्धांजलि सभा में एयर इंडिया फ्लाइट हादसे में जान गंवाने वालों को श्रद्धांजलि दी गई। सभा की शुरुआत दो मिनट के मौन से हुई। मृतकों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई। फ्लाइट ने अहमदाबाद से उड़ान भरी थी। उड़ान भरते ही मेडिकल कॉलेज की बिल्डिंग से टकराकर विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसे में करीब 274 नागरिकों की जान चली गई थी। इस घटना से पूरे देश में शोक की लहर है। शहर के जागरूक लोग भी इस हादसे से आहत हैं। सभा में सरकार से हादसे की जांच की मांग की गई।

2 स्थानों पर जुए के फड़ पर की छापामार कार्रवाई

जुआ खेल रहे 9 आरोपियों को पकड़ा

दिगौड़ा, देशबन्धु । पुलिस ने शुक्रवार की शाम को मुखबिर की सूचना पर ग्राम बम्होरी में 2 अलग-अलग स्थानों पर खेले जा रहे जुएं के फड़ पर छापामार कार्यवाही की गई। इस कार्यवाही में पुलिस ने जुआ खेल रहे 9 जुआरियों को मौके से पकड़ा है। पुलिस ने मौके से 6810 रुपए जप्त कर सभी आरोपियों के खिलाफ 13 जुआ एक्ट का मामला दर्ज किया है।

थाना प्रभारी संदीप सोनी ने बताया है कि शुक्रवार की शाम को मुखबिर की सूचना पर ग्राम बम्होरी में शंकर मंदिर के पास छापामार कार्यवाही कर जुआ खेल रहे आरोपी आलोक दांगी बंधा, नाती राजा दांगी बम्होरी, चुन्नीलाल चढ़ार बम्होरी, ब्रजनंदन अहिरवार खडाई, जीतू रजक बम्होरी को पकड़ा है। पुलिस टीम ने मौके से 52 ताश के पत्ते व 3960 रुपए जप्त किए। इसके अलावा पुलिस टीम ने बम्होरी तालाब के पास जुआ खेल रहे आरोपी ब्रजेन्द्र रजक बीरऊ, मोहन कुशवाहा बम्होरी, केशव अहिरवार बम्होरी व रमेश खंगार बेदोरा को पकड़ा है। पुलिस टीम ने जुए के फड़ से 52 ताश के पत्ते व 2850 रुपए जप्त किए हैं। पुलिस ने सभी 9 आरोपियों के विरुद्ध धारा 13 जुआ एक्ट का कायम कर विवेचना में लिया गया।

इस कार्यवाही में थाना प्रभारी उप निरीक्षक संदीप सोनी, प्रधान आरक्षक विजय सिंह घोष, अभय वर्मा, भारत सिंह, आरक्षक कपिल शर्मा, रजत दांगी, अरुण प्रताप सिंह व थाना स्टाफ की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

'आष्टा के वरिष्ठ पत्रकार रऊफ खान लाला हुए सम्मानित'

उपनिषद की तरंग जैसी है जन-परिषद : पटेल

आष्टा, देशबन्धु। अग्रणी संस्था जन-परिषद के समारोह में एयर मार्शल प्रमोद कुमार श्रीवास्तव ने कहा है कि युवाओं को संस्कारी बनाना समाज की जिम्मेदारी है। नये युग के बच्चों को छोटे-छोटे संस्कार देकर उज्ज्वल भविष्य और नये भारत का निर्माण किया जा सकता है। वे जन-परिषद सम्मान समारोह में संबोधित कर रहे थे। सम्मान समारोह में सराहनीय कार्य करने वालों को भी सम्मानित किया गया। बी यूनिक इंटरनेशनल मिसेस दुबई, मोस्ट पापुलर फेस ऑफ अबूधाबी, रनवे मॉडल एवं एक्ट्रेस सुश्री विद्या जोशी पटेल ने संस्था की प्रशंसा करते हुए कहा कि उपनिषद सी है जन-परिषद संस्था। यह संस्था लोगों के द्वारा लोगों के लिये काम करती है।

वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. निर्भय श्रीवास्तव ने भी समारोह को संबोधित किया। वरिष्ठ साहित्यकार जीवन सिंह रजक ने कहा कि भारतीय संस्कृति में सामाजिक संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। इस तरह की संस्थाएँ नई पीढ़ी को परम्पराएँ सिखाती हैं। संस्था के उपाध्यक्ष एस.के. मिश्रा ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि सामाजिक सरोकार से जुड़ी यह संस्था समाज की बुराइयों को दूर करने का निरंतर प्रयास करती आ रही है। कार्यक्रम में जी.पी. श्रीवास्तव ने बताया कि जन-परिषद ने ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक कार्य कर संस्था की शुरूआत की। जन-परिषद की स्मारिका का विमोचन भी किया गया।

समारोह में सुश्री विद्या जोशी पटेल को ब्यूटी ब्रिलिएंट ऑफ एशिया सम्मान, एडिशनल एस.पी. श्रीमती कमला रावत को लक्ष्मी रायकवार स्मृति सम्मान, श्रीमती भावना डेहरिया को प्रिन्सेस ऑफ हाइट सम्मान, डॉ. प्रवीण दाताराम को माँ प्रभा देवी सम्मान, डॉ. निर्भय श्रीवास्तव को राजकमल एक्सीलेन्सी सम्मान से सम्मानित किया गया। इसी प्रकार जीवन सिंह रजक को कवि प्रदीप चौबे सम्मान, एडवोकेट श्री मनीष त्रिपाठी को जस्टिस पी.के. तारे सम्मान, शरद फाउण्डेशन को कुलभूषण दिल्लौरी सम्मान, रऊफ खान लाला को' 'के.के.' 'अग्निहोत्री सम्मान दिया गया'।

श्रीमती तृप्ति शिन्दे मिसेस यूनिवर्स को चार्मिंग पर्सनालिटी, रागिनी द्विवेदी लखनऊ मिस इंडिया को फोटोजेनिक पर्सनालिटी और दिव्या चौधरी भोपाल मिसेस इंडिया को लुमिनस आइस से नबाज़ा गया। अप्रिशिएसन के लिए जितेन्द्र पुरोहित, अंकलेश्वर दुबे और नवीन पालीवाल को सम्मानित किया गया। वेस्ट चौप्टर के लिये आष्टा, दमोह और मुलताई की जन-परिषद संस्था को सम्मान दिया गया। सर्वश्री राजेश गुप्ता, विनोद श्रीवास्तव, नितिन श्रीवास्तव, अजय श्रीवास्तव 'नीलू' और दुर्गेश रायकवार को भी उनके कार्यों की सराहना के लिये सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार रामजी श्रीवास्तव ने किया और आभार प्रदर्शन श्री अजय श्रीवास्तव 'नीलू' ने किया।

ताप्ती तीरे

सार-समाचार

प्लेन हादसे में जान गंवाने वालों को कर्मचारी संघ ने दी भावभीनी श्रद्धांजलि

बैतूल, देशबन्धु। गुजरात के अहमदाबाद नगर में हुए भीषण विमान हादसे में जान गंवाने वाले लोगों की आत्मा की शांति के लिए मध्य प्रदेश राज्य कर्मचारी संघ द्वारा चिचोली में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। इस दौरान सभी कर्मचारियों ने गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए 2 मिनट का मौन रखकर मृतकों को श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि सभा के दौरान ईश्वर से प्रार्थना की गई कि वह सभी दिवंगत आत्माओं को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें और शोक संतप्त परिजनों को इस संकट की घड़ी को सहन करने की शक्ति दें। इस श्रद्धांजलि सभा में राज्य कर्मचारी संघ जिला बैतूल के जिला अध्यक्ष सचिन राय, विकासखंड शिक्षा अधिकारी दीपक महाले, बीआरसी चिचोली एनके गलफट, एसके चौरगढे, तहसील अध्यक्ष अतुल आर्य, ब्लॉक अध्यक्ष अनिल गोस्वामी, अरविंद तायवाडे, आरीफ खान, ओमप्रकाश सरोने, अरुणा साहू, मोना घाटोडे, जितेंद्र जायसवाल, हेमंत जैन सहित अन्य सभी कर्मचारियों ने भाग लिया और गहरी संवेदना व्यक्त की।

विश्व रक्तदाता दिवस पर किया 17 यूनिट रक्तदान, हो रही सराहना

बैतूल, देशबन्धु। विश्व रक्तदाता दिवस के अवसर पर पोदार लर्न स्कूल बैतूल और सामाजिक संगठन आवाज़ दो हम जिंदा है ग्रुप के संयुक्त तत्वावधान में एक प्रेरणादायी रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 17 यूनिट रक्त दान किया गया। इस सफल आयोजन की मुख्य भूमिका पोदार लर्न स्कूल के प्रिंसिपल दत्ता सर और स्कूल की डायरेक्टर श्रीमती मंजू अग्निहोत्री ने निभाई। रक्तकोष अधिकारी सुश्री अंकिता सीते अपने पूरे स्टाफ के साथ उपस्थित रहीं और शिविर संचालन में योगदान दिया। शिविर में रक्तदान करने वालों में अकबर खान, विनय अग्निहोत्री, नेहा चौहान, अनिरुद्ध सरसोदे, हारीश सिद्दीकी, अखण्ड चौहान, आरिफ शेख, प्रवीण कुमार, शादाब खान, अभिनव मालवीय, सत्यम खडसे, प्रदीप जांगड़े, अंशुल चौकीकर, ललित बारस्कर, प्रीतम विश्वकर्मा, इमरान खान और कादिर खान शामिल रहे।

सतपुड़ा वैली पब्लिक स्कूल में प्रिंसिपल बनीं डॉ रितू बाजपेई

बैतूल। सतपुड़ा वैली पब्लिक स्कूल में अब प्राचार्या के रूप में लखनऊ निवासी डॉ रितू बाजपेई ने कार्यभार संभाल लिया है। शिक्षा के क्षेत्र में उनका लंबा अनुभव रहा है। उन्होंने ज्योतिष विषय में पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की है, साथ ही गणित में एम.एससी, शिक्षा में एम.ए., कंप्यूटर एप्लीकेशन में पी.जी.डी.सी.ए, एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन में पी.जी.डी.ई.ए है। उन्हें शाला परिवार ने बधाई, शुभकामनाएं दी।

3 माह की मजदूरी 1 लाख से अधिक, अब तक नहीं मिला पैसा

बैतूल, देशबन्धु। ग्राम पंचायत मलाजपुर और कुटकुही तहसील चिचोली के आदिवासी मजदूरों ने गन्ना कटाई की मजदूरी नहीं मिलने की शिकायत जिला श्रम अधिकारी से की है। युवा आदिवासी विकास संगठन के जिला अध्यक्ष जितेंद्र सिंह इवने के नेतृत्व में मजदूरों ने शुक्रवार को जिला श्रम अधिकारी को ज्ञापन सौंपा। इस दौरान राहुल कासदे, सुखवती परते, दीपक कुमरे, रामरती परते, सुनीता परते,

गन्ना कटाई की मजदूरी नहीं मिलने पर मजदूरों ने श्रम अधिकारी से की शिकायत

जयवंती परते, नबिया, सुम्मो और अनिता कमलती मौजूद रहे।

मजदूरों ने बताया कि वे सभी ग्राम मलाजपुर निवासी मयूर यादव पिता इन्द्रसेन यादव के खेत में गन्ना कटाई का काम करने तीन माह तक जाते रहे। मजदूरी की तय राशि प्रतिदिन 300 रुपए थी, लेकिन आज तक इन मजदूरों को उनका मेहनताना नहीं मिला है। मजदूरों को काम पर ले जाने वाला व्यक्ति शंकर यादव था। मजदूरों का कहना है कि शंकर यादव ने भरोसा दिलाया था कि यदि मयूर यादव पैसा नहीं देगा, तो वह स्वयं मजदूरी का भुगतान करेगा। लेकिन अब दोनों ही व्यक्ति मजदूरी देने से साफ इंकार कर रहे हैं और मजदूरों को टालते हुए कभी आज, कभी कल देने की बात कहकर बहाने बना रहे हैं। मजदूरों ने बताया कि चार माह से वे लगातार अपनी मजदूरी मांग रहे हैं लेकिन मयूर यादव और शंकर यादव बार-बार टालमटोल कर रहे हैं। अब तो खुलेआम कहने लगे हैं कि जो करना है कर लो, मैं पैसा नहीं दूंगा। इस रवैये से मजदूरों की आर्थिक स्थिति खराब हो चुकी है।मजदूरों ने जिला श्रम अधिकारी से गुहार लगाई है कि उन्हें उनका बकाया मजदूरी का पैसा जल्द दिलवाया जाए। अधिकारी ने पूरे मामले की जांच कर जल्द मजदूरी दिलाने का आश्वासन दिया है। मजदूरों का कहना है कि वे गरीब आदिवासी समाज से हैं और उनके घर की रोजीरोटी केवल मजदूरी पर ही निर्भर है। ऐसे में उनका मेहनताना मिलना बेहद जरूरी है।

कानून को ठेंगा दिखाती 3 घटनाएं बता रही दबगों की घिनौनी करतूत

आदिवासी बहुल बैतूल जिले की यह घटनाएं न सिर्फ कानून व्यवस्था को ठेंगा दिखा रही है बल्कि बता रही है कि, दबंग किस तरह बेपरवाह होकर अपना काम बखूबी कर रहे हैं । उन्हें किसी बात का डर नहीं है। उनकी सोच को पुलिस सही साबित भी कर रही है पीड़ितों की शिकायत पर ध्यान न देकर। घटनाएं आपके सामने है, पीड़ितों ने खुद सामने आकर अपनी बात रखी है। खास बात यह भी है कि यहां केंद्रीय राज्यमंत्री भी आदिवासी नेता हैं। उनसे भी जनता को बहुत उम्मीदें हैं। परेशान लोग न्याय चाह रहे हैं।

बोरपेंड में दबंगई की हदें पार, किसान के घर की तोड़ दी छत

बरहापुर में महिला सरपंच के साथ मारपीट

कॉलेज गई किशोरी 25 दिन से लापता, पुलिस नहीं दे रही ध्यान

किसान परिवार के साथ दबंगई की सारी हदें पार

मामला 1

बैतूल, देशबन्धु। प्रभात पट्टन तहसील के ग्राम बोरपेंड में एक किसान परिवार के साथ दबंगई की सारी हदें पार कर दी गईं। किसान परिवार के सिर से जबरन छत ही छीन ली गई। दबंगों ने घर के ऊपर चढ़कर पूरी छत के कवेलू एक-एक कर उतार दिए और तोड़फोड़ कर दी। अब बरसात के मुहाने पर यह गरीब परिवार खुले आसमान के नीचे जिंदगी गुजारने को मजबूर है। घर में रखा 70 क्विंटल अनाज भी बारिश की भेंट चढ़ने की कगार पर है। डरे-सहमे इस परिवार ने आखिरकार पुलिस अधीक्षक से इस मामले की शिकायत है, लेकिन अब तक कोई राहत नहीं मिली है।

बोरपेंड निवासी पीड़ित आवेदक देवशंकर बारपेटे ने एसपी से शिकायत करते हुए बताया कि उनके मकान पर जबरदस्ती चढ़कर पड़ोसियों ने कवेलू तोड़ दिए, जिससे उनका मकान पूरी तरह से खुल गया है और वे बीते कई दिनों से खुले आसमान के नीचे रहने को मजबूर हैं। देवशंकर बारपेटे का कहना है कि उनकी पुश्तैनी भूमि खसरा नंबर 196 बी रकबा 126 पी 94 वर्ग मीटर पर पिछले 50 वर्षों से मकान बना हुआ है, जिसमें वे अपने परिवार सहित निवास करते हैं। उनके पड़ोसी दुर्गा पति सुरेश बारपेटे एवं रेखा पति रूपराम बारपेटे का मकान पास ही स्थित खसरा नंबर 196 बी रकबा 125 पी यानी 81 वर्ग मीटर पर है।

आवेदक के अनुसार, 9 जून को शाम लगभग 6.30 बजे अनावेदकों ने जबरन उनके मकान पर चढ़कर कवेलू उतार दिए और कुछ नीचे फेंक दिए। इस घटना में कई कवेलू टूट गए और मकान की छत पूरी तरह से खुल गई है। बरसात के चलते अब मकान की दीवार गिरने की आशंका बनी हुई है।

पंचायत के जनप्रतिनिधि भी गांव में सुरक्षित नहीं

मामला 2

बैतूल, देशबन्धु। अब ग्राम पंचायत के जनप्रतिनिधि भी गांव में सुरक्षित नहीं हैं। ग्राम पंचायत बरहापुर में महिला सरपंच के साथ सरेआम दुर्व्यवहार मारपीट करने का मामला सामने आया है। इस मामले में ग्रामीणों ने पुलिस अधीक्षक से शिकायत की है। भैंसदेही तहसील के इस गांव की सरपंच दुर्गा पति तुलसीराम चतुरकर जब दो पक्षों के बीच जमीन विवाद को सुलझाने पहुंचीं, तो मौके पर मौजूद दबंगों ने उनके साथ गालीगलौज करते हुए हाथापाई की। यहां तक कि सरपंच की साड़ी पकड़कर उन्हें गिरा दिया गया और जान से मारने की धमकी दी गई।

घटना के संबंध में सरपंच दुर्गा चतुरकर ने एसपी कार्यालय पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने बताया कि वे अपने घर पर थीं, तभी लिलाबाई बघेल नामक महिला उनके घर पहुंची और कहा कि उसके देवर उसे मकान बनाने के लिए जमीन में बराबरी से हिस्सा नहीं दे रहे हैं। सरपंच दुर्गा चतुरकर मामले को सुलझाने के लिए मौके पर गईं, जहां शुरुआत में सभी पक्ष बातचीत के लिए तैयार हो गए थे। लेकिन कुछ ही देर में माहौल बदल गया। मौके पर मौजूद संगीता बाई बघेल, संजु पिता बिसनु, सौरभ पिता अशोक और अशोक पिता बिसनु ने पहले लिलाबाई को गालियां देना शुरू कर दिया। जब सरपंच ने उन्हें रोका और समझाइश दी, तो चारों ने मिलकर सरपंच को ही अपशब्द कहना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा सरपंच होगी अपने घर की, हमारी बात में क्यों टांग अड़ा रही है। इसके बाद अनावेदकों ने सरपंच को धक्का देकर गिरा दिया और साड़ी पकड़कर खींचा। सरपंच के साथ हाथापाई भी की गई, जिससे उन्हें हाथ-पैर में चोटें आईं।

बेटी के अचानक गायब हो जाने से पूरा परिवार चिंतित और भयभीत

मामला 3

बैतूल, देशबन्धु। आठनेर तहसील के ग्राम सातनेर निवासी एक पिता अधीक्षक बैतूल को आवेदन देकर बताया कि उसकी पुत्री 19 मई को दोपहर करीब 2 बजे निजी कॉलेज आठनेर गई थी, लेकिन उसके बाद वह घर वापस नहीं लौटी। बेटी के अचानक गायब हो जाने से पूरा परिवार चिंतित और भयभीत है। आवेदक पिता संतोष राठौर ने बताया कि अगले दिन 20 मई को उसने थाना आठनेर में अपनी बेटी की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी, लेकिन रिपोर्ट दर्ज होने के बावजूद आठनेर पुलिस द्वारा अब तक कोई सख्त कार्रवाई नहीं की गई है। आवेदक का आरोप है कि अनावेदक युवक के पिता पुलिस में होने के कारण इस प्रकरण को गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है। आवेदक ने संदेह व्यक्त किया है कि उमरी निवासी देवेंद्र मासोदकर उसकी पुत्री को कॉलेज से बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया है। जब आठनेर पुलिस देवेंद्र के घर गई तो वह और उसके पिता दोनों घर से गायब मिले। आवेदक ने बताया कि देवेंद्र मासोदकर का मोबाइल नंबर बंद आ रहा है और उसके पिता हेमराज मासोदकर एक नया नंबर उपयोग कर रहे हैं, जिससे देवेंद्र से बातचीत की जा रही है। इससे साफ जाहिर होता है कि वे लोग संपर्क में हैं लेकिन जानबूझकर पुलिस और परिजनों से बच रहे हैं। संतोष राठौर ने संदेह जताया कि थाना आठनेर में उन्होंने गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई है, लेकिन देवेंद्र मासोदकर सके परिजनों ने अब तक उसकी कोई गुमशुदगी दर्ज नहीं कराई है। इससे संदेह और भी गहरा हो गया है कि देवेंद्र मासोदकर ही युवती को बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया है और दोनों की यह गुमशुदगी किसी पूर्व नियोजित योजना का हिस्सा हो सकती है।

रक्तदाता दिवस पर किया फूलों से स्वागत

बैतूल, देशबन्धु। विश्व रक्तदाता दिवस के अवसर 14 जून को शहर में सामाजिक संगठनों द्वारा रक्तदान के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से एक रैली निकाली गई। यह रैली जब लल्ली चौक पहुंची, तो वहां आवाज़ दो हम जिंदा हैं ग्रुप द्वारा गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

रैली में शामिल रक्तदाताओं और जागरूकता फैलाने निकले युवाओं पर लल्ली चौक पर पुष्पवर्षा की गई और ठंडा पानी पिलाकर उनका उत्साहवर्धन किया गया। इस दौरान राह चलते लोग भी रुके और रैली का समर्थन करते हुए समाजहित में किए जा रहे इस प्रयास की सराहना की।

अंकित डिगरसे बने गूगल में सॉफ्टवेयर इंजीनियर

बैतूल। अंकित डिगरसे का चयन विश्व की सबसे बड़ी आईटी कंपनियों में से एक गूगल (कैलिफोर्निया, अमेरिका) में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर हुआ है। अंकित ने यह मुकाम पहले ही प्रयास में हासिल कर जिले और समाज का नाम रोशन किया है।अंकित डॉ. दिनेश डिगरसे एवं श्रीमती पुष्पा डिगरसे के सुपुत्र हैं। मूल रूप से उनका परिवार ग्राम रोंढ़ा से ताल्लुक रखता है। अंकित के दादा स्व. मिट्ठू डिगरसे ग्राम रोंढ़ा के थे।

ताप्ती उद्गम स्थल पर सवा करोड़ शिवलिंग निर्माण और सूर्य महायज्ञ की हुई भव्य अलौकिक शुरुआत

बैतूल, देशबन्धु। मां ताप्ती की जन्मभूमि मुलताई में सवा करोड़ शिवलिंग निर्माण एवं पूजन, सूर्य महायज्ञ और कलश यात्रा के साथ मां ताप्ती उद्गम उद्धार महोत्सव का ऐतिहासिक शुभारंभ हुआ। भक्तिभाव से सराबोर इस आयोजन में सुबह से ही श्रद्धालुओं का तांता लग गया। पूरे नगर में भक्ति की अविरल धारा बहती रही और ताप्ती तट आस्था के महासागर में डूबा नजर आया। आयोजन समिति के मनीष माथनकर ने बताया महोत्सव की शुरुआत भव्य कलश शोभायात्रा से हुई, जिसमें सैकड़ों की संख्या में माताएं, बहनें और श्रद्धालु शामिल हुए। कलश यात्रा में मां ताप्ती की आकर्षक प्रतिमा विशेष आकर्षण का केंद्र रही। पारंपरिक परिधान में सजी महिलाएं सिर पर कलश लिए गाजे-बाजे और ढोल-नगाड़ों के साथ नगर भ्रमण करते हुए ताप्ती उद्गम स्थल पहुंची, जहां कलशों की स्थापना की गई। दिनेश कालभोर ने बताया इस आध्यात्मिक आयोजन का नेतृत्व मां ताप्ती उद्गम उद्धार महोत्सव समिति द्वारा किया जा रहा है। दीपक मालवीय एवं पवन मालवीय ने जानकारी दी कि आयोजन की दिव्यता को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए नर्मदापुरम के धर्माचार्य सोमेश परसाई के सान्निध्य में सवा करोड़ पार्थिव शिवलिंग निर्माण

उनका पूजन, भस्म महाआरती और सूर्य महायज्ञ संपन्न होगा। आयोजन के शुभारंभ अवसर पर श्री पंच दशनाम जूना अखाड़ा के महामंडलेश्वर स्वामी प्रबोधनंद महाराज और छत्रपति शिवाजी महाराज के वंशज युवराज राजे भोंसले विशेष रूप से उपस्थित रहे। समिति के उपेंद्र पाठक ने बताया श्रद्धालुओं ने फूलों की वर्षा और आरती के साथ माता की भक्ति में स्वयं को समर्पित किया। प्रशांत भार्गव, संदीप भार्गव के अनुसार आयोजन स्थल पर धर्मसभा और सत्संग के साथ पूरे क्षेत्र में दिव्यता और अध्यात्म का अद्भुत संगम देखने को मिला। सवा करोड़ पार्थिव शिवलिंग निर्माण का कार्य हजारों माता-बहनों द्वारा प्रतिदिन बड़ी आस्था से किया जा रहा है। लोकेश यादव ने बताया माताएं शिवलिंग निर्माण कर विधिवत पूजन और भस्म महाआरती कर रही हैं। यह दृश्य ताप्ती उद्गम क्षेत्र को काशी के समकक्ष आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान कर रहा है। आयोजन की महत्ता को देखते हुए हजारों भक्तों की उपस्थिति लगातार बनी हुई है। प्रशासन और आयोजन समिति द्वारा समुचित व्यवस्था की गई है।

बैतूलनामा

राजेन्द्र धोटे

अपने प्रवीण भाया दा जवाब नहीं

अपने प्रवीण दाताराम गुगनानी के सितारे इन दिनों बुलंद पर हैं। या यूं कहें कि पांचों उंगली घीं में है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। नीटू (दोस्तों में इसी नाम से प्रसिद्ध हैं)की आठ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । नौवीं पुस्तक एक उपन्यास के रूप में बेसुआ नाम से आ रही है। है न कमाल। बकौल प्रवीण, बेसुआ नावेल, अंग्रेज़ों द्वारा भारत से उनके विभिन्न औपनिवेशिक देशों को भेजे गए गिरमिटिया मजदूरों की एक बड़ी ही मार्मिक कथा है। प्रवीण दाताराम ने इस उपन्यास को विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के सलाहकार के रूप में किए गए फिजी देश के प्रवास के आस पास बुना है। अंग्रेज़ों द्वारा परतंत्र भारत से अनेक देशों को लाखों गुलाम मजदूर भेजे गए थे जिनमे से नब्बे प्रतिशत लोग कभी स्वदेश लौट ही न पाये थे। इस उपन्यास की कथा में वैदेशिक स्तर पर यह बात रखी गई है कि इन लाखों भारतीयों को झूठे एग्रीमेंट के आधार पर विदेशों में जबरन भेजने एवं अंधे कुएं में फेंकने हेतु ब्रिटिश सरकार को भारतीय संसद से क्षमा मांगनी चाहिए। हाल में उनका सम्मान हुआ तो बैतूलवालों का सीना कई गुना हो गया।

खो गई खो-खो वापस आई

अमूमन क्रिकेट के मुकाबले दूसरी खेल विधाएं धूल ही खा रही है आजकल। इस बार बैतूल में जो आयोजन हुआ, उसने खो-खो को जिंदा कर दिया। जिले में पहली बार खो-खो प्रीमियर लीग का आयोजन पुण्यश्लोक राजमाता अहिल्यादेवी होलकर की त्रिशताब्दी जयंती की स्मृति में किया गया। गजब का आयोजन भाईसाहब। भूली बिसरी यादें ताजा हो गई। प्रतियोगिता का उद्घाटन जिला प्रचारक शिवम जी और डॉ. विनय सिंह चौहान ने किया। खेलप्रेमियों को यह आयोजन खूब भाया। इच्छा जागृत हो गई कि, ऐसे आयोजन होते रहना चाहिए। बधाई के पात्र हैं आयोजक।

राइडर्स बोले: सहेजें प्रकृति

बैतूल जिले और मध्यप्रदेश के पहले राइडर रानू हजारे ने 10वीं बार लेह-लद्दाख की यात्रा सफलतापूर्वक पूरी की। लेह-लद्दाख की रोमांचक राइड पूरी कर लौटे तो उनका पलक पांवड़े बिछाकर स्वागत किया गया। इस टिप में 10वीं बार पहुंचे रानू हजारे ने माइनस 6 डिग्री में भी नहीं हारी हिम्मत। बर्फीले तूफान को चीरकर लेह पहुंचे थे यह राइडर्स। हिमालय के पर्वत जीवित से प्रतीत होते हैं, ऐसे सुंदर पर्वत शायद ही दुनिया में कहीं और हो। इस यात्रा में उनके साथी उज्जवल धोटे की यह पहली लद्दाख यात्रा रही। उज्जवल ने इसे अत्यंत सुखद और पर्यावरण से जुड़ाव बढ़ाने वाली यात्रा बताया। उनके अनुसार लद्दाख की सुंदरता के लिए शब्द नहीं हैं, यह स्थान राइडर्स के लिए तीर्थस्थल से कम नहीं। अगली बार इससे भी ज्यादा रोमांचकारी यात्रा की तैयारी में टीम जुट गई है।

गंगा का नाम पारा बढ़ा गया

वर्तमान में कांग्रेस पार्टी का जिला अध्यक्ष हेमन्त वागद्रे संभाल रहे है । जिले के कांग्रेस कार्यकर्ताओं का मत है कि जिला अध्यक्ष बदलना चाहिए । वैसे यह डिसाइड करना पार्टी हाईकमान का काम है। पूर्व सेवादल अध्यक्ष मनोज आर्य,पूर्व में दो बार का लोकसभा चुनाव लड चूके आदिवासी नेता रामू टेकाम, वहीं दूसरे युवा आदिवासी नेता, जो आदिवासी कांग्रेस कमेटी के प्रदेश महासचिव व विधान सभा चुनाव लड़ चुके राहुल उइके, पूर्व विधायक धरमूसिह सिरसाम , किसान कांग्रेस के अध्यक्ष रमेश गायकवाड, इनके अलावा पूर्व विधायक निलय डागा के करीबी युवा कार्यकर्ता हर्षवर्धन धोटे तथा महिला वर्ग से महिला कांग्रेस की अध्यक्ष पुष्पा पेन्दराम का नाम सामने आया है । इसके अलावा एक नाम सामने जो आया है वह नाम है गंगा राम रावत वह नाम अपने आप मे चौंकाने वाला साबित हो सकता है ।

बिजली फसाद न करा दे कहीं

बात तो बढ़ेगी बाबू। पानी सिर के उपर जा रही है। अघोषित बिजली कटौती ने नाक में दम कर रखा है। गांव से लेकर राजधानी तक यही हाल है। बिजली विभाग के अधिकारियों को अंतिम चेतावनी भी दी जा चुकी है। साफ कहा है कि अतिशीघ्र अघोषित बिजली कटौती बंद की जाए । पर्याप्त बिजली आपूर्ति होना चाहिए। ग्रामीणों ने ज्ञापन के माध्यम से कहा है कि यदि बिजली व्यवस्था नहीं सुधरेगी तो आगामी कुछ दिनों में क्षेत्रवासी धरना प्रदर्शन एवं बड़े पैमाने पर आंदोलन करने के लिए विवश हो जाएंगे। ग्रामीणों ने आरोप लगाया है कि विभाग के कर्मचारी अधिकारी उपभोक्ताओं के फोन भी नहीं उठाते तथा फोन उठाने पर बदतमीजी भी करते हैं। मांग है कि जल्द से जल्द बिजली कटौती बंद करके पर्याप्त बिजली आपूर्ति की जाए।

छोटी-छोटी बातें दिल में क्यों चुभ जाती है ?

भीतर की लड़ाई बिना किसी शोर के

मैंने अपने काम के दौरान बहुत से युवाओं को देखा है जो बाहर से बिल्कुल सामान्य दिखाई देते है,क्लास में जाते है,दोस्तों से से हँसते बोलते है, सोशल मीडिया पर एक्टिव रहते है लेकिन जब उनके मन की बात आती हैं, तब वहीं सबसे अकेले नज़र आते है। उन्हें खुद ही समझ नहीं आता कि मन क्यों भारी रहता है, नींद क्यों ठीक से नहीं आती और छोटी- छोटी बातें दिल पर क्यों चुभ जाती है। यह वहीं समय होता है जब डिप्रेशन (अवसाद) धीरे -धीरे बिना किसी शोर के भीतर घर कर रहा होता है।

डिप्रेशन हमेशा किसी घटना के बाद ही नहीं आता बल्कि कई बार तो कोई ठोस वजह भी नहीं होती, फिर भी मन सुन्न पड़ने लगता है। पहले जिस काम में खुशी मिलती थी, अब वही बोझ लगने लगता हैं। मन करता है कि कोई सुने, कोई समझे लेकिन बोलने की हिम्मत नहीं होती है। डर लगता है कि लोग क्या सोचेंगे? कई बार तो अपने ही माता - पिता या दोस्त कह देते है कि तुम तो खुश हो तुम्हें क्या हुआ? और ऐसी सोच के बीच एक युवा अंदर ही अंदर टूटता चला जाता हैं। एक बार मेरे पास एक छात्र आया जो पढ़ाई में तेज था, किसी भी जगह सबसे खुश ओर हंसता हुआ दिखता था लेकिन उसने मुझसे धीरे से कहा सर सबको लगता है कि मैं मजबूत हूं ।असल में मैं रोज खुद से हारता हूँ । आज कल मन में अजीब सी बेचैनी रहती

लेखक
विनय गंगारे
मनोवैज्ञानिक

है। मैने उसे कुछ सलाह नहीं दी, बस हर हफ्ते मिलने का वादा किया। मैने उसे समय दिया, उसे सुना और समझने की कोशिश की थी। कुछ समय बाद उसने मुझसे कहा- शुक्रिया सर, आपने कुछ कहा नहीं लेकिन मेरे साथ रहे। उस वाक्य ने मुझे बहुत कुछ सिखाया। यही है एक मनोवैज्ञानिक की भूमिका सिर्फ सलाह देने की नहीं बल्कि साथ खड़े रहने की भी। हमारे समाज में आज भी मानसिक स्वास्थ्य को लेकर समझ बहुत सीमित है। युवा चुप हैं, थके हुए है लेकिन कोई सुनने वाला नहीं है। उन्हें कमजोर या संवेदनशील कहकर टाल दिया जाता है पर डिप्रेशन कोई कमज़ोरी नहीं है, यह मन की थकान है जिसे आराम, विश्वास और अपनापन चाहिए। मैं हर माता - पिता, शिक्षक और दोस्त से यही कहना चाहता हूँ कि अगर कोई चुप हो जाए तो उसकी चुप्पी को समझने की कोशिश करें। वो शायद बोलकर नहीं अपने मौन से बहुत कुछ कह रहा हैं। वो कुछ कहे ना कहे आपकी मौजूदगी ही उसके लिए सबसे बड़ी मदद होगी। डिप्रेशन को नज़र अंदाज न करे। यह धीरे - धीरे घर करता है, मगर बहुत कुछ बिगाड़ सकता हैं लेकिन अगर समय रहते कोई साथ आ जाए, तो वही डिप्रेशन बीता हुआ कल बन सकता है। मन की तकलीफ कोई दिखने वाली चीज़ नहीं होती अगर हम ध्यान रखे तो उसे समझ सकते है और समझ ही पहला कदम है है किसी को टूटने से बचाने का।

सार-समाचार

तीन देशों की यात्रा पर जाएंगे मोदी

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 15 से 18 जून के बीच कनाडा, साइप्रस और क्रोएशिया की यात्रा पर जाएंगे और वह कनाडा में जी-7 शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे। मोदी पहले चरण में साइप्रस के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडोलिड्स के निमंत्रण पर 15-16 जून को वहां की आधिकारिक यात्रा पर जाएंगे। दो दशकों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की साइप्रस की यह पहली यात्रा होगी। निकोसिया में रहते हुए मोदी क्रिस्टोडोलिड्स के साथ बातचीत करेंगे और लिमासोल में व्यापारिक नेताओं को संबोधित करेंगे। यह यात्रा द्विपक्षीय संबंधों को गहरा करने और भूमध्यसागरीय क्षेत्र और यूरोपीय संघ के साथ भारत के संबंधों को मजबूत करने के लिए दोनों देशों की साझा प्रतिबद्धता की पुष्टि करेगी।

254 फ्लाइट कैडेट भारतीय वायुसेना में शामिल

हैदराबाद, एजेंसी। हैदराबाद के पास डुंडीगल स्थित वायु सेना अकादमी (एएफए) में शनिवार को संयुक्त स्नातक परेड (सीजीपी) आयोजित की गई, जिसमें भारतीय वायु सेना (आईएएफ) के 254 फ्लाइट कैडेटों के प्रशिक्षण का सफल समापन संपन्न हो गया। इस परेड में फ्लाइंग और ग्राउंड ड्यूटी शाखाओं के पुरुष और महिलाएं दोनों शामिल थे। वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल एपी सिंह ने परेड का निरीक्षण किया और स्नातक कैडेटों को राष्ट्रपति का कमीशन प्रदान किया। प्रशिक्षण कमान के एयर ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ एयर मार्शल तेजिंदर सिंह और एएफए के कमांडेंट एयर मार्शल पीके वोहरा ने उनका स्वागत किया।

कीर्ति गणोरकर सन फार्मा के प्रबंध निदेशक नियुक्त

मुंबई, एजेंसी। फार्मा कंपनी सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड और उसकी सहायक कंपनियां ने कीर्ति गणोरकर को प्रबंध निदेशक नियुक्त करने की घोषणा की है। कंपनी ने यहां एक बयान में कहा कि उनकी नियुक्ति एक सितंबर, 2025 से प्रभावी होगी और वह दिलीप सांघवी का स्थान लेंगे और पूरा कारोबार तथा सभी कार्य उन्हें रिपोर्ट करेंगे। यह नियुक्ति आगामी वार्षिक आम बैठक में शेयरधारकों की मंजूरी के अधीन है। कंपनी के संस्थापक एवं प्रबंध निदेशक सांघवी प्रबंध निदेशक के पद से हटाने जा रहे हैं। सांघवी निदेशक मंडल के कार्यकारी अध्यक्ष बने रहें।

मानसून ने एक बार फिर पकड़ी रफ्तार

नई दिल्ली, एजेंसी। मानसून ने एक बार फिर से रफ्तार पकड़ ली है। पिछले 6 दिन से पड़ रही तेज गर्मी के बाद राजस्थान, मध्य प्रदेश के कई शहरों में शनिवार शाम को बारिश हुई। राजस्थान के श्रीगंगानगर, बीकानेर, अजमेर में प्री-मानसून एक्टिव रहा। शुक्रवार को श्रीगंगानगर देश का सबसे गर्म शहर था। यहां तापमान 49.4 डिग्री पहुंच गया था। वहीं उत्तर प्रदेश के वाराणसी और मथुरा में अभी भी गर्मी और लू से राहत नहीं मिली है। वाराणसी में 42 डिग्री टेम्प्रेचर के कारण ट्रांसफॉर्मर फेल हो गए, जिन्हें कूलर से ठंडा किया गया। मथुरा में पारा 41 डिग्री पहुंच गया। यहां स्प्रिंकलर से सड़कों पर पानी छिड़का गया।

प्रसिद्ध अभिनेत्री एवं लोक गायिका करुप्पयी का निधन

चेन्नई, एजेंसी। प्रसिद्ध अभिनेत्री एवं लोकप्रिय लोक गायिका कोल्लंगुडी करुप्पयी का शनिवार को वृद्धावस्था के कारण निधन हो गया। वह 99 वर्ष की थीं। करुप्पयी ने तमिलनाडु के शिवगंगा जिले में अपने पैतृक गांव कोल्लंगुडी में अंतिम सांस ली। उन्होंने पंडियाराजन अभिनीत लोकप्रिय कॉमेडी फिल्म 'आन पावम' में अभिनय किया था, जिसमें उन्होंने वी के रामासामी की मां और पंडियाराजन की दादी की भूमिका निभाई थी।

नीट यूजी 2025 के परीक्षा परिणाम घोषित

राजस्थान के महेश कुमार टॉपर.. लड़कियों में दिल्ली की अविका सबसे आगे

मध्य प्रदेश के उत्कर्ष दूसरे स्थान पर

नई दिल्ली, देशबन्धु। नीट यूजी 2025 परीक्षा में नेशनल टेस्टिंग एजेंसी यानी एनटीए ने 14 जून को नीट यूजी रिजल्ट की घोषणा कर दी। राजस्थान के महेश कुमार इस साल के नीट टॉपर बने हैं, जिन्होंने 99.9999547 पर्सेंटाइल हासिल किया है। महेश हनुमानगढ़ जिले के डबली राठान गांव के रहने वाले हैं।

वहीं मध्य प्रदेश के उत्कर्ष ने दूसरा स्थान हासिल किया है, जबकि तीसरे नंबर पर महाराष्ट्र के कृषांग जोशी हैं।

इस मेडिकल प्रवेश परीक्षा में चौथे स्थान पर दिल्ली के मृणाल किशोर झा तो पांचवें नंबर पर दिल्ली की अविका अग्रवाल हैं। अविका महिलाओं में टॉपर बनी हैं। नीट यूजी रिजल्ट के बाद अब देशभर के सरकारी और प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों में एमबीबीएस और बीडीएस में एडमिशन के लिए काउंसलिंग प्रक्रिया शुरू होगी। मेडिकल काउंसलिंग कमेटी जहां 15 फीसदी ऑल इंडिया कोटा सीटों के लिए तो शेष 85 प्रतिशत राज्य कोटा सीटों के लिए राज्य काउंसलिंग संस्थाएं काउंसलिंग करेंगी।

ये हैं टॉप टेन

रैंक 1- महेश कुमार (राजस्थान)
रैंक 2- उत्कर्ष अवधिया (मध्य प्रदेश)
रैंक 3 - कृषंग जोशी (महाराष्ट्र)
रैंक 4- मृणाल किशोर झा (दिल्ली)
रैंक 5- अविका अग्रवाल (दिल्ली)
रैंक 6- जेनिल विनोदभाई भयानी (गुजरात)
रैंक 7- केशव मित्तल (पंजाब)
रैंक 8- झा भव्य चिराग (गुजरात)
रैंक 9- हर्ष केदावत (दिल्ली)
रैंक 10- आरव अग्रवाल (महाराष्ट्र)

इंदौर सेंटर के 75 छात्रों का रिजल्ट नहीं जारी होगा

इंदौर के सेंटर्स पर नीटयूजी परीक्षा देने वाले 75 कैंडिडेट्स ने शिकायत की थी कि 4 मई को आंधी-तूफान और बिजली चली जाने की वजह से उनका पेपर बिगड़ गया। मध्य प्रदेश हाईकोर्ट की इंदौर बेंच में दायर याचिकाओं पर 9 जून को सुनवाई हुई। कोर्ट ने कहा है कि एनटीए इन 75 कैंडिडेट्स को छोड़कर बाकी सभी का रिजल्ट जारी कर सकता है। इन 75 छात्रों का रिजल्ट बाद में जारी किया जाएगा। इसके बाद नीट यूजी 2025 की फाइनल मेरिट बनेगी।

पिछले साल से घट गया कट-ऑफ

2024 में अनारक्षित कैटेगरी के लिए कट-ऑफ स्कोर 162 था, जो इस साल घटकर 144 हो गया है। बीते साल एआईआर 1 पर 17 स्टूडेंट्स थे। इन सभी ने 720 में से 720 स्कोर किए थे। इस साल मुश्किल पेपर की वजह से टॉपर का स्कोर और कट-ऑफ नीचे आ गया है।

ग्रेनेड लांचर सहित बड़ी मात्रा में गोला बारूद बरामद

मुठभेड़ में 3 महिलाओं सहित 4 नक्सली ढेर

बालाघाट, देशबन्धु। बालाघाट के पचामा दादर जंगल में मुठभेड़ के दौरान पुलिस और हॉक फोर्स ने एक महिला सहित 4 नक्सलियों को मार गिराया। नक्सलियों और पुलिस की मुठभेड़ के बाद इलाके में तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। नक्सलियों के पास से भारी मात्रा में गोला बारूद बरामद किया गया है।

जानकारी के अनुसार थाना रूपझर, चौकी सोनेवानी अंतर्गत पचामादादर-कटेझिरिया जंगल क्षेत्र में जीआरबी डिवीजन में उपस्थिति की सूचना के आधार पर हाकफोर्स, जिला पुलिस एवं सीआरपीएफ बल द्वारा 13-14 जून की रात से लगातार पचामादादर-कटेझिरिया जंगल क्षेत्र में कार्डन एवं तलाशी अभियान चलाया गया। नक्सलियों द्वारा अभियान के दौरान सुरक्षा बलों को हताहत करने एवं उनके हथियार लूटने की नीयत से पुलिस बलों पर अंधाधुंध गोलीबारी की गई। सुरक्षा बलों द्वारा अपनी जान की परवाह न करते हुए सूझबूझ और नियंत्रित जवाबी फायरिंग की गई। इस कार्रवाई में 4 हार्डकोर माओवादियों को मार गिराने में सफलता प्राप्त हुई। मुठभेड़ के दौरान अन्य नक्सली भी घायल हुए हैं। उनकी तलाशी के लिए सीआरपीएफ, हॉक फोर्स एवं जिला पुलिस बल द्वारा क्षेत्र में बड़े स्तर पर सघन तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। प्रदेश में वर्ष 2025 में अब तक 10 हार्डकोर माओवादियों को मुठभेड़ में मार गिराया है, जो पिछले वर्षों की तुलना में सर्वाधिक है। इसके पहले वर्ष 2022 में 6 नक्सलियों को मुठभेड़ में मार गिराया गया था।

मुख्यमंत्री ने जवानों को दी बधाई

नक्सली सरेंडर करें, नहीं तो मारे जाएंगे

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बालाघाट जिले में 4 नक्सलियों को मुठभेड़ में मार गिराने पर राज्य पुलिस बल के जवानों को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि नक्सली सरेंडर करें, नहीं तो मारे जाएंगे। डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश सरकार ने मार्च 2026 तक नक्सलवाद को प्रदेश की धरती से समूल खत्म करने का संकल्प लिया है। इस लक्ष्य को पाने में हमारे पुलिस जवानों का भरपूर सहयोग मिल रहा है। डॉ. यादव ने कहा कि नक्सल विरोधी अभियान में शामिल पुलिसकर्मियों को राज्य सरकार पुरस्कृत कर रही है। कुछ महीने पहले बालाघाट में एक कार्यक्रम में नक्सलियों का खात्मा करने वाले पुलिस के सिपाहियों और अधिकारियों को पदोन्नति देकर सम्मानित किया था। शनिवार को पचमढ़ी से संदेश जारी कर उन्होंने यह बात कही।

नक्सलियों के पास भारी मात्रा में हथियार मिले: शनिवार को यहां मुठभेड़ में मारे गए नक्सलियों के कब्जे से कई ऑटोमैटिक हथियार, एक ग्रेनेड लांचर, एक एसएलआर रायफल, 2 (315 रायफल), रॉकेट लॉन्चर, वॉकी-टॉकी सेट, नक्सल साहित्य और भारी मात्रा में गोला-बारूद मिला है। नक्सलियों द्वारा किसी अप्रिय घटना को अंजाम देने से पहले पुलिस जवानों ने सक्रियता दिखाई और सभी हथियारबंद नक्सलियों को ढेर कर दिया।

एनआईए ने भोपाल में 3 और राजस्थान के झालवाड़ में 2 स्थानों पर छापा मारा

भोपाल, देशबन्धु। एनआईए ने आज आतंकी संगठन हिज्ब-उत-तहरीर (एचयूटी) के भोपाल में 3 और राजस्थान के झालवाड़ में 2 ठिकानों पर दबिश दी। एचयूटी से जुड़ी गतिविधियों के संदेह में एनआईए द्वारा यह छापामार कार्रवाई की गई। हाल ही में दिल्ली एयरपोर्ट से गिरफ्तार किए गए संदिग्ध मोहसिन की निशानदेही पर यह कार्रवाई की गई।

जानकारी के अनुसार एनआईए की टीम ने आज तड़के भोपाल के अशोका गार्डन, काजी कैंप और रेतघाट क्षेत्रों में दबिश दी। साथ ही राजस्थान के झालावाड़ जिले के काजी चौक जामा मस्जिद के पास एक कपड़ा व्यवसायी के घर और प्रतिष्ठान पर भी छापेमारी की गई। इन सभी स्थानों से एजेंसी ने इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस, मोबाइल, दस्तावेज व अन्य सामग्री बरामद की है। ज्ञात हो कि मई माह में थाईलैंड से भारत लाए गए मोहसिन को एनआईए ने दिल्ली विमानतल से गिरफ्तार किया था। इसके बाद 29 मई को उसे भोपाल स्थित एनआईए की विशेष अदालत में पेश किया गया, जहां से उसे पूछताछ के लिए रिमांड पर भेज दिया गया। मोहसिन से पूछताछ में एचयूटी के नेटवर्क, टेरर फंडिंग और प्रशिक्षण जैसे गंभीर विषयों पर जानकारी एनआईए को मिली है।

अब मोहसिन के बैंक खातों और लेन-देन की भी एनआईए पड़ताल कर रही है। मध्यप्रदेश एटीएस ने मई 2023 में एचयूटी के मॉड्यूल का भंडाफोड़ करते हुए भोपाल से 10, छिंदवाड़ा से एक और हैदराबाद से 5 संदिग्धों को गिरफ्तार किया था। ये जिम ट्रेनर, दर्जी और ऑटो ड्राइवर जैसे पेशों की आड़ में संगठन के लिए काम कर रहे थे। केन्द्र सरकार ने अक्टूबर 2024 में हिज्ब उत-तहरीर को प्रतिबंधित घोषित कर दिया था। इसके बाद यह मामला एनआईए को सौंपा गया।

उसके बाद एनआईए संगठन के नेटवर्क, फंडिंग और प्रशिक्षकों की जानकारी एकत्रित करने में जुटी है। मोहसिन की गिरफ्तारी के बाद अब कई और बातें सामने आ सकती हैं।

प्रथम पृष्ठ का शेष

इजराइली हमले में 138.... ईरान को चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि अगर ईरानी सुप्रीम लीडर अयातुल्ला खामेनेई ने इजराइल पर और मिसाइलें दागीं, तो तेहरान जला देंगे। इजराइल के हमलों के बाद ईरान ने भी पलटवार किया है। ईरान ने सैकड़ों बैलेस्टिक मिसाइलें इस्त्राइल पर दागी हैं। साथ ही उसने अमेरिका के साथ परमाणु समझौते पर वार्ता से भी इनकार कर दिया है। गलत बयानबाजी सेस बचें.... में देश ने विकसित भारत की दिशा में लंबी छलांग ली है, जिसमें सभी समाज वर्गों को साथ लेकर चलने पर जोर दिया गया। मोदी जी के सत्ता में आने के बाद पूरी दुनिया में भारत का मान-सम्मान बढ़ा है। प्रधानमंत्री मोदी जी एक मात्र ऐसे नेता है जो दुनिया भर के सबसे अधिक देशों में भारत रत्न जैसे उस देश के उच्च सम्मान से सम्मानित हुए है। नई शिक्षा नीति में 2047 की विकसित भारत की नींव है। इसमें भारत की सस्कृति,भाषा, कलाओं को मजबूती के साथ रखा गया है। मध्यप्रदेश ऐसा पहला राज्य है जहाँ मेडिकल की पढ़ाई हिन्दी भाषा में होती है। युवाओं को विश्व के युवाओं के साथ दो-दो हाथ करने का काम सरकार कर रही है। हमारे विचार यात्रा के दौरान आज हमारे सकंल्प की पूर्ति लगातार हो रही है। जनसंघ से भाजपा तक न हमारी विचारधारा बदली है न हमारी कार्य सस्कृति बदली है। प्रथम सत्र को केन्द्रीय मंत्री भूपेन्द्र यादव ने ''लोक व्यवहार एवं समय प्रबंधन, व्यक्तित्व कौशल'' विषय पर संबोधित किया, जिसकी अध्यक्षता प्रदेश प्रवक्ता व विधायक श्रीमती अर्चना चिटनीस ने की। द्वितीय सत्र को केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने ''विकसित भारत-मोदी सरकार के परिवर्तनकारी कदम'' विषय पर संबोधित किया, जिसकी अध्यक्षता केन्द्रीय मंत्री डीडी उइके ने की। तृतीय सत्र में तीन समानान्तर सत्रों को केन्द्रीय मंत्री वीरेन्द्र कुमार खटिक, प्रदेश के उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल एवं सांसद सुधीर गुप्ता ने संबोधित किया। उदघाटन सत्र की प्रस्तावना भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने रखी। प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह, उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा भी इस अवसर पर मौजूद थे। संचालन प्रदेश महामंत्री व विधायक भगवानदास सबनानी ने किया।

विमान हादसे की जांच के लिए कमेटी गठित, 3 माह में सौंपेगी रिपोर्ट

विमान हादसे में मरने वालों का आंकड़ा 275 पहुंचा

नई दिल्ली, एजेंसी। अहमदाबाद विमान हादसे पर शनिवार को केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राममोहन नायडू ने राजधानी दिल्ली में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि पहले दिन से हादसे की जांच जारी है। केंद्रीय गृह सचिव के नेतृत्व में जांच कमेटी गठित की गई है। जो 3 महीने में अपनी रिपोर्ट सौंपेगी। उन्होंने यह भी बताया कि ब्लैक बॉक्स मिल चुका है। एएआईबी के माध्यम से हो रही तकनीकी जांच की जा रही है। उन्होंने कहा कि हमारे देश में बहुत सख्त सुरक्षा मानक हैं। जब यह घटना हुई तो हमें भी लगा कि बोइंग 787 सीरीज का इंस्पेक्शन करने की जरूरत है। उन्होंने कहा, जैसे-जैसे विमानों की जांच आगे बढ़ेगी रिपोर्ट आएगी। उस आधार पर आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि हर पहलू से हादसे की जांच की जा रही है। शुक्रवार शाम 5 बजे ब्लैक बॉक्स बरामद हुआ है। विमान ने 1.39 बजे टेक ऑफ किया था। ब्लैक बॉक्स से हादसे का कारणों का पता चलेगा। 650 फीट की ऊंचाई पर खराबी आई। पायलट ने इमरजेंसी सूचना दी थी। पेरिस दिल्ली उड़ान में कोई दिक्कत नहीं। तीन महीने में जांच टीम अपनी रिपोर्ट सौंपेगी। इस जांच टीम में डीजीसीए और आईबी के अधिकारी शामिल हैं। अहमदाबाद में विमान हादसे में मरने वालों का आंकड़ा 275 पहुंचा गया है। शवों को रखने के लिए 170 ताबूत का ऑर्डर दिया गया। बड़ोदरा के शख्स ने बताया कि एअर इंडिया के मैनेजर ने फोन कर ताबूतों का ऑर्डर दिया। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय ने भारतीय विमान बेड़े में मौजूद बोइंग ड्रीमलाइनर 787 सीरीज के विमानों की जांच बढ़ाने का आदेश जारी किया है। केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू किंजरापु ने कहा 8 बोइंग 787 सीरीज के विमानों की पहले ही तत्काल जांच और निरीक्षण किया जा चुका है।

डीएनए जांच में 11 शवों की हुई पहचान: अहमदाबाद सिविल अस्पताल के डिप्टी सिविल सुपरिटेंडेंट रजनीश पटेल ने कहा अब तक 248 शवों का डीएनए सैंपल्स का क्रॉस वेरिफिकेशन हुआ है, जिसमें से 11 का डीएनए मैच हुआ है। पूर्णिमाबेन पटेल का शव उनके परिवार को सौंपा गया है। एक और परिवार को बॉडी हैंडओवर की प्रक्रिया जारी है। 8 घायलों इलाज का चल रहा है, इसमें एक की हालत गंभीर है। इससे पहले बीजे मेडिकल कॉलेज हॉस्टल से जब मलबा हटाया जा रहा था, तब विमान की टेल (पिछले हिस्से) में फंसा हुआ शव दिखा था। इसका पोस्टमॉर्टम हुआ है। कहा जा रहा है कि यह शव एयर होस्टेस का हो सकता है।

पायलट का आखिरी मैसेज सामने आया: अहमदाबाद प्लेन क्रैश मामले में विमान के पायलट सुमित सभरवाल का एयर ट्रैफिक कंट्रोलर को भेजा गया आखिरी मैसेज सामने आया है। 4-5 सेकेंड के संदेश में सुमित कह रहे हैं, मेडे, मेडे, मेडे... थ्रस्ट नहीं मिल रहा। पावर कम हो रही है, प्लेन उठ नहीं रहा। नहीं बचेंगे।

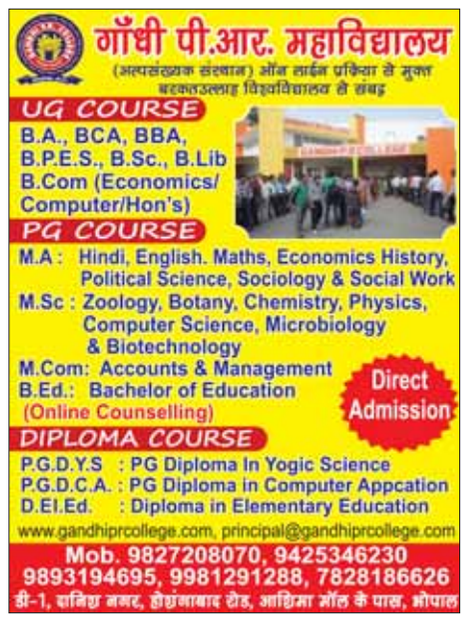

मूंग और उड़द समर्थन मूल्य पर खरीदने के फैसले पर पटवारी ने कहा-

मुख्यमंत्री ने पहली बार संवेदनशीलता दिखाई

भोपाल, देशबन्धु। मध्य प्रदेश सरकार की ओर से किसानों से मूंग और उड़द की फसल खरीदने के फैसले का प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने स्वागत किया है। उन्होंने सीएम मोहन यादव का धन्यवाद भी किया। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि सीएम मोहन यादव ने मूंग की खरीद के संबंध में सरकारी घोषणा की, इसके लिए मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। मैं आभारी हूं कि उन्होंने पहली बार संवेदनशीलता दिखाई है। लेकिन, मूंग के बाद किसानों के धान, सोयाबीन और गेहूं का क्या? वे भी आपकी सरकार की घोषणाओं का हिस्सा थे। आपने उनके आधार पर वोट लिए। मैं आपसे आग्रह करता हूं कि उन मुद्दों पर भी संवेदनशील रहें। एक वीडियो पोस्ट में कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने किसानों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह किसानों की एकता की जीत है। उन्होंने खुद को किसान का बेटा बताते हुए कहा कि किसानों की आवाज को उठाने के लिए मैं और कांग्रेस पार्टी लगातार प्रयासरत हैं। उन्होंने कहा कि अभी गेहूं, धान और सोयाबीन के पूरे समर्थन मूल्य का वादा अधूरा है। किसान के इस हक के लिए भी कांग्रेस निर्णायक लड़ाई लड़ेगी। वहीं, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर एक पोस्ट के जरिए बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में मध्य प्रदेश सरकार किसानों की समृद्धि के लिए निरंतर प्रयासरत है। मध्य प्रदेश में न्यूनतम समर्थन मूल्य पर मूंग और उड़द के उपार्जन के लिए 19 जून से पंजीकरण प्रारंभ होगा।

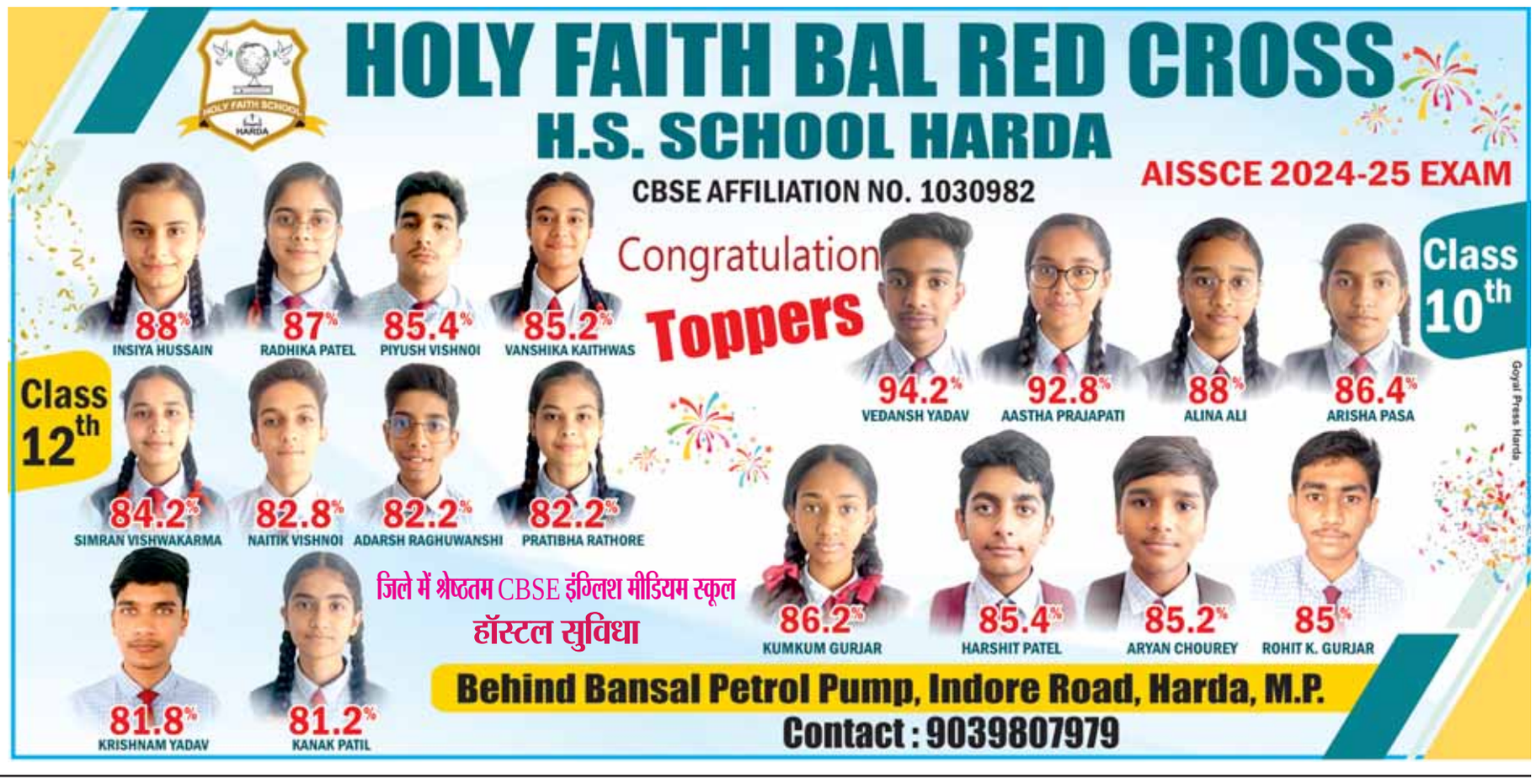

पत्रकार प्रकाशन प्रा.लि. के लिए गिरिराज चाचा द्वारा मेसर्स डी.बी. कार्प लिमिटेड फौजदार गैरेज पवारखेड़ा इटारसी रोड नर्मदापुरम से मुद्रित एवं 45, वार्ड नं. 6, कसेरा मुहल्ला नर्मदापुरम म.प्र. से प्रकाशित, संपादक: **पलाश सुरजन,** कार्यकारी संपादक: **ज़ाकिर अली*** फोन 422297। ई-मेल deshbandhuhbd1@gmail.com समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार।